Vol.24, Issue 10 | Annual Subscription ₹ 480

अगस्त 2025

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

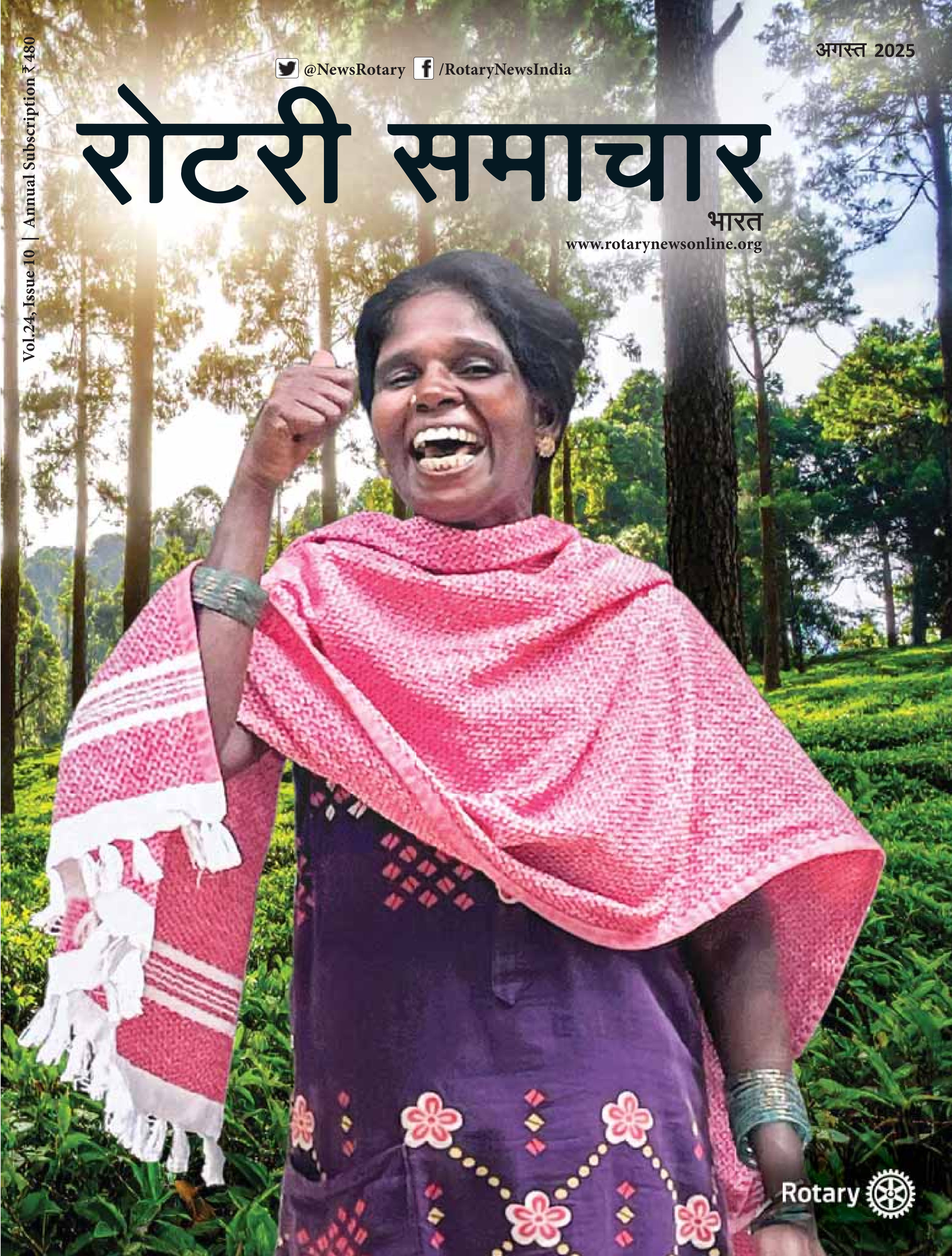

Rotary

ADVT.

Rotary
District 3212

UNITE FOR GOOD

PROJECT PREMKUMAR

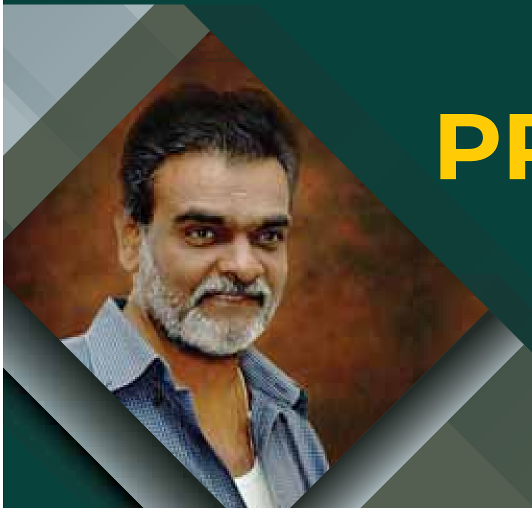

A Project by
Rotary Club of Virudhunagar RI Dist-3212

95% of the students don't read beyond their text books.
Project Premkumar is reinforcing their reading habit.

- Reading enriches the mind by expanding knowledge and vocabulary.
- It enhances imagination and creativity by transporting readers to different worlds.
- Regular reading improves focus, concentration, and critical thinking skills.
- It reduces stress and provides a healthy escape from everyday life.
- Reading nurtures empathy by allowing us to see through others' perspectives.

As on
July, 2025
No. of Programs
60
No. of Beneficiaries
14578
No. of Institutions Covered
60
Man Hours Spent
62520 Hrs

LEKHA ads/Aug 25/ Rotary/FIW

Project Premkumar is a remarkable project of RID 3212 & Rotary club of Virudhunagar which focuses on encouraging the students and enhancing their reading skills. Rtn. S.Nagalingam, IRS (Rtd.), Founder and Head Coach of Nikhil Foundation, is the key speaker of the programme.

Project Premkumar is Conducted in Two Phases.

First Phase - 'Breathe Reading' Training Program

Second Phase - 10 Student Volunteers will be reviewing the book assigned to them

*** Best 5 Reviews will be awarded with Rs.5000 Worth of Books.**

Do you wish to organize
"**PROJECT PREMKUMAR**"
in your School / College?
We are waiting to partner with you.

CONTACT
Project Chairman
Rtn. S. NAGALINGAM IRS(Rtd.)
90036 59270

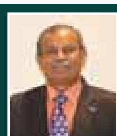

IDHAYAM
PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

विषयसूची

12
कोडाई आदि-वासियों को मिला नया आशियाना

20
रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो से खास बातचीत

24
ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना

28
शांति: बंदूकों की खामोशी नहीं बल्कि अंतरात्मा की जागृति

38
कैलगरी सम्मेलन के यादगार लम्हें

44
महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त गांवों को मिला नया जीवन

50
रोटरी क्लब तिनसुकिया के कृत्रिम अंग शिविर

ई-संस्करण अपनाएं। पर्यावरण बचाएं।

ई-संस्करण दर हुई कम

1 जुलाई 2024 से हमारी ई-संस्करण सदस्यता ₹420 से संशोधित कर **₹324** कर दी गई हैं।

Rotary

A publication of Rotary Global Media Network

उत्तम पत्रिका; अच्छे संपादकीय

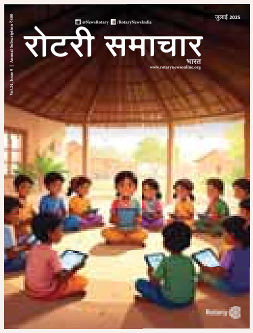

जुलाई का संपादकीय रोटरी के दान और निस्वार्थ सेवा के आदर्शों का एक सिंहावलोकन प्रस्तुत करता है, जिसे संपादक रशीदा भगत ने बहुत ही खूबसूरती से लिखा है और यह पूरी तरह प्रासंगिक है। दुनिया में जो कुछ भी होता है, वह कारण और प्रभाव के सिद्धांत के अनुसार होता है, जैसे कि एक व्यक्ति का एयर इंडिया की उड़ान छूट जाना, जो बाद में ट्रैफिक जाम के कारण दुर्घटनाग्रस्त हो गई। रोटरी के परोपकार के दर्शन पर ज़ोर देते हुए, संपादक ने इस क्षणभंगुर दुनिया को हाल ही में हुए विमान हादसे से सार्थक रूप से जोड़ा है और यह संदेश दिया है कि जो लोग दूसरों की मदद करने में सक्षम हैं, उन्हें निश्चित रूप से आगे आकर योगदान देना चाहिए।

सुरेंद्रन टीपीवी, रोटरी क्लब कलपेट्टा – मंडल 3204

दया में अनुग्रह संपादकीय प्रेरणादायक है, और ऑपरेशन सिंदूर पर पिछला संपादकीय आतंकवादी हमले का एक बहुत ही संतुलित विश्लेषण प्रस्तुत करता है। कवर फ़ोटो (जून) में एक माँ द्वारा अपने विकलांग बेटे की मदद के लिए हाथ बढ़ाते हुए दिखाया गया है। यह पढ़कर बहुत अच्छा लगा कि रोटरी क्लब आगरा अद्भुत परियोजनाएँ चला रहा है, जैसे स्कूलों में कंप्यूटर और प्रयोगशालाओं की सुविधा प्रदान करना; दिव्यांग बच्चों के लिए स्पीड वॉक कार्यक्रम एक सराहनीय पहल है। गो ग्रीन कॉलम *सेट द बर्ड्स फ्री,* यह संदेश देता है कि पक्षियों को पिंजरे में नहीं रखना चाहिए, क्योंकि ईश्वर ने उन्हें उड़ने के लिए पंख दिए हैं।

राज कुमार कपूर, रोटरी क्लब रूप नगर – मंडल 3080

आपका जुलाई का संपादकीय बिलकुल सही समय पर आया है। भू-राजनीतिक तनावों और व्यापार युद्धों के इस दौर में, हमें रोटरी के संदेश *यूनाइट फॉर गुड* को पूरी ताकत से आगे बढ़ाना होगा। इस साल रोटरी से जुड़ी और भी खबरों का इंतज़ार रहेगा। संपादकीय टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ।

सोम दुआ, रोटरी क्लब दिल्ली दक्षिण – मंडल 3011

पीआरआईपी इयान राइज़ले से मिली सराहना के लिए मेरी हार्दिक बधाई, जिन्होंने रोटरी कार्यक्रमों को लगन से कवर करने और उन्हें रोचक लेखों में प्रस्तुत करने में आपके अथक प्रयासों और क्षमता की सराहना की है। उन्होंने बिल्कुल सही कहा है, आपका संपादकीय विचारोत्तेजक है। शाबाश, जो सोने पर सुहागा है। आपको और आपकी पूरी टीम को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

जुलाई अंक प्राप्त करते ही, जैसा कि मैं हमेशा करता हूँ, मैंने सबसे पहले संपादकीय टिप्पणी पढ़ी। रशीदा ने दान की महिमा, जीवन की क्षणभंगुरता और दान की महत्ता के विषय में सत्य और सारगर्भित बातें कही हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हमें जीवन में अर्जित धन का सदुपयोग करना चाहिए और उदारता दिखानी चाहिए। निर्देशक एम मुरुगानंदम और ट्रस्टी भरत पांड्या के संदेश अमूल्य और प्रेरणादायक हैं।

माया मिहानी, रोटरी क्लब हिंगनघाट – मंडल 3030

संपादकीय युद्ध उन्माद (जून) रोचक तो था, लेकिन मुझे लगा कि सेवा-प्रधान इस पत्रिका के लिए यह विषय कुछ अनुपयुक्त था। *रोटरी न्यूज़* को केवल उन सेवा और मानवीय कार्यों को ही उजागर करना चाहिए, जो व्यक्तियों और क्लबों द्वारा किए जा रहे हैं।

एच आर सीतारम, रोटरी क्लब बैंगलोर इंदिरानगर – मंडल 3192

धन्यवाद, रोटरी न्यूज़!

रो ई मंडल 3132 की ओर से, हम जुलाई अंक में हमारी दो प्रमुख सीएसआर पहलों – रोटरी की पाठशाला और मंडल-व्यापी मधुमेह जागरूकता परियोजना – की शानदार और विस्तृत कवरेज के लिए आभार व्यक्त करते हैं। आपकी विचारशील प्रस्तुति और पाँच पृष्ठों के विशेषांक ने न केवल हमारे लिए गर्व का विषय है, बल्कि इसने पूरे रोटरी जगत में रो ई मंडल 3132 को व्यापक रूप से प्रसिद्धि दिलाई है... जो सचमुच जश्न का कारण है। *रोटरी न्यूज़* टीम के इस उत्कृष्ट संपादकीय सहयोग के लिए धन्यवाद। हमें यह महसूस हुआ है कि हमारी मेहनत को देखा और सराहा गया है, और यही हमें और अधिक समर्पण और ऊर्जा के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

आईपीडीजी सुरेश साबू

डीजीई जयेश पटेल – मंडल 3132

हमारे क्लब की परियोजनाओं – एम्बुलेंस सेवा और प्राणमा अंतिम संस्कार प्रबंधन – को जुलाई अंक में प्रकाशित होते देखकर बहुत खुशी हुई। आपकी मदद और समर्थन के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। रोटरी के प्रति आपकी समर्पित और निरंतर सेवा के लिए हम आभारी हैं।

अब्राहम वरुघीस

रोटरी क्लब कोळेनचेरी – मंडल 3211

डब्बा गाथा

टीसीए श्रीनिवास राघवन अपने एलबीडब्ल्यू कॉलम (जुलाई) में बिल्कुल सही कहते हैं कि महिलाएं डब्बा (लंच बॉक्स और बर्तन) वापस करने को कितनी गंभीरता से लेती हैं। दोस्तों के साथ पॉटलक डिनर के दौरान, हमारी पत्नियाँ यह सुनिश्चित करती हैं कि हम जो भी

कटोरा, बर्तन और चम्मच लेकर जाएँ, वह न सिर्फ़ धोकर और पोंछकर वापस लाया जाए, बल्कि अक्सर चमकाकर और पॉलिश भी की जाए। अगर मेज़बान कहे भी, अरे छोड़ो, कोई बात नहीं, तो भी इस रस्म से कोई बच नहीं सकता। डब्बा तो घर वापस आना ही है।

यह नियम पड़ोसियों पर भी उतना ही लागू होता है। अगर बाड़ के उस पार से खाना आता है, तो डिब्बा कभी खाली नहीं लौटाया जाता। ऐसा करना बिलकुल भी उचित नहीं है। उसमें कुछ मिठाइयाँ, कोई नाश्ता, या कम से कम, थोड़े-से मेवे तो लौटाने ही चाहिए। यह सिर्फ़ शिष्टाचार नहीं, बल्कि परंपरा, कूटनीति और नेकदिली का एक साथ मिला-जुला रूप है। मध्यमवर्गीय शिष्टाचार के अलिखित नियम वाकई में बड़े ही आकर्षक होते हैं। डिब्बा सिर्फ़ एक डिब्बा नहीं होता - वह सद्भावना, आपसी सम्मान और एक अव्यक्त सामुदायिक भावना का एक पात्र है।

अमित गोयल

रोटरी क्लब दिल्ली साउथ एंड - मंडल 3011

गैर-रोटरी सामग्री की सराहना की गई

रोटरी न्यूज़ को एक ऐसी पत्रिका के रूप में धीरे-धीरे बदलते देखना उत्साहजनक है, जो रोटरी के विभिन्न रुचि क्षेत्रों को इतने पेशेवर ढंग से प्रस्तुत करती है। मैं हमेशा कुछ अनोखे लेखों का इंतज़ार करता हूँ, जैसे कि श्रीनिवास राघवन का एलबीडब्ल्यू कॉलम और संध्या राव का वर्ड्सवर्ल्ड। प्रीति मेहरा के पर्यावरण पर लेख, साथ ही स्वास्थ्य और पोषण पर लेख, विशेष रूप से सराहनीय हैं।

सदस्यता विवरण और टीआरएफ योगदान को बेहतर समझने के लिए, रो ई मंडलों के भौगोलिक वितरण को भारत के मानचित्र पर ज़ोन सहित शामिल करना अच्छा रहेगा, जो सभी रोटेरियनों, विशेषकर नए सदस्यों के लिए बहुत उपयोगी होगा। यह एक सुझाव है।

बिद्युत बी सेन

रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट - डी 3141

आपके सुझाव के लिए धन्यवाद। इसे इस अंक में लागू कर दिया गया है।

संपादक

जुलाई अंक का कवर चित्र, जो एक गुरुकुल की पृष्ठभूमि में बना है, एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करता है। यह परंपराओं से समझौता किए बिना शिक्षा के आधुनिक साधनों को अपनाने के महत्व पर प्रकाश डालता है। खुली कक्षाएँ खुले विचारों का निर्माण करती हैं। इसे जिसने भी डिज़ाइन किया है, वह काफ़ी प्रशंसा का पात्र है।

पढ़ने पर संध्या राव, पर्यावरण पर प्रीति मेहरा, और श्रीनिवास राघवन द्वारा एलबीडब्ल्यू हर मुद्दे को ताज़ा हवा का झोंका प्रदान करते हैं, जो अन्यथा केवल रोटरी, रोटरी और रोटरी के संबंधित समाचारों से युक्त होते हैं।

के रवींद्रकुमार, रोटरी क्लब करूर - मंडल 3000

जून अंक में मुझे *बॉश की मदद से बंगाल में ग्रामीण युवाओं का सशक्तिकरण* जैसे बहुत ही रोचक लेख मिले। रोटरी क्लब कलकत्ता प्रेसीडेंसी द्वारा की गई गतिविधियाँ उल्लेखनीय हैं।

रोटरी क्लब कलकत्ता महानगर द्वारा *विशेष बच्चों के लिए मैराथन* आयोजित की गई एक और शानदार गतिविधि है। तस्वीरों में उत्साही बच्चे अपने रिश्तेदारों के साथ इस मनोरंजक दौड़ का आनंद लेते हुए दिखाई दे रहे हैं। मुझे रोटरी ऐट अ ग्लांस उपयोगी और सूचनात्मक लगती है।

अजीत सी शाह, गैर-रोटेरियन, अहमदाबाद

अपने अंतिम संदेश में, रो ई अध्यक्ष स्टेफ़नी अर्चिक कहती हैं कि रोटरी, दुनिया भर में फैले अकेलेपन की महामारी के बीच मित्रता, उद्देश्य और अपनापन प्रदान करता है। संपादकीय टिप्पणी में, रशीदा भगत कहती हैं कि आईएमएफ के भारी ऋण ने पाकिस्तान को युद्धविराम के लिए मजबूर किया होगा। ऐसा हो भी सकता है। हालाँकि, यह भी उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान के कई हवाई अड्डे पूरी तरह से नष्ट हो गए और संभवतः उसके परमाणु प्रतिष्ठानों को भी क्षति पहुँची। युद्धविराम की उनकी तात्कालिकता का यह भी एक कारण हो सकता है। पीआरआईडी अशोक महाजन द्वारा लिखा गया पत्र बिल्कुल उपयुक्त है क्योंकि वे सामुदायिक संपर्क और अन्य सकारात्मक उपायों के माध्यम से स्थिति को सुधारने का आग्रह करते हैं।

के एम के मूर्ति

रोटरी क्लब सिकंदराबाद - मंडल 3150

जून अंक में प्रकाशित प्रेरक लेख ग्रामीण झारखंड में नेत्र देखभाल के लिए धन्यवाद। यह लेख रोटरी की वैश्विक अनुदान परियोजना के प्रभाव को खूबसूरती से दर्शाता है। मैंने यह पत्रिका अपने समुदाय के दोस्तों के साथ साझा की है और उन सभी ने रोटरी के इस महान कार्य की प्रशंसा की है। कुछ तो रोटरी में शामिल होने के इच्छुक भी हैं। मैं *रोटरी न्यूज़* की उत्कृष्ट गुणवत्ता के लिए भी टीम की सराहना करना चाहता हूँ - यह वास्तव में एक शानदार पत्रिका है जो रोटरी के मिशन और मूल्यों को प्रदर्शित करती है।

मधुमिता संतरा

रोटरी क्लब जमशेदपुर - मंडल 3250

कवर पर: रोटरी क्लब कोडैकनाल की आवासीय परियोजना से कोडैकनाल के वलाईगिरी गाँव में नया घर मिलने पर मल्लिगा खुशी से झूमती हुई।
चित्र: रशीदा भगत

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं ***rotarynews@rosaonline.org*** या ***rushbhagat@gmail.com*** पर संपादक को मेल कीजिए। ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।

आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा ***rushbhagat@gmail.com*** या ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर भेजे जाने चाहिए।

WhatsApp पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।

अध्यक्ष की ज़बानी

इस महीने और हर महीने

अगस्त सदस्यता माह है, लेकिन विकास और जुड़ाव के प्रति हमारी प्रतिबद्धता साल भर बनी रहती है। जब हम रोटरी के विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम सेवा करने, नेतृत्व करने और स्थायी परिवर्तन लाने की अपनी क्षमता को बढ़ाते हैं।

सदस्यता वृद्धि केवल संख्याओं के बारे में नहीं है। यह नए अवसरों के द्वार खोलने का माध्यम है। यह उन और भी लोगों को आमंत्रित करने का अवसर है, जो अपना समय, प्रतिभा और दिल, अपने से बड़े किसी उद्देश्य के लिए समर्पित करने को तैयार हैं। जब हम नए सदस्यों का स्वागत करते हैं, तो हम नए विचारों और ऊर्जा को साथ लाते हैं। हम अपने प्रभाव का विस्तार करते हैं, अपने क्लबों को मज़बूत करते हैं, और यह सुनिश्चित करते हैं कि रोटरी हमारे बदलते परिवेश के साथ विकसित होती रहे।

याद रखें, अब हमारे पास गैर-पारंपरिक क्लब मॉडल बनाने में काफ़ी लचीलापन है। जब मैं देखता हूँ कि ये नवोन्मेषी क्लब नए और संभावित सदस्यों को जुड़ने और सेवा करने के ज़्यादा तरीके प्रदान करके फल-फूल रहे हैं, तो मुझे प्रेरणा मिलती है।

कोरिया में, सैटेलाइट क्लबों के विकास ने लगभग 1,000 नए सदस्यों के लिए रोटरी में अपनी जगह बनाने के अवसर प्रदान किए हैं। रोमानिया में, रोटेरियन, रोटरेक्टर्स और इंट्रैक्टर्स के बीच घनिष्ठ सहयोग ने भविष्य के नेताओं की एक मजबूत श्रृंखला तैयार की है। भारत में, कुछ रोटेरियन एक साझा रुचि के इर्द-गिर्द इकट्ठा होते हैं-चाहे वह पेशेवर विकास हो या सेवा के प्रति जुनून-और यह जुड़ाव रोटरी का हिस्सा बनने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और उनके आनंद को और गहरा करता हैं। साथ ही, हमने दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका और यूरोप जैसे विविध क्षेत्रों में उद्देश्य-आधारित क्लबों को फलते-फूलते देखा है।

एक बात समान है: जहाँ भी क्लब बढ़ रहे हैं, वहाँ सदस्यता को प्राथमिकता दी जाती है और कुछ नया करने की इच्छा प्रबल होती है। रोटरी किसी एक ढाँचे या परंपरा तक सीमित नहीं है। हम सक्रिय लोगों का एक वैश्विक नेटवर्क हैं, और इसका मतलब है कि हमारे संगठन में कई तरह के क्लबों, सेवा के विभिन्न तरीकों और भागीदारी के कई मार्गों के लिए स्थान है।

नवाचार की यही भावना हमें नए समुदायों तक पहुँचने के हमारे प्रयासों में भी मार्गदर्शन दे रही है। उन जगहों पर जहाँ कभी कोई रोटरी क्लब नहीं रहा - या जहाँ कभी कोई क्लब था लेकिन अब लुप्त हो गया है - रोटेरियन रोटरी को आगे बढ़ाने के नए तरीके खोज रहे हैं। वे संभावित क्षेत्रों की पहचान कर रहे हैं और ऐसे क्लबों की स्थापना कर रहे हैं जो उनके समुदायों के चरित्र और ज़रूरतों को प्रतिबिंबित करते हैं।

इस सफ़र में हर सदस्य की अपनी भूमिका होती है। चाहे आप किसी दोस्त को अपने क्लब से परिचित कराएँ, किसी नए मीटिंग फ़ॉर्मेट का समर्थन करें, हमारे पूर्व छात्रों से दोबारा जुड़ें, या बस अपनी रोटरी कहानी साझा करें, आप हमारे संगठन को और मज़बूत और जीवंत बनाने में योगदान दे रहे हैं।

रोटरी क्लब किसी एक का स्वामित्व नहीं होता। यह एक ऐसा उपहार है जिसे हम अगली पीढ़ी को सौंपते हैं। जब हम इस उपहार को पोषित करते हैं, जब हम दूसरों को इसमें हिस्सा लेने के लिए आमंत्रित करते हैं, तो हम यह सुनिश्चित करते हैं कि रोटरी हमेशा एक अच्छाई की शक्ति बनी रहे।

आइए, सदस्यता वृद्धि को केवल अगस्त तक सीमित न रखें, बल्कि इसे पूरे वर्ष भर अपनी प्राथमिकता बनाएं। मित्रता, रचनात्मकता और साझा उद्देश्य के माध्यम से हम न केवल रोटरी, बल्कि *यूनाइट फ़ॉर गुड* (अच्छाई के लिए एकजुट) के मिशन को भी आगे बढ़ाएँगे।

फ्रांसेस्को अरेज़ो
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

नेतृत्व: चुनौती या अवसर?

चाहे परिवार के भीतर कोई साधारण विकास हो, दोस्तों द्वारा आयोजित कोई कार्यक्रम या उत्सव हो या फिर किसी सार्वजनिक स्थान पर उत्पन्न हुई आपात स्थिति-हम सभी ने यह अनुभव किया है कि कैसे एक व्यक्ति अचानक आगे आकर ज़िम्मेदारी उठाता है और ऐसे त्वरित व निर्णायक निर्णय लेता है जो परिस्थितियों को पूरी तरह बदल सकते हैं। अक्सर यह व्यक्ति अपने संगठन में एक नेता होता है-चाहे वह संगठन कितना भी छोटा या बड़ा क्यों न हो। अपने 47 वर्षों के पत्रकारिता करियर में मैंने राजनीति, व्यापार और उद्योग, खेल, विज्ञान और शिक्षा, बैंकिंग और वित्त, मनोरंजन और चिकित्सा एवं कानून जैसे विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े कम से कम दो सौ नेताओं का साक्षात्कार लिया है।

इनमें से अधिकांश प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मैंने एक प्रश्न अवश्य पूछा है-उनके अनुसार नेतृत्व की परिभाषा क्या है? आख़िरकार, वे अपने-अपने क्षेत्रों में शीर्ष स्थान तक पहुँचे हैं तो उनके अनुभव में वे कौन-सी विशेषताएँ हैं जो एक श्रेष्ठ नेता को परिभाषित करती हैं? उनके उत्तरों ने उन्हें केवल एक नेता नहीं बल्कि एक इंसान के रूप में भी परिभाषित किया है। नेतृत्व की भूमिका के साथ अक्सर सत्ता भी आती है; लेकिन कोई व्यक्ति उस सत्ता को कैसे संभालता है-शोभा और अहंकार के साथ या फिर विनम्रता और गरिमा के साथ-यही तय करता है कि वह व्यक्ति कौन है और उस संगठन की दिशा क्या होगी-सफलता, विफलता या केवल औसतपन। हाल ही में मैंने नेतृत्व से जुड़ी एक विशेष बात पढ़ी, जिसमें एक व्यक्ति ने बताया कि वह कठिन और जटिल परिस्थितियों से कैसे निपटते हैं। जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने अपने नेतृत्व की भूमिका में आने वाली चुनौतियों का सामना कैसे किया तो उन्होंने उत्तर दिया कि उन्होंने उन परिस्थितियों को चुनौतियों की तरह नहीं देखा बल्कि एक अवसर के रूप में देखा-ऐसा अवसर जिसे पाकर वे खुद को भाग्यशाली मानते हैं। उन्होंने उन्हें ऐसे मौके के रूप में देखा जिनमें कुछ महत्वपूर्ण हासिल किया जा सकता है। यह बात मुझे सोचने पर मजबूर कर गई... चुनौती एक भयावह या कठिन स्थिति लग सकती है जबकि अवसर एक सकारात्मक दृष्टिकोण और एक यादगार उद्देश्य को प्राप्त करने का मौका प्रतीत होते है।

निस्संदेह, हर प्रकार के नेता होते हैं; लेकिन वे नेता जो वास्तव में प्रभाव डालते हैं, वे हैं जो नवाचार के उस अवसर को अपनाते हैं जिनसे असंख्य ज़िंदगियों में बदलाव लाया जा सके। ये वे नेता होते हैं जिनमें ज़िम्मेदारी का भाव होता है और सामाजिक चेतना भी। एक उदाहरण जो मन में आता है वह हैं निडर और प्रेरणादायक महिला नमिता बंका का जिन्होंने एक सफल ज्वेलरी डिज़ाइनर का करियर छोड़कर बायो-टॉयलेट्स के क्षेत्र में एक नई क्रांति की शुरुआत की। भारतीय रेल, जो लंबे समय से अपने शौचालयों से निकलने वाले मानव अपशिष्ट के कारण पटरियों के क्षरण की गंभीर समस्या से जूझ रही थी, ने सबसे पहले DRDO (रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन) के साथ मिलकर बायो-टॉयलेट्स विकसित करना शुरू किया। लेकिन इस विशाल संगठन को अब भी ऐसे किसी व्यक्ति की आवश्यकता थी जो इन शौचालयों के निर्माण का कार्यभार उठाए या निर्माताओं के साथ समन्वय करे। 2012 में, नमिता बंका ने बांका बायोलू की स्थापना की-एक ऐसी कंपनी जो स्वच्छता के क्षेत्र में नवाचारी समाधान प्रदान करने के लिए समर्पित है। भारतीय रेल के अलावा वह ग्रामीण और दूरदराज़ के क्षेत्रों में बायो-टॉयलेट्स स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं-वहाँ जहाँ इनकी सबसे अधिक आवश्यकता है। पर्यावरण विज्ञान में उनकी शैक्षिक पृष्ठभूमि है और उनका दृढ़ विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति को एक स्वच्छ और टिकाऊ शौचालय की सुविधा मिलनी चाहिए।

अब फिर से नेतृत्व की बात करें तो रोटरी इंटरनेशनल को एक नया नेता मिला है - अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो। हालाँकि उन्हें अपने कार्यकाल की शुरुआत के लिए अपेक्षाकृत कम समय मिला क्योंकि मारियो डी कैमार्गो के अचानक इस्तीफ़े के कारण उन्होंने त्वरित रूप से यह पदभार संभाला, फिर भी यह सहज और मिलनसार नेता स्पष्ट संकेत दे रहे हैं कि वे रोटरी का नेतृत्व उत्साह, समर्पण और दक्षता के साथ करेंगे। हम उन्हें दिल से शुभकामनाएँ देते हैं।

Rasheeda Bhagat

रशीदा भगत

ADVT.

Rotary
District 3212

UNITE FOR GOOD

PROJECT FOCUS

Goal Setting / Effective Public Speaking

Project Focus is a pioneering project of Rotary Club of Virudhunagar (RID 3212), which aims at helping the school and college students, the former to achieve their goals and the latter to overcome their fear of public speaking.

Goal Setting

For School Students

Size : Min 50 Students - Max 500 Students
Duration : 2 Hours
Medium of Training : Tamil & English
Audience : Government, Government Aided and Private school students

Program that guides the school Children to fix their goals and focus on them to taste success and contentment in their lives. Through this initiative, students will have the opportunity to develop action plans and work towards realizing their dreams. Through mentorship, educational resources, and other forms of support, this transformative initiative is dedicated to helping students achieve their full potential.

As on July 15, 2025

No. of. Programs
120

No. of. Beneficiaries
12,385

Effective Public Speaking

For College Students

Size : Min 40 Students - Max 60 Students
Duration : 6 Hours
Medium of Training : Tamil & English
Audience : Government and Private College Students

This programme empowers the youth to come out of their fear, hesitation and anxiety in public speaking. It emphasizes the importance of effective communication skills in their personal, professional and family life. It regulates their pattern of speaking, delivery skills, presentation tactics and content drafting. It helps the students to voice out their ideas, opinions and wishes in front of others, enabling them to compete with large audience. Overall, it equips the college students to crack their placement interviews with confidence.

LEKHA ads/Aug 25/ Rotary/Inner

IDHAYAM
PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

Do you want to conduct
" **Project Focus** "
in your Town/City/District?
We are waiting to partner with you.

Project Chairman
Rtn.M.A.P.R. Rengasamy
JCI Area Trainer
99444 11961

निदेशक का संदेश

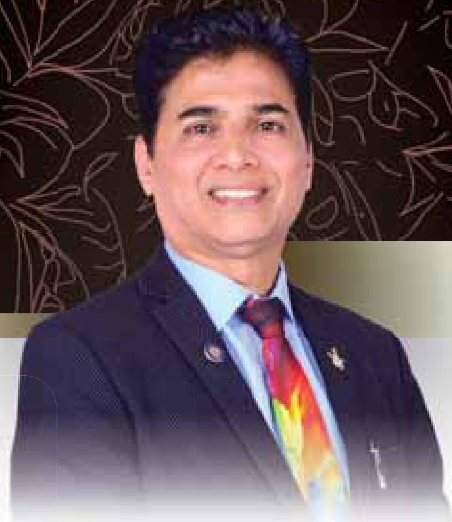

भलाई के लिए एकजुट हों कार्रवाई का आह्वान

प्रिय साथी रोटेरियनों,

जैसा कि हम इस नए अध्याय को एक साथ शुरू करते हैं, आइए हम एकता की शक्ति और उस उद्देश्य को अपनाएं जो हमें बांधता है - दुनिया में अच्छाई करना। अध्यक्ष का संदेश ''अच्छाई के लिए एकजुट'' सिर्फ एक नारा नहीं है। यह एक दिशा है एवं सहयोग, करुणा और सामूहिक प्रभाव हेतु एक साहसिक आह्वान है।

रोटरी तब पनपती है जब क्लब एक साथ काम करते हैं और जब हम अपने संगठन के बाहर भागीदारों के साथ मिलकर काम करते हैं। सहयोग हमारे प्रयासों को बढ़ाता है, हमारी सेवा को गहरा करता है, और उन समुदायों तक हमारी पहुंच बढ़ाता है जिन्हें हमारी सबसे अधिक आवश्यकता है। आइए हम मंडलों के भीतर और सीमाओं के पार तालमेल को बढ़ावा दें, और न केवल भावनाओं में बल्कि कार्रवाई में एकजुट हों।

सदस्यता हमारी ताकत है। अब समय है कि हम अपने मंडलों को 10:20:30 लक्ष्य से फिर से ऊर्जा दें - प्रत्येक मंडल 30 सितंबर 2025 तक 10 रोटरी क्लब, 20 रोटरेक्ट क्लब, और 30 इंटरेक्ट क्लब की शुद्ध वृद्धि प्राप्त करे। लेकिन केवल आंकड़े हमें आगे नहीं बढ़ाएंगे - अनुभव बढ़ाएंगे। तो आइए हम अर्थपूर्ण सदस्य सहभागिता, नेतृत्व विकास, और एक ऐसी रोटरी बनाएं जिसमें हर सदस्य खुद को मूल्यवान और प्रेरित महसूस करें।

रोटरी संस्थान हमारे प्रभाव का इंजन बना हुआ है। इसकी जीवन परिवर्तित करने की शक्ति - चाहे वह स्वच्छ जल, रोग निवारण या शिक्षा के माध्यम से हो - अतुलनीय है। मैं हर क्लब से आग्रह करता हूँ कि वह टीआरएफ के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को एक बार फिर से मजबूत करें। हर योगदान मायने रखता है। हर एक डॉलर एक सपने को साकार होने के करीब लाता है।

हम ऐसी पहलों की भी शुरुआत कर रहे हैं जो सदस्य सहभागिता की निगरानी करेंगी, नए सदस्यों को सहयोग देंगी, और सहयोगात्मक सेवा परियोजनाओं के लिए फंड जुटाएगी। ये पहल हमें रोटरी की आत्मा, हमारे लोग और हमारे उद्देश्य से जुड़े रहने में मदद करेंगी।

हमारे कॉर्पोरेट साझेदारों के साथ किए गए कार्य को पहचान देने और उन्हें विस्तृत करने के लिए, हमने हर ज़ोन में क्षेत्रीय सीएसआर पुरस्कार की शुरुआत की हैं, जो 13 नवंबर 2025 को नई दिल्ली में आयोजित *राष्ट्रीय सीएसआर सम्मेलन* के साथ समाप्त होंगे। यह रोटरी के लिए यह दिखाने का एक अवसर है कि रणनीतिक दान और सेवा किस प्रकार समुदायों को रूपांतरित कर सकते है।

क्लबों को चाहिए कि वे *यूनाइट फ़ार गुड* (अच्छाई के लिए एकजुट) संदेश को अपने हर कार्य में पिरो दें। इसका उपयोग अपने आयोजनों को प्रेरित करने के लिए, बैठकों को ऊर्जा देने के लिए, और अपनी कहानियों को सशक्त करने के लिए करें।

जैसे-जैसे हम इस वर्ष की यात्रा करेंगे, आइए हम अपने बुनियादी मूल्यों - सेवा, नेतृत्व, विविधता, सत्यनिष्ठा और मैत्री - के प्रति फिर से प्रतिबद्ध हो। ये केवल आदर्श नहीं हैं, बल्कि हमारे हर कार्य की नींव हैं।

आइए हम *अच्छाई के लिए एकजुट* हों - मजबूत बनने, गहराई से सेवा करने और दुनिया पर एक स्थायी छाप छोड़ने के लिए।

रोटरी की सेवा में,

के पी नागेश
रो ई निदेशक, 2025-27

2026
कन्वेंशन

छुट्टियाँ आसान हो गईं

रोटरी के सदस्य एक साहसिक समूह हैं और वार्षिक सम्मेलन का उपयोग मेजबान शहर तथा आसपास के क्षेत्र के दर्शनीय स्थलों और संस्कृति को जानने के अवसर के रूप में करते हैं, अक्सर रो ई के दोस्तों के एक समूह के साथ। जब आप 13 से 17 जून तक ताइपे में रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में भाग लेंगे, तो आपको घूमने के अनगिनत विकल्प मिलेंगे, जिनमें से कई आयोजन स्थल के पास ही होंगे।

इस महानगर से पहाड़ हमेशा पहुँच में रहते हैं। प्रदर्शनी केंद्र से थोड़ी दूरी पर स्थित ताइपे चिड़ियाघर के बाहर माओकोंग गोंडोला में सवार हो जाइए (अंदर पांडा और देशी स्केली पैंगोलिन भी देखे जा सकते हैं!)। पहाड़ी ढलानों पर ऊलोंग चाय के खेतों की ढलानों से गुज़रने वाले हाइकिंग ट्रेल्स तक पहुँचने के लिए ढलान पर चढ़ें, या किसी चायघर में रुककर पकौड़े का आनंद लें और आस-पास उगने वाले पौधों से बनी चाय की चुस्की लें।

ताइपे की खोज आपको रात्रि बाजार के खाद्य स्टालों, गर्म झरनों, प्राचीन खजानों से भरे संग्रहालय या क्षितिज पर छाए टावर के शीर्ष पर स्थित वेधशाला: ताइपे 101 तक ले जा सकती है। साथ ही, आप ताइवान के विभिन्न धर्मों और लोक देवताओं के हजारों मंदिरों में से किसी एक (या एक से अधिक!) का भी दौरा कर सकते हैं।

आपके परिवार या यात्रा साथियों का सम्मेलन में स्वागत है। जब हम मिलकर दुनिया को बेहतर बनाने के बारे में सोचते हैं, तो जितने ज़्यादा लोग शामिल हों, उतना ही अच्छा होता है। बड़े मंचों पर होने वाले सत्र प्रेरणादायक और असाधारण होते हैं, जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं - रोटरी की परंपराओं के साथ, जिसमें ध्वजारोहण समारोह, नोबेल पुरस्कार विजेताओं जैसी दुनिया को बदलने वाली हस्तियाँ, और अविस्मरणीय गायक, नर्तक और अन्य कलाकार शामिल होते हैं।

अपनी यात्रा की योजना उन रोमांचक सम्मेलन प्रदर्शनियों के इर्द-गिर्द बनाएँ, जिनका आनंद सभी उठा सकें। इसके अलावा, ताइवान में रोटरी आयोजक द्वीप को देखने के लिए विशेष अनुभव और पर्यटन की योजना भी तैयार करेंगे। आपकी अगली छुट्टी की योजना तो तय है!

अधिक जानकारी प्राप्त करें और
convention.rotary.org
पर पंजीकरण कराएं।

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981	लियोन जे
RID 2982	शिवसुंदरम पी
RID 3000	कार्तिक जे
RID 3011	रविंदर गुगनानी
RID 3012	अमिता अनिल मोहिंदरू
RID 3020	कल्याण चक्रवर्ती वाई
RID 3030	ज्ञानेश्वर शेवाळे
RID 3040	सुशील मल्होत्रा
RID 3053	निशा शेखावत
RID 3055	निगमकुमार एल चौधरी
RID 3056	प्रज्ञा मेहता
RID 3060	अमरदीप सिंह बुनेत
RID 3070	रोहित ओबेरॉय
RID 3080	रवि प्रकाश
RID 3090	भूपेश मेहता
RID 3100	नितिन कुमार अग्रवाल
RID 3110	राजेन विद्यार्थी
RID 3120	अशुतोष अग्रवाल
RID 3131	संतोष मधुकर मराठे
RID 3132	सुधीर वी लातुरे
RID 3141	मनीष मोटवानी
RID 3142	हर्ष वीरेंद्र मकोल
RID 3150	राम प्रसाद एस वी
RID 3160	रविंद्र एम के
RID 3170	अरुण डैनियल भंडारे
RID 3181	रामकृष्ण पी कन्नन
RID 3182	पलक्शा के
RID 3191	श्रीधर बी आर
RID 3192	एलिज़ाबेथ चेरियन परमेश
RID 3203	धनासेकर बी
RID 3204	बिजोश मैनुअल
RID 3205	रमेश जी एन
RID 3206	चेल्ला के राघवेन्द्रन
RID 3211	टीना एंटनी कुन्नुमकल
RID 3212	जे धिनेश बाबू
RID 3231	वी सुरेश
RID 3233	डी देवेंद्रन
RID 3234	विनोद कुमार सराओगी
RID 3240	कामेश्वर सिंह एलांगबम
RID 3250	नम्रता
RID 3261	अमित जायसवाल
RID 3262	मनोज कुमार त्रिपाठी
RID 3291	रामेन्दु होमचौधुरी

प्रकाशक एवं मुद्रक **पी टी प्रभाकर**, 15 शिवास्वामी स्ट्रीट, मायलापोर, चेन्नई - 600004, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के लिए रासी ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड, 40, पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600014 से मुद्रित एवं रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट, दुगड़ टावरस, 3rd फ्लोर, 34 मार्शलस रोड, एग्मोर, चेन्नई - 600008 से प्रकाशित। संपादक: **रशीदा भगत**

योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

एम मुरुगानंदम RID 3000
रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट

के पी नागेश RID 3191
रो ई निदेशक

डॉ भरत पांड्या RID 3141
टीआरएफ ट्रस्टी

राजेंद्र के साबू RID 3080
कल्याण बेनर्जी RID 3060
शेखर मेहता RID 3291
अशोक महाजन RID 3141
पी टी प्रभाकर RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई RID 3060
सी भास्कर RID 3000
कमल संघवी RID 3250
डॉ महेश कोटबागी RID 3131
ए एस वेंकटेश RID 3234
राजु सुब्रमण्यन RID 3141
अनिरुधा रॉयचौधरी RID 3291
गुलाम ए वाहनवती RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2025-26)

रोहित ओबेरॉय RID 3070
अध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल

ज्ञानेश्वर शेवाळे RID 3030
वाईस चेयरमेन, गवर्नर्स काउंसिल

एम के रविंद्र RID 3160
सचिव, गवर्नर्स काउंसिल

चेल्ला के राघवेन्द्रन RID 3206
कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Magazine

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

हमें जानिए

जब अधिकांश लोग रोटरी में शामिल होते हैं, तो उन्हें रोटरी फाउंडेशन के बारे में बहुत कम जानकारी होती है।

सदस्यता माह हमारे सदस्यता और हमारे फाउंडेशन के बीच शक्तिशाली संबंध को उजागर करने का एक अच्छा अवसर है।

रोटरी की ओर आकर्षित होने वाले लोग अपने समुदायों की गहरी परवाह करते हैं और एक बड़ा बदलाव लाना चाहते हैं। वे सेवा के सार्थक और व्यावहारिक तरीकों की खोज में रहते हैं - और हमारा फाउंडेशन ऐसे अवसरों को साकार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उद्देश्य-आधारित रोटरी क्लब नए सदस्यों के लिए रोटरी में उद्देश्य खोजने का एक रोमांचक तरीका हैं, और ये क्लब हमारे फाउंडेशन में नई ऊर्जा और सक्रियता भी लाते हैं। मैंने ऐसे ही एक क्लब की अध्यक्ष, मैरिसोल चियानेलो को अपना दृष्टिकोण साझा करने के लिए आमंत्रित किया:

''एक गैर-लाभकारी वकील होने के नाते, मुझे लंबे समय तक यही लगता रहा कि मेरे पास रोटरी का हिस्सा बनने का समय नहीं है। लेकिन जब मैंने एक नए उद्देश्य-आधारित ई-क्लब - रोटरी क्लब ऑफ़ मेंटल हेल्थ एंड वेलनेस मंडल 5280 - के बारे में सुना, तो मुझे लगा कि मुझे इसका हिस्सा जरूर बनना चाहिए।

केवल तीन वर्षों में, हमारे क्लब ने दक्षिणी कैलिफोर्निया में मानसिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं के समर्थन में बहुत काम किया है और इस क्षेत्र में स्नातक छात्रों को हजारों डॉलर की छात्रवृत्तियां प्रदान की हैं, जिसमें इस वर्ष युगांडा के एक छात्र को दी गई छात्रवृत्ति भी शामिल है।

कुछ महीने पहले ही, हमें दक्षिण-पूर्वी तुर्की में 2023 के भूकंप के बचे लोगों को व्यक्तिगत और डिजिटल मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करने के लिए हमारे पहले वैश्विक अनुदान के लिए मंजूरी दी गई थी।

अपनी सेवा के माध्यम से, हमने पूरे अमेरिका से नए सदस्यों को आकर्षित किया है, जिनमें महिलाएँ और युवा सदस्य भी शामिल हैं, जो शायद रोटरी में अन्यथा शामिल नहीं होते। हमारे जैसे उद्देश्य-आधारित क्लब, किसी विशिष्ट लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध लोगों के लिए एक सार्थक प्रवेश द्वार प्रदान करते हैं - जो रोटरी की वैश्विक पहुँच और फाउंडेशन के समर्थन से और भी सशक्त बनता है।''

मैरिसोल की कहानी हमें यह याद दिलाती है कि रोटरी सेवा और फ़ाउंडेशन के सहयोग से क्या कुछ संभव हो सकता है। मुझे आश्चर्य है कि कितने कार्य-आधारित क्लब सदस्यों को अपनी शुरुआत में फ़ाउंडेशन के संसाधनों की पूरी जानकारी थी? कितने मौजूदा क्लब ऐसे नए समूहों के साथ अनुदान पर साझेदारी कर सकते हैं?

जब हम नए रोटरी और रोटरेक्ट क्लब स्थापित करें और नए सदस्यों का स्वागत करें, तो आइए रोटरी फाउंडेशन को केंद्र में रखें। फ़ाउंडेशन न केवल सदस्यता अनुभव को समृद्ध बनाता है, बल्कि क्लबों के विकास में सहयोग करता है और हमारे प्रभाव को और अधिक गहरा करता है।

रोटरी फ़ाउंडेशन केवल धन जुटाने का एक माध्यम नहीं है; यह अनंत अवसरों का एक आमंत्रण है। यह रोटरी के रूप में हमारी पहचान की जीवंत अभिव्यक्ति है।

जब कोई नया सदस्य रोटरी से जुड़ता है या कोई नया क्लब स्थापित होता है, तो रोटरी फाउंडेशन भी उसके अनुभव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकता है।

होल्गर नेक
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

ग्राम प्रमुख मल्लिका उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित करती हुई। उनके पीछे क्लब सदस्य मीरा राजकुमार चित्र में शामिल हैं।

श्रीधर भारती

Rotary PEOPLE OF ACTION

कोडाई आदिवासियों को मिला नया आशियाना

रशीदा भगत

मल्लिगा की हर बात से खुशी, आत्मविश्वास और सकारात्मकता झलकती है। इसीलिए जब वह उसकी उम्र पर मेरे द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब बड़े हँसते हुए देती हैं, तो उसकी बातों को समझ पाना थोड़ा कठिन लगता है। वो दिल खोलकर हँसते हुए कहती हैं: मैडम, मुझे अपनी उम्र का कोई अंदाज़ा नहीं है। पढ़ाई-लिखाई तो दूर की बात है, मैंने कभी स्कूल के अंदर तक नहीं देखा स्कूल की इमारत के पास जाकर उसकी छाया तक नहीं ली है!

और फिर भी, मल्लिगा ने बड़ी सहजता से एक आदिवासी बस्ती के नेतृत्व की ज़िम्मेदारी संभाल ली है, जो तमिलनाडु के कोडाइकनाल जैसे शांत और प्रतिष्ठित हिल स्टेशन से लगभग 30 किमी दूर वलाईगिरी में एक आरक्षित वन क्षेत्र से सटा हुआ है। यहाँ एक रोटेरियन के जुनून, दृष्टिकोण और समर्पण की बदौलत मल्लिगा और 13 अन्य परिवारों को नई ईंट-पत्थर की पक्के घर मिल गए हैं। जून के अंत तक, ये 14 परिवार इस छोटी सी बस्ती में ऐसे घरों में रह रहे थे जो मोटी नीली और सफेद तिरपाल की चादरों, टिन की प्लेटों और चार लकड़ी के खंभों से जैसे-तैसे खड़े किए गए थे।

इस महत्वाकांक्षी परियोजना को अंजाम देने वाले रोटेरियन, जिन्होंने अपने दोस्तों और परिचितों-जिनमें कुछ रोटेरियन भी शामिल थे-से अकेले ही ₹70 लाख जुटाए, वह रोटरी क्लब कोडैकनाल (रो ई मंडल 3000) के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार रामन हैं। ''मैं हमेशा से एक ऐसी सेवा परियोजना करना चाहता था जो इस क्षेत्र में रहने वाले कुछ आदिवासी परिवारों को लाभान्वित करें। आदिवासी लोगों को घर देने की परियोजना का विचार सबसे पहले 2022 में PDG जवारीलाल जैन (रो ई मंडल 3231) ने मेरे मन में डाला था, जब वह हमारे कार्लटन होटल (जहाँ राजकुमार वर्षों से काम कर रही है और अब इसके उपाध्यक्ष है) में PETS और SETS कार्यक्रम के लिए आए थे। उन्होंने मुझसे 'देने की खुशी' पर पांच मिनट का भाषण देने के लिए कहा। इसका कारण यह था कि अपने अध्यक्षीय वर्ष में मैंने 300 से अधिक परियोजनाएं पूरी की थी।''

शाम को एक बातचीत के दौरान जैन ने राजकुमार द्वारा उनके अध्यक्षीय वर्ष में किए गए कार्यों की सराहना की और ''मुझसे पूछा, क्या आप कुछ आदिवासी बस्तियों को देख सकते हैं जहाँ घर बनाए जा सकें? हमने प्रत्येक घर की लागत ₹2 लाख तय की और उन्होंने कहा कि वे मुझे इस परियोजना को पूरा करने मे मदद करेंगे।''

यही वो समय था जब राजकुमार रो ई मंडल 3000 के सहायक गवर्नर थे। उत्साहित रोटेरियनों ने तुरंत ही जगह की तलाश का कार्य शुरू कर दिया और स्थानीय RDO (राजस्व प्रभागीय अधिकारी) मुरुगेशन को इस काम में मदद के लिए अपने साथ शामिल किया ताकि ऐसी किसी आदिवासी बस्ती की पहचान की जा सके। हालांकि

केवल ₹2 लाख ही दे सके जिससे केवल एक ही घर बन सकता था। लेकिन रोटेरियनों ने ठान लिया कि एक छोटी सी बस्ती में छोटी सी परियोजना ज़रूर करेंगे जहाँ कम घरों की आवश्यकता हो।

रोटरी न्यूज़ से बात करते हुए राजकुमार ने बताया कि इस क्षेत्र में लगभग 22 आदिवासी बस्तियां हैं और उन्होंने आरडीओ के साथ मिलकर इनमें से किसी एक बस्ती में घर बनाने की संभावनाओं का अध्ययन किया। उन्होंने जिन तीन बस्तियों का दौरा किया वहाँ ज़मीन प्राप्त करने और उन घरों के निर्माण के लिए सरकार से स्पष्ट अनुमति प्राप्त करने में चुनौतियां थीं। ''अगर कागज़ात साफ़ नहीं होते और हम वहाँ घर बना देते तो बाद में अधिकारी आपत्ति जता सकते थे और इन घरों को ध्वस्त कर दिया जाता इसलिए हमें बहुत सावधान रहना पड़ा,'' वह कहते हैं।

आख़िरकार वलैगिरी में उन्हें एक आदर्श आदिवासी बस्ती मिल गई जहाँ बहुत सारी चीज़ें अनुकूल थीं। ''यहाँ 14 परिवार अस्थायी झोपड़ियों में रह रहे थे, जो वास्तव में प्लास्टिक की चादरों और बांस के खंभों से बनी थीं - जिनमें से कुछ आपने देखी भी होंगी। और वो ज़मीन जिसपर उन्होंने अपनी झोपड़ियाँ बना रखी थी, आरक्षित वन क्षेत्र की सरहद पर ही थी। RDO की मदद से मुझे पता चला कि यह ज़मीन मदुरै के भरत की

दाईं ओर से: आईपीडीजी राजा गोविंदसामी, प्रोजेक्ट चेयर राजकुमार, उनकी पत्नी मीरा, RDO मुरुगेसन, पूर्व एसपी कलियामूर्ति, नागराज सेट्टी और उनकी पत्नी कल्पना।

है। फिर मैंने उनसे अपनी परियोजना के बारे में बात की और उनसे अनुरोध किया कि वह इन 14 आदिवासी परिवारों के लिए थोड़ा-सा भूखंड दान करें ताकि उनके लिए पक्के घर बनाए जा सकें।''

भरत के पास लगभग 33 एकड़ जमीन है और उनके साथ दो बैठकों के बाद वह बड़ी ही विनम्रता से 28 सेंट जमीन दान करने के लिए सहमत हो गए - प्रत्येक परिवार के लिए दो सेंट की कीमत लगभग ₹2 लाख थी - और मुझे महसूस हुआ कि अब मेरा सपना सच होने की शुरुआत हो चुकी है।'' इस परियोजना की एक दिल छू लेने वाली विशेषता यह है कि जमीन और घर दोनों ही परिवार की महिलाओं के नाम पर पंजीकृत किए गए है, ताकि भविष्य में अगर कोई पुरुष सदस्य शराब या जुए की लत में पड़कर कर्ज में फँस जाता है तो वह इस घर को न बेच सके। हालांकि सार्वजनिक तौर पर इसे संयुक्त स्वामित्व दिखाया गया है - हर घर पर तमिल में एक सुंदर नेमप्लेट लगाई गई है जैसे *सेनबागम और प्रकाश इल्लम* (घर) या *पापाती और पलानी इल्लम।*

मल्लिगा और इस बस्ती में रहने वाले अन्य आदिवासी पलियर समुदाय से संबंधित हैं; पलियर और पुलैयार कोडाइकनाल पहाड़ियों में रहने वाले दो मुख्य आदिवासी समूह हैं। पलियर ऊंचे इलाकों

में रहते हैं जबकि पुलैयार निचले इलाकों में रहते हैं। दोनों ही जनजातियों का जंगलों के साथ गहरा सांस्कृतिक संबंध है, वे इन जंगलों को पवित्र मानते हैं। सरकार ने इन आदिवासियों को जंगल से जड़ी-बूटियाँ, शहद, फल और अन्य औषधीय पौधे इकट्ठा करने का अधिकार दिया है, जिसे वे व्यापारियों को बेचते हैं। लेकिन उनका मुख्य गुज़ारा खेतीहर मज़दूरी और अन्य दिहाड़ी मजदूरी से ही चलता है। दो सेंट जमीन का मालिक होना और उस पर ईंट-पत्थर का घर बनाना उनके लिए कल्पना से भी परे है।

शुरुआत से ही आरडीओ मुरुगेसन ने यह ठान लिया था कि वह इस परियोजना को आवश्यक अनुमति दिलवाने और ज़मीन के मालिकाना हक़ के कागज़ात का काम जल्द से जल्द पूरा कराने में हर संभव मदद करेंगे। ''जो काम आम तौर पर बहुत कठिन और समय लेने वाला होता, वह आरडीओ की मदद से बहुत ही सहजता से पूरा हो गया। वह बहुत ही ईमानदार और दयालु व्यक्ति हैं। और आज इन परिवारों की सभी 14 महिलाएँ ज़मीन की मालकिन बन गई हैं,'' राजकुमार मुस्कुराते हुए कहते हैं।

इसके बाद धन संचयन का सबसे कठिन कार्य करना था। इस परियोजना को रोटरी की अन्य परियोजनाओं से जो बात अलग बनाती है, वह यह है कि इसमें भले ही राशि काफ़ी बड़ी हो - पूरे ₹70 लाख (और अब थोड़ा और ज़्यादा, क्योंकि राजकुमार को यह कड़वा सच पता चला है कि जिन बिजली कनेक्शनों को वह पहले सरकार से मुफ़्त में मिलने वाला समझते थे, उनके लिए अब हर घर को ₹5,600 देने होंगे) - फिर भी यह पैसा न तो किसी वैश्विक अनुदान से आया है, न मंडल अनुदान से और न ही मेरे क्लब की निधि से फिर भी मैंने इसे अपने क्लब की परियोजना बनाया है। मैंने अपने दोस्तों और कुछ जान-पहचान वाले कॉरपोरेटों से अपील करके यह पैसा जुटाया है और ज़्यादातर लोगों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है।

दूसरी बड़ी समस्या थी लागत में बढ़ोत्तरी; जैसे ही काम शुरू हुआ, चट्टानी इलाके में निर्माण से जुड़ी सारी कठिनाइयाँ सामने आने लगीं क्योंकि 14 में से प्रत्येक घर अलग-अलग ऊँचाई पर थे। निर्माण सामग्री को वहाँ तक पहुँचाने में लागत बहुत ज़्यादा आई, संकरे रास्तों की वजह से निर्माण सामग्री ले जाने वाले वाहन निर्माण स्थल तक नहीं पहुँच सके और मानव श्रम का सहारा लेना पड़ा।

इन सब कारणों से लागत बढ़ गई। पहले उन्होंने अनुमान लगाया था कि हर घर (150 वर्ग फुट का) बनाने में लगभग ₹3 लाख का खर्च आएगा लेकिन अंत में यह आंकड़ा बढ़कर प्रति घर ₹5 लाख हो गया। ऐसा इसलिए क्योंकि रोटेरियन (राजकुमार) निर्माण सामग्री की गुणवत्ता - चाहे वह दरवाज़े-खिड़कियाँ हों या बाथरूम की टाइल्स - से कोई समझौता नहीं करना चाहते थे।

जब राजकुमार यह कहानी सुना रहे होते हैं तो उनकी पत्नी मीरा, जो उसी क्लब - रोटरी क्लब कोडाइकनाल - की रोटेरियन हैं, पिछले तीन वर्षों की कठिनाइयों और मुश्किल क्षणों को याद करती हैं। भूमि पूजन जून 2022 में किया गया था लेकिन रास्ते में कई समस्याएँ आ गईं। ''कई बार ऐसा हुआ जब राजकुमार निराश हो गए और इस परियोजना को छोड़ देना चाहते थे। तब मैं उन्हें समझाती थी कि चलो हम इसे थोड़ा-थोड़ा करके करते हैं। पहले दो घर बनाते हैं, फिर दो और बनाते हैं और धीरे-धीरे इसे आगे बढ़ाते हैं। और हम इसी तरह काम करते गए।''

उनके पति मुस्कुराते हुए उन अलग-अलग प्रकार की मदद को याद करते हैं जो अलग-अलग वक्त में लोगों से मिली। ''मैं अपने दोस्तों को मदद के लिए संदेश भेजता था और उनमें से कई ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी।'' वह अपने मित्रों के प्रति विशेष रूप से आभारी हैं, जिनमें से कई रोटेरियन हैं जैसे कि वॉकहार्ट के चेयरमैन हबीब खोराकिवाला; कॉनकॉर्ड टेक्सटाइल्स के चेयरमैन अवैस मुस्वी; रोटरी क्लब बॉम्बे नॉर्थ चैरिटी ट्रस्ट; सुंदरम होम फाइनेंस के एमडी लक्ष्मीनारायणन; वासवी थंगा मलगई के एमडी रवि नित्यानंदम; मुंबई से के. एस. नागराज शेट्टी और सूरज डीसूज़ा; भगवां प्रोजेक्ट (जिसने घर बनाए) से सतीश कुमार

मुझे अपनी उम्र का भी अंदाज़ा नहीं है। पढ़ाई-लिखाई तो बहुत दूर की बात है, मैंने कभी स्कूल के अंदर का नज़ारा तक नहीं देखा स्कूल की इमारत के पास इतनी भी नहीं गई कि उसकी छाया मिल सके।

मल्लिका, ग्राम प्रमुख

भोंसले; चेन्नई से रोटेरियन शोभा और श्रीराम; रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली रॉकसिटी; लिजी जॉर्ज, पीडीजी जवारिलाल जैन; वासुदेवन; सी. जयपॉल और पी. रविचंद्रन।

वह इस परियोजना को मिली हर मदद के लिए आभारी हैं। तिरुपुर के डी ईश्वरन ने मुझे सभी दरवाज़ों और खिड़कियों के फ्रेम दिए, जिनकी कीमत लगभग ₹3.5 लाख थी। कोडाइकनाल के 4S एसोसिएट्स द्वारा टाइल्स दीं गई थी, जबकि एक अन्य दोस्त ने ₹1 लाख की इलेक्ट्रिक सामग्री दान दी। आज, आपकी यात्रा के उपलक्ष्य में मैं उन्हें साड़ी, शर्ट, तकिए आदि का एक सेट देना चाहता था इसलिए मैंने मदुरै में अपने दोस्त मुत्तुकुमार से पूछा कि क्या वो ये सामान मुझे मामूली कीमत पर दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि वह ये कपड़े दान में देंगे। तो इस तरह बहुत सारे लोगों ने इस काम में मदद की है।

जब यह परियोजना चल रही थी और उन्हें एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या का सामना करना पड़ा तब उनके क्लब के पूर्व अध्यक्ष और परियोजना समन्वयक एल. जया प्रसाद ने कार्य की निगरानी की जिम्मेदारी संभाल ली। रोटरी क्लब कोडाइकनाल के अन्य सदस्यों ने भी इस परियोजना को सफल बनाने में उनकी मदद की जिनमें पूर्व अध्यक्ष डॉ मदन, डी राजकुमार और रोहन सैमुएल भी शामिल हैं।

अपने चमचमाते नए घर में अपने पोते - वह छह पोते-पोतियों की दादी हैं - और अपने पालतू कुत्ते डामू के साथ बैठी मल्लीगा खुशी से मुस्कुरा

जब एक लड़की ने कहा कि वह जिला कलेक्टर बनना चाहती है, तो मुंबई से नागराज सेठी ने स्वयं आगे आकर उसकी कॉलेज की पढ़ाई पूरी होने तक की फीस भरने की जिम्मेदारी ली।

रही हैं। (डामू तस्वीरों के लिए पोज़ देना जल्दी ही सीख जाता है, वह मेरे पीछे-पीछे चलता है और जैसे ही मैं कैमरा निकालती हूँ, फ्रेम में कूद जाता है!) मल्लीगा राजकुमार को आश्वस्त करती हैं कि बस्ती के सभी बच्चे नियमित रूप से स्कूल जा रहे हैं। ''हाँ, मुझे पता है कि आपने खास तौर पर इस बात पर ज़ोर दिया था कि लड़कियाँ ज़रूर स्कूल जाएँ और मैं यह सुनिश्चित कर रही हूँ,'' वह मुस्कुराते हुए कहती हैं। बच्चे तीन अलग-अलग स्कूलों में जाते हैं; छह बड़े बच्चे 5 किलोमीटर दूर के एक स्कूल में पढ़ते हैं और वहीं के सरकारी छात्रावास में रहते हैं।

राजकुमार बताते हैं कि मल्लिगा के घर में वॉशरूम है, पारंपरिक रूप से ये लोग घर के अंदर शौचालय रखना पसंद नहीं करते। इसलिए बाद में बने घरों में हमने वॉशरूम को घर से सटा हुआ बनाया है। अब वन विभाग ने सामने से यह कहा है कि वो इन परिवारों के लिए एक शौचालय खंड का निर्माण करवाएगा और यह उनके लिए एक बड़ा आशीर्वाद होगा। मैंने डिंडीगुल के जिला कलेक्टर ए सर्वनन से भी बात की है और उन्होंने इन आदिवासियों को सरकार की विभिन्न जनजातीय योजनाओं का पूरा लाभ दिलवाने में मदद करने का वादा किया है। इसमें ज़मीन का एक टुकड़ा भी शामिल है जहाँ वे सामूहिक खेती कर सकते हैं।

जब मैं उस छोटे से इलाके में घूमता हूँ तो मुस्कुराते हुए चेहरे मेरा स्वागत करते हैं; आखिरकार, एक घर का मालिक होना ज्यादातर लोगों का जीवन भर का सपना होता है। नागेश्वरी अन्य लोगों के साथ जंगल से जड़ी-बूटियां, फल, शहद आदि भी एकत्र करती हैं लेकिन उनकी मुख्य आय खेतिहर मज़दूरी करके ही होती है। जब काम मिलता है तो वह इस कार्य से रोज़ाना लगभग ₹300 कमा लेती हैं। पवनराज जैसे पुरुषों के लिए खेतों में मजदूरी - खासकर कॉफी के बीज तोड़ने का काम - या कुली का काम रोज़ाना ₹400-500 दिला देता है, लेकिन हमें हर दिन काम नहीं मिलता, वह कहते हैं।

मल्लिगा कहती हैं कि अपने घरों के आसपास आदिवासी लोग कॉफी के बीज के साथ अमरूद और एवोकैडो जैसे कुछ फल उगाते हैं, जिनकी शहरों में बहुत मांग है। राजकुमार एक मुस्कान

के साथ उस घटना को याद करते हैं जब वह अपनी पत्नी मीरा के साथ कोडाइकनाल से यात्रा कर रहे थे, उस समय यह परियोजना चल रही थी और हमेशा की तरह उन्होंने परियोजना स्थल पर रुकने का फैसला किया। ''जब हम वहाँ से निकलने लगे तो एक बुजुर्ग महिला ने हमें रुकने को कहा, वह अपनी झोपड़ी के अंदर दौड़कर गई और ताजे कॉफी पाउडर एवं स्वादिष्ट पहाड़ी केले लेकर वापस आई। इतने स्नेह और प्रेम से दिया गया ऐसा अनमोल उपहार कौन भूल सकता है?''

जून 2025 में जब रो ई मंडल 3000 के तत्कालीन डीजी राजा गोविंदसामी ने *रोटरी मॉडल ट्राइबल विलेज* नामक परियोजना का उद्घाटन किया तो गांव में उत्सव का माहौल था, सभी घरों को केले के पत्तों से सजाया गया था, जो हल्की हवा में लहराते हुए गाँव को सुंदर बना रहे थे। महिलाएं चमचमाती नई साड़ियों में सजी थीं, बच्चे रंग-बिरंगे कपड़ों में और पुरुष नई कमीज़ और *वेष्टी* (धोती) पहनकर खिले-खिले दिख रहे थे। गृहप्रवेश के उपलक्ष्य में दूध को विधिपूर्वक उबाला गया और प्रत्येक परिवार को कंबल, चादरें और एक महीने तक चलने वाले खाद्यान्न और अन्य राशन जैसी उपहार सामग्री दी गई। ये सामग्री कोडाईकनाल के अश्विन राजकुमार और मुंबई की रोमा सेठी द्वारा दान की गई थी।

आईपीडीजी गोविंदसामी ने कहा, यह राजकुमार जैसे एक अकेले रोटेरियन द्वारा किया जा रहा अपनी तरह का पहला काम है और इसे सराहा और साझा किया जाना चाहिए ताकि अन्य लोग भी इससे प्रेरित होकर ऐसा कार्य कर सकें। सुंदरम होम फाइनेंस के एमडी लक्ष्मीनारायणन, जिन्होंने एक घर दान किया है, ने कहा कि जब उन्होंने पहले इन आदिवासियों के पुराने घर देखे थे और अब जब इन नए घरों को देखा, तो उन्हें इस बदलाव से बहुत आश्चर्य हुआ और खुशी भी हुई कि यह उनके जीवन में कितना बड़ा परिवर्तन लाएगा। नागरज सेठी, जो इस परियोजना के एक और दानदाता हैं, ने कहा कि वह यहाँ के बच्चों की उच्च शिक्षा में भी मदद करने के लिए उत्सुक हैं। जब एक लड़की ने कहा कि वह ज़िला कलेक्टर बनना चाहती है तो सेठी ने उसकी कॉलेज की पढ़ाई पूरी होने तक उसका पूरा खर्च उठाने की स्वेच्छा से घोषणा की, राजकुमार ने बताया।

लेकिन उस दिन की असली सितारा थीं मल्लिगा, जिन्होंने माइक्रोफोन को इस तरह उठाया जैसे कोई अनुभवी वक्ता हों। चमकदार नीली साड़ी, उस पर मेल खाते कंगन और बालों में सजे चमकीले नारंगी फूलों के साथ, वह आत्मविश्वास से बोल रही थीं। उन्होंने पूरे दिल से सबका धन्यवाद किया और यह आश्वासन भी दिया कि गांववाले इस एक बार मिलने वाले सुनहरे अवसर का भरपूर उपयोग करेंगे और उज्ज्वल भविष्य के लिए मेहनत करेंगे।

ट्राइबल घरों में लोग अब रहने लगे हैं, लेकिन एक काम अभी बाकी है – घरों में बिजली कनेक्शन देना। अब तक इस छोटे से गांव में बिजली नहीं थी, लेकिन अब बिजली आपूर्ति शुरू हो गई है और केबल का सारा काम पूरा हो चुका है। ''मैंने यह सोचा था चूंकि ये लोग आदिवासी हैं तो उन्हें मुफ्त में बिजली कनेक्शन मिल जाएगा। लेकिन मुझे सिर्फ तीन दिन पहले ही पता चला कि भले ही हर घर को हर महीने 100 यूनिट बिजली मुफ्त मिलेगी

आज भी जब कोडाइकनाल में बारिश होती है, तो मुझे उस माँ की याद आ जाती है, जिसे अपनी झोपड़ी में लगातार बहते पानी के बीच, एक सूखी जगह पर तीन घंटे तक अपने सात महीने के बच्चे को गोद में लिए खड़े रहना पड़ा था।

राजकुमार रामन
रोटरी क्लब कोडाइकनाल

मगर प्रत्येक कनेक्शन के लिए उन्हें ₹5,600 खर्च करने होंगे। तो कुल मिलाकर मुझे ₹1.44 लाख की जरूरत है लेकिन पुडुचेरी के पूर्व मंडल गवर्नर (PDG) सेल्वनाथन और एक अन्य मित्र ने इस खर्च का बड़ा हिस्सा वहन करने का वादा किया है।''

आज भी, भले ही उनका सपना पूरा हो चुका है, लेकिन राजकुमार के मन में बार-बार उस महिला का ख्याल आता है, जो इस गांव की निवासी थी। तेज़ और लगातार हो रही बारिश के दौरान वह अपने सात महीने के बच्चे को गोद में लिए तीन घंटे तक एक ऐसे कोने में खड़ी रही जहाँ बारिश नहीं गिर रही थी। ''वह न तो अपनी झोपड़ी के अंदर बैठ सकती थी और न ही अपने बच्चे को वहाँ रख सकती थी क्योंकि झोपड़ी के अंदर से पानी बह रहा था। यह घटना कुछ साल पहले की है। जब मैंने यह कहानी सुनी तब से हर बार जब कोडाई में बारिश होती तो मैं केवल उसी मां के बारे में सोचता – जो अपने नन्हे बच्चे को बचाने के लिए एक कोने में खड़ी रही। आज यह सुकून देता है कि इस वलैगिरी गांव की कम से कम इन माताओं के पास अब एक पक्का घर है, जो उन्हें बारिश से सुरक्षित रख सकता है।''

चित्र: रशीदा भगत

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो से खास बातचीत

एटेल्का लेहोज़्की

नए रो ई अध्यक्ष ने रोटरी के अपने खास पलों, अध्यक्ष के रूप में अपने लक्ष्यों और जैतून के तेल व ओपेरा के प्रति अपने प्रेम के बारे में बात की

फ्रांसेस्को अरेज़ो अपने मंडल सम्मेलन में एक मित्र के साथ बैठे थे जब उन्हें एक फोन आया, जिसमें उन्हें कमरे से बाहर निकलकर रोटरी इंटरनेशनल बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के साथ एक जूम मीटिंग में शामिल होने के लिए कहा गया। कुछ मिनट बाद अरेज़ो को यह पता चला कि उन्हें 2025-26 के लिए रो ई अध्यक्ष के रूप में चुना गया है, वह इस पद तक पहुँचने वाले तीसरे इतालवी और दक्षिणी इटली से पहले व्यक्ति हैं, जिन्हें इस वैश्विक सदस्यता संगठन का नेतृत्व करने का अवसर प्राप्त हुआ। चूंकि यह खबर आधिकारिक रूप से घोषित नहीं की गई थी इसलिए वह इसे किसी से साझा नहीं कर सकते थे। लेकिन जल्द ही उन्होंने देखा कि उस कमरे में हर कोई अपना फोन निकालने लगा था।

जब रात लगभग 11 बजे यह खबर सोशल मीडिया पर आई, तो हम गाला डिनर के बीच में थे। आप कल्पना कर सकते हैं - 400 से भी अधिक रोटेरियन अपने-अपने फोन पर यह खबर देख रहे थे। यह एक बेहद यादगार क्षण था। अचानक सभी लोग मेरे पास आकर मुझे बधाई देने लगे और गले मिलने लगे। मैं बहुत भावुक हो गया, वह कहते हैं।

जून में बोर्ड द्वारा एक विशेष सत्र आयोजित कर फ्रांसेस्को अरेज़ो को रोटरी का अगला अध्यक्ष चुनने के एक सप्ताह बाद, वह कनाडा के कैलगरी शहर में रोटरी सम्मेलन में भाग लेने के लिए पहुंचे। वहाँ दुनिया भर से आए सदस्यों द्वारा उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। समापन सत्र के दौरान जब उन्हें औपचारिक रूप से सबके सामने प्रस्तुत किया गया तो हजारों उपस्थित लोगों ने उनके भाषण के दौरान बार-बार तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उनका अभिनंदन किया।

सिसिली के रागूसा रोटरी क्लब के सदस्य फ्रांसेस्को अरेज़ो पिछले तीन दशकों से भी अधिक समय से रोटरी से जुड़े हुए हैं। इस दौरान उन्होंने कई नेतृत्वकारी भूमिकाएं निभाई हैं, जिनमें संयुक्त रणनीतिक योजना समिति के उपाध्यक्ष, रो ई निदेशक और 2023 मेलबर्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन समिति के अध्यक्ष जैसे प्रमुख पद शामिल हैं। अपने पूरे रोटरी सफर के दौरान, उन्होंने ऐसे प्रयासों का समर्थन किया है जो रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के प्रभाव को मजबूत करते हैं और विभिन्न पीढ़ियों के बीच भागीदारी के अवसरों का विस्तार करते हैं। उन्होंने फोंदाज़ियोने रोटरी इटालिया के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया है - यह एक राष्ट्रीय पहल है जो इटली के नागरिकों के लिए रोटरी की वैश्विक मानवतावादी परियोजनाओं में सहयोग करना आसान बनाती है।

यह साक्षात्कार फ्रांसेस्को अरेज़ो के साथ कैलगरी में कई बातचीतों के दौरान किया गया - कभी ब्रेक के दौरान कॉरिडोर में, कभी रोटरी कार्यक्रम के रास्ते एक मिनीबस में और कभी सम्मेलन हॉल के अंदर एक अस्थायी कार्यालय में, जहाँ रोटरी सदस्य अक्सर उन्हें शुभकामनाएँ देने और गले मिलने आते थे। अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद, अरेज़ो ने *रोटरी* पत्रिका के साथ बातचीत के लिए समय निकाला। इस बातचीत में उन्होंने अपने जीवन, रोटरी यात्रा, संगठन के लिए अपनी योजनाओं और अपनी दो विशेष रुचियों - ओपेरा और जैतून के तेल - के बारे में खुलकर चर्चा की।

रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो

आपने कई वर्षों तक ऑर्थोडॉन्टिस्ट के रूप में काम किया है। क्या आपकी इस पेशेवर पृष्ठभूमि का रोटरी में एक प्रभावी सदस्य बनने में कोई योगदान हैं?

मैं पिछले 46 वर्षों से एक अनुभवी ऑर्थोडॉन्टिस्ट के रूप में कार्य कर रहा हूँ। मैं मुख्य रूप से युवाओं के साथ काम करता हूँ और उपचार शुरू करने से पहले मरीज़ को समझने की कोशिश करना बहुत महत्वपूर्ण है। आपको उनका सहयोग जीतना होगा। उनके साथ अच्छे संबंध बनाना मेरे काम के सबसे अच्छे पहलुओं में से एक है।

और अब आपके अपने पोते-पोतियाँ भी हैं, है ना?

मेरे दो प्यारे पोते-पोतियाँ हैं। बड़ा वाला तीन साल का है और उसका नाम मेरे नाम पर रखा गया है: फ्रांसेस्को। छोटी एक साल की है और उसका नाम मेरी पत्नी के नाम पर रखा गया है। तो हमारे पास अब एक और एना मारिया और एक और फ्रांसेस्को हैं।

आप तीन दशकों से अधिक समय से एक रोटेरियन हैं। क्या आपको याद है कि आप पहली बार रोटरी में क्यों शामिल होना चाहते थे?

शुरुआत में, रोटरी मेरे लिए सिर्फ एक ऐसा स्थान था जहाँ नए दोस्तों से मिलना होता था-ऐसे दोस्त जिनके विचार मुझसे अलग थे। लेकिन जब मैं क्लब अध्यक्ष बना तब जाकर मैंने वास्तव में रोटरी को समझा। अब जब मैं रोटेरियनों से बात करता हूँ तो मैं उन्हें कहता हूँ कि वे अपने शब्द बदलें। आप रोटरी में ऐसे नहीं जाते जैसे सिनेमा देखने जाते हैं, जहाँ आप बस बैठकर दूसरों को कुछ करते हुए देखते हैं। रोटरी कुछ करने की चीज़ है। इसमें सक्रिय रूप से भाग लेना पड़ता है। और तभी असली विकास शुरू होता है।

आपका रोटरी में किस तरह का विकास हुआ हैं?

जब मेरे क्लब ने पहली बार मुझे अध्यक्ष बनने का प्रस्ताव दिया तो मैं इसे स्वीकार नहीं करना चाहता था। मुझे हकलाने की समस्या थी इसलिए क्लब को संबोधित करने के विचार से ही मैं डर गया।

लेकिन अंततः वो अनुभव इतना बुरा नहीं था। फिर उन्होंने मुझे मंडल गवर्नर बनने के लिए आमंत्रित किया और एक बार फिर मैं झिझक रहा था। लेकिन उन्होंने मुझे फिर से मना लिया। अब, जब मैं सोचता हूँ कि मैं रोटरी इंटरनेशनल का अध्यक्ष बनने जा रहा हूँ और एक अन्य भाषा में मंच से भाषण दूँगा, तो मुझे एहसास होता है कि रोटरी ने मुझे कितनी गहराई और स्थायीत्व के साथ सकारात्मक रूप से बदल दिया है।

रोटरी अपने सदस्यों और संभावित सदस्यों तक इस प्रभाव की भावना को कैसे पहुँचा सकती है?

हमें क्लब अध्यक्षों के साथ अपने संवाद को बेहतर बनाना होगा क्योंकि वे सीधे तौर पर सदस्यों से जुड़ते हैं और सबसे अग्रिम पंक्ति में काम करते हैं। जबकि हम मंडल गवर्नरों को सदस्यता और नए क्लबों के महत्व के बारे में बहुत अच्छी तरह से प्रशिक्षित करते हैं फिर भी मंडल गवर्नर आमतौर पर एक क्लब अध्यक्ष के साथ साल में केवल दो या तीन बार ही बात करते हैं। ऐसे बहुत से क्लब अध्यक्ष हैं जिन्हें यह पता ही नहीं है कि हमारे सदस्यता लक्ष्य इतने महत्वपूर्ण क्यों हैं।

अपने अध्यक्षीय कार्यकाल के दौरान आपको किन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा?

मुझे पता है कि मैं बहुत देर से शुरुआत कर रहा हूँ। अगर मैं समस्याओं का अध्ययन करना और लक्ष्य

अध्यक्ष अरेज़ो और उनका परिवार एक तस्वीर के लिए पोज़ देते हुए। सामने की पंक्ति (बाएं से): अरेज़ो, जो अपने पोते फ्रांसेस्को को गोद में लिए हुए हैं; और उनकी पत्नी अन्ना मारिया, पोती अन्ना मारिया को गोद में लिए हुए। पीछे खड़े हुए (बाएं से): अरेज़ो की बेटी एलेना; उनके दामाद मैग्नस; और दूसरी बेटी राफाएला।

निर्धारित करना शुरू करता हूँ तो मैं बहुत कुछ नहीं कर सकता। रोटरी कोई स्कूटर नहीं है जो जल्दी से दिशा बदल सकें। यह एक बड़े क्रूज जहाज की तरह है: यदि आपको मुड़ना है तो आपको कई किलोमीटर पहले से तैयारी शुरू करनी पड़ती है। मुझे उम्मीद है कि मैं अध्यक्ष-निर्वाचित सांगकू यून के साथ बहुत करीबी से काम करूंगा। मुझे लगता है कि सांगकू और मैं एक ऐसी दो वर्षीय योजना बना सकते हैं जो वास्तव में प्रभावी होगी।

रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष अरेज़ो और उनकी पत्नी अन्ना मारिया, जून में कनाडा के कैलगरी में आयोजित रो ई कन्वेंशन में।

रोटरी में आपके इतने वर्षों में सबसे यादगार पल कौनसा है?

मेरे लिए एक बहुत ही भावुक पल तब आया जब मैं मंडल गवर्नर था और मैंने भूमध्य सागर के किनारे स्थित मंडलों - इटली, फ्रांस, स्पेन, उत्तरी अफ्रीका, ग्रीस, तुर्की - के लिए एक रोटरी यूथ लीडरशिप अवॉर्ड्स कार्यक्रम आयोजित किया। सबसे बड़ी चुनौती तुर्की और इटली के युवा प्रतिभागियों को एक साथ लाने की थी क्योंकि वे एक-दूसरे को काफी अलग समझते थे। पहला दिन तनावपूर्ण था; साफ था कि वे एक-दूसरे को पसंद नहीं करते। लेकिन कुछ दिनों बाद उन्हें पता चला कि उनकी पसंद और सपने एक जैसे हैं।

जब आखिरी दिन आया तो उन्होंने जॉन लेनन का ''इमेजिन'' गीत एक साथ गाया और एक नाटक प्रस्तुत किया जो उन्होंने अपने देशों के सांस्कृतिक मतभेदों पर लिखा था। यह मेरे लिए सबसे खूबसूरत अनुभवों में से एक था।

अपने पेशेवर जीवन में आपने दंत चिकित्सकों और जैतून के तेल उत्पादकों के व्यापार संगठनों का नेतृत्व किया है। इनमें से कौन सा समूह सर्वसम्मति से एकजुट करना सबसे मुश्किल होता है: दंत चिकित्सक, जैतून के तेल उत्पादक या शायद रोटरी सदस्य?

मेरे अनुभव से सबसे ज्यादा चुनौती जैतून के तेल उत्पादकों के साथ होती है। हर उत्पादक यह दृढ़ विश्वास करता है कि उसका जैतून का तेल दुनिया में सबसे बेहतरीन है। इसलिए वे आमतौर पर दूसरों के साथ ईमानदारी से सहयोग करना नहीं चाहते।

आप कब से जैतून का तेल बना रहे हैं?

मेरा परिवार एक सदी से भी अधिक समय से जैतून का तेल बनाता आ रहा है। मुझे लगता है कि मैं इस परंपरा का आखिरी सदस्य हूँ क्योंकि मेरी बेटियों को इस क्षेत्र में कोई दिलचस्पी नहीं है।

मुझे पता है कि आपको ओपेरा बहुत पसंद हैं। आपका पसंदीदा ओपेरा या संगीतकार कौन है?

मुझे एक संगीतकार बहुत पसंद है-विंचेंजो बेलिनी। वह सिसिली में पैदा हुए थे और बहुत ही कम उम्र में दुनिया को छोड़ गए। उन्होंने केवल कुछ ही ओपेरा किए लेकिन वे सभी बेहद उच्च गुणवत्ता वाले हैं। और ज़ाहिर है बहुत से अन्य महान संगीतकार भी हैं-पुचिनी, वर्डी, मोजार्ट। किसी एक को चुनना वास्तव में कठिन है।

अपने प्रेसिडेंशियल एड जॉन डी जियोर्जियो के साथ, जो रोटरी क्लब ऑफ माल्टा के सदस्य हैं।

©Rotary.org

Rotary PEOPLE OF ACTION

ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना

रशीदा भगत

रोटरी क्लब वर्धमान हेरिटेज, रो ई मंडल 3240 ने अपनी महिला अध्यक्ष, निर्मला रजक की अध्यक्षता में पिछले रोटरी वर्ष में महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता और आर्थिक सशक्तिकरण पर अनेक परियोजनाएं पूरी की।

हमारे कार्यों में सबसे प्रमुख परियोजना स्कूल और कॉलेज में पढ़ने वाली लड़कियों एवं युवतियों के बीच मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन को बढ़ावा देने और उसे सुलभ बनाने की है। ''इस रोटरी वर्ष 2024-25 की शुरुआत से ही हमने अपने समुदाय में ज़रूरतों का मूल्यांकन किया, लक्ष्य निर्धारित किए और एक कार्य योजना तैयार की जिसमें हमने बाधाओं, लागत, प्रभाव और इन परियोजनाओं के माध्यम से लड़कियों/महिलाओं के जीवन में संभावित स्थायी परिवर्तन लाने पर ध्यान केंद्रित किया,'' क्लब अध्यक्ष कहती है।

निर्मला स्वयं पश्चिम बंगाल के एक अर्ध-शहरी क्षेत्र में स्थित एक सरकारी सहायता प्राप्त कॉलेज (डॉ भूपेंद्र नाथ दत्ता स्मृति महाविद्यालय) में एक शिक्षिका के रूप में

रोटरी क्लब बर्धमान हेरिटेज द्वारा वितरित सैनिटरी नैपकिन्स के साथ छात्राएँ।

क्लब अध्यक्ष निर्मला राजक (दाईं ओर से चौथी) स्कूल में सैनिटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन की स्थापना के दौरान।

कार्यरत हैं, वह कहती हैं कि उन्होंने अपने कॉलेज में मासिक धर्म के दौरान छात्राओं द्वारा सैनिटरी नैपकिन के उपयोग के पैटर्न का अध्ययन किया था। हम अपने कॉलेज की लाइब्रेरी में सैनिटरी नैपकिन रखते थे और लड़कियां उन्हें ₹5 की मामूली राशि का भुगतान करके प्राप्त कर सकती थी। लेकिन शिक्षकों ने महसूस किया कि छात्राओं को यह व्यवस्था या तो असुविधाजनक लगी या वे संकोचवश इसका लाभ नहीं उठा पाती थी। चूंकि अन्य शैक्षणिक संस्थानों में भी यही स्थिति देखने को मिली इसलिए हमने सरकारी सहायता प्राप्त हाई स्कूलों और कॉलेजों को रो ई मंडल 3240 की संस्थान निधि द्वारा आंशिक रूप से वित्त पोषित 10 स्वचालित सैनिटरी नैपकिन वेंडिंग मशीनें दान करने का फैसला किया।

क्लब ने अंकुर और साथी नामक दो आरसीसीयों का भी गठन किया जिसकी सभी सदस्य महिलाएं हैं। हम मासिक धर्म स्वच्छता और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों और महिलाओं तक पहुंचने में उनकी सेवाओं का उपयोग करते हैं। इन महिलाओं ने विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों और गांवों में लड़कियों को लगभग 7,500 सैनिटरी नैपकिन वितरित करने में भी अहम भूमिका निभाई।

मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन (MHM) और सर्वाइकल कैंसर के खतरों के बारे में युद्ध स्तर पर जागरूकता फैलाने के अलावा क्लब ने MHM पर 10 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए और इसके साथ ही लड़कियों/महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम और प्रारंभिक पहचान की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए छह सेमिनार भी आयोजित किए गए। रोटरी मंडल की रोग निवारण एवं उपचार उप-समिति के सहयोग से कुछ मामलों में जांच और उपचार की सुविधा प्रदान करने के लिए ₹65,000 की लागत लगी का खर्च आया जिसमें से ₹30,000 क्लब ने स्वयं जुटाए।

इसके बाद क्लब ने दो सरकारी प्राइमरी स्कूलों में 'गुड टच, बैड टच' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किए ताकि इस क्षेत्र की बच्चियों को अच्छे और बुरे स्पर्श के बीच का अंतर समझाया जा सके क्योंकि वे इस फर्क से अनजान हैं और सरकारी स्कूलों में इस विषय पर ज्यादा कुछ नहीं सिखाया जाता। साउथ कलकत्ता लॉ कॉलेज में हाल ही में हुई बलात्कार की घटना के बाद हमें यह जागरूकता अभियान बेहद ज़रूरी लगा, निर्मला कहती है।

इसके अलावा कॉलेजों में सामाजिक न्याय और महिला सशक्तिकरण पर सेमिनार आयोजित किए गए। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने सभी महिला कॉलेजों में यौन उत्पीड़न की शिकायतों के लिए आंतरिक शिकायत समिति *(Internal Compliance Committee)* बनाना अनिवार्य कर दिया है, निर्मला कहती हैं कि

मैंने कोविड के समय में रोटरी और इस क्लब से जुड़ाव बनाया, और मुझे हमारे क्लब द्वारा किए जाने वाले सेवा प्रोजेक्ट्स बहुत पसंद हैं। मैं जानती हूँ कि इन कार्यक्रमों के पीछे का उद्देश्य सेवा करना और हमारे समुदाय पर सकारात्मक प्रभाव डालना है।

निर्मला राजक
अध्यक्ष
रोटरी क्लब बर्धमान हेरिटेज

कई कॉलेज इस बात को गंभीरता से नहीं लेते और अधिकांश लड़कियों को यह पता ही नहीं होता कि वे ऐसी कोई शिकायत कर सकती हैं। इसलिए हमारे कार्यक्रमों के माध्यम से लड़कियों को मौजूदा कानूनों और उन प्रक्रियाओं की जानकारी दी गई जिनके माध्यम से वे उत्पीड़न की स्थिति में शिकायत दर्ज कर सकती हैं।

जब उनसे पूछा गया कि महिलाओं से जुड़े मुद्दों पर आयोजित इन कार्यक्रमों में भाग लेने वाली लड़कियों में कितना उत्साह देखा गया और उन्होंने किस प्रकार के सवाल पूछे, तो इसपर निर्मला ने कहा, ये अंग्रेज़ी माध्यम के कॉलेज नहीं हैं और यहाँ की लड़कियाँ काफी संकोची और शर्मीली होती हैं इसलिए वे आमतौर पर सवाल नहीं पूछतीं। इसलिए इन कार्यक्रमों के प्रभाव का आँकलन करने के लिए क्लब ने प्रश्नावली तैयार की और उन कॉलेजों की छात्राओं के बीच वितरित की जहाँ ये कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। कुल 450 छात्राओं से प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई और अब उनके उत्तरों की विश्लेषण प्रक्रिया चल रही है।

क्लब अध्यक्ष ने आगे बताया कि हाल ही में क्लब ने एक सहशिक्षा वाले सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल में एक इंटरैक्ट क्लब की स्थापना की मगर इसमें केवल लड़कियों को ही इंटरैक्टर के रूप में चुना गया। हमने ऐसा इसलिए किया क्योंकि हम लड़कियों एवं महिलाओं के सशक्तिकरण पर काम करना जारी रखना चाहते हैं और इंटरेक्ट क्लब के माध्यम से अपने संदेशों को फैलाना चाहते हैं। अगर सदस्य सिर्फ लड़कियां हों तो यह ज़्यादा प्रभावी होता है क्योंकि इस क्षेत्र की लड़कियां लड़कों से संवाद करने में हिचकिचाती हैं।

क्लब अध्यक्ष निर्मला एक लाभार्थी को सैनिटरी नैपकिन का पैक सौंपती हुई।

रोटरी क्लब बर्धमान हेरिटेज के कुल 17 सदस्य हैं और इसमें केवल दो महिलाएं हैं; इससे पहले चार महिलाएं थी मगर दो महिलाओं ने रोटरी और क्लब को छोड़ दिया, क्योंकि कुछ परिवार दोहरी सदस्यता शुल्क और अन्य क्लब बकाया का भुगतान नहीं कर सकते। ऐसे मामलों में अक्सर महिलाएं पीछे हट जाती है!

लेकिन निर्मला, जो क्लब की दूसरी महिला अध्यक्ष हैं और महिलाओं के सशक्तिकरण से जुड़ी क्लब परियोजनाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं, रोटरी से जुड़ी रहेंगी क्योंकि मैं कोविड की अवधि में रोटरी और इस क्लब में शामिल हुई थी और मुझे अपने क्लब की सेवा परियोजनाएं बहुत पसंद है। मुझे पता है कि इन कार्यक्रमों के पीछे का उद्देश्य शिक्षा, बीमारी की रोकथाम और समाज में समान उपचार के माध्यम से महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाकर हमारे समुदाय में सकारात्मक प्रभाव लाना है, उन्होंने मुस्कराते हुए कहा। ■

Rotary
AIM HIGH
Lead25
ROTARY INDIA LEADERSHIP CONCLAVE
#AIMHIGH | #UNITEFORGOOD | #LEAD25
Chief Guest
Presidential Address
Guest of Honor
Thiru Udhayanidhi Stalin
Hon'ble Deputy Chief Minister of Tamil Nadu
Rtn Francesco Arezzo
Rotary International President 2025 - 26
Thiru Anbil Mahesh Poyyamozhi
Hon'ble Minister for School Education of Tamil Nadu
REGISTRATION FEES
Pre Lead for RI Officers & AKS Members ₹3999/-
Lead 25 for Rotarians ₹1999/-
Lead 25 for Rotaractors ₹999/-
**Including 2 Breakfasts, 2 Lunches & Grand Dinner
22nd Aug 2025 - PreLead - Hotel Feathers, Chennai | 23rd - 24th Aug 2025 - New Chennai Trade Center, Tamil Nadu
REGISTER SOON AT
www.lead25rilc.org
HIGHLIGHTS OF LEAD 25
An extraordinary opportunity to connect with Rotary Leaders from across the globe!
First-of-its-kind Leadership Conclave
Stellar lineup of Inspiring Speakers
10,000+ Rotarians, Rotaractors & Guest from Zones 4, 5, 6 & 7
Rtn AKS Er Muruganandam M (MMM)
Rotary International Director 2025-27
Convenor - Lead 25 RILC
Rtn AKS Flt Lt KP Nagesh
Rotary International Director 2025-27
Co-Convenor - Lead 25 RILC
PDG Rtn AKS Dr John Daniel
Chairman - Lead 25 RILC
PDG Rtn J Sridhar
Chairman - Pre-Lead 25
PDG Rtn AKS Muthupalaniappan
Chairman - House of Friendship
PDG Rtn I S A K Nazar
Chairman - Special Projects
PDG Rtn A Mani
Chairman - Special Projects
PDG Rtn Y Kumanan
Secretary - Lead 25 RILC
DG Rtn V Suresh
Host District Governor - 3231
DG Rtn D Devendran
Host District Governor - 3233
DG Rtn AKS Vinod Saraogi
Host District Governor - 3234
DG Rtn J Karthik
Host District Governor - 3000
Contact Details
Chairman - Lead 25 +91 92495 59999
Chairman - PreLead +91 97908 39030
Chairman - HOF +91 98410 72520
Secretary - Lead 25 +91 98947 53013
Rtn Afroze +91 75029 77555
Rtn Jaspreet Singh (Sonu) +91 98947 44499

शांति: बंदूकों की खामोशी नहीं बल्कि अंतरात्मा की जागृति

अधिक कदम

हम एक ऐसे समय में जी रहे है जहाँ हवाओं में युद्ध के खतरे मंडरा रहे है और फिर भी बमबारी के बीच की खामोशी को अक्सर शांति समझ लिया जाता है। सुर्खियाँ युद्धविराम की बात करती हैं मगर उपचार की नहीं। समझौते किए जाते हैं मगर दिल अब भी बिखरे हुए हैं। और इस सबके बीच एक प्रश्न तीव्रता से प्रतिध्वनित होता है: "एक ऐसी दुनिया में जहाँ अच्छाई और बुराई दोनों ही मानव की ही देन हैं वहाँ शांति-निर्माताओं की सच्ची भूमिका क्या है?"

रोटरी इंटरनेशनल लंबे समय से वैश्विक सेवा, नेतृत्व और शांति का प्रतीक रहा है। लेकिन आज, हमारा मिशन इससे भी गहरा होना चाहिए। शांति को केवल हिंसा की अनुपस्थिति से परिभाषित नहीं किया जा सकता है - इसे *मानव विवेक की जागृति* के रूप में समझा जाना चाहिए, उस करुणा को चुनने की जागरूक कोशिश के रूप में, जो एक क्रूरता में सक्षम दुनिया में भी संभव है। यह अंधकार को मिटाने की बात नहीं है बल्कि उसे प्रकाश के साथ समाहित करने की प्रक्रिया है।

ऐसे परिदृश्य में रोटरी की विरासत केवल सेवा तक सीमित नहीं है, यह एक नैतिक प्रतिबद्धता है। शरणार्थी शिविरों में स्कूलों को प्रायोजित करने से लेकर विश्वविद्यालयों में शांति विद्वानों को बुलाने तक, शांति और संघर्ष समाधान के प्रति रोटरी की प्रतिबद्धता ने हर महाद्वीप को छुआ है। लेकिन रोटरी के शांति प्रयासों को जो विशेष बनाता है वो केवल उनका विस्तार नहीं बल्कि उनकी भावना है। रोटेरियन प्रशंसा के लिए काम नहीं करते हैं। वे न्याय, सत्य और गरिमा के साथ एकात्मता के लिए कार्य करते हैं। वे

अधिक कदम कश्मीर के एक स्कूल में बच्चों के साथ।

यह दिखावा नहीं करते कि दुनिया परिपूर्ण है। वे उसकी अपूर्णताओं के बावजूद सक्रिय रहते हैं।

एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसने लगभग तीन दशकों तक कश्मीर में संघर्ष की अग्रिम पंक्तियों पर काम किया है, मैंने ऐसे भयावह क्षण देखे हैं जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता – और उस उपचार को भी देखा है जो फिर भी अपना रास्ता खोज लेता है। मैंने युद्ध के मलबे में पले-बढ़े बच्चों को प्रेम, शिक्षा और आशा का चयन करते देखा है। यही वे शांत क्रांतियाँ हैं जिन्हें रोटरी को लगातार पोषित करना चाहिए।

मौन की चादर में शांति का भ्रम

बहुत से लोग मानते हैं कि जब बंदूकें खामोश हो जाती हैं, तो शांति आ जाती है। लेकिन खामोशी भी कई बार दमनकारी हो सकती है। उस पीड़ा की खामोशी जो कभी सुनी ही नहीं गई। उस आघात की खामोशी जो अब तक ठीक नहीं हुआ। उन पीड़ितों की खामोशी जिन्हें भुला दिया गया।

कश्मीर के बच्चों के साथ एक उत्सव कार्यक्रम में कदम।

सच्ची शांति मौन नहीं होती। वह जीवित होती है। वह निम्न के माध्यम से साँस लेती है:

- पुनर्निर्मित स्कूलों में फिर से पढ़ते बच्चों की आवाज़ें से।
- रोटरी-प्रायोजित मोबाइल मेडिकल यूनिट्स (MMUs) में संघर्ष-क्षेत्र के घावों का इलाज करते डॉक्टरों के हाथों से।
- उन महिलाओं के साहस से जो पीढ़ियों से चले आ रहे डर को तोड़कर कुछ नया गढ़ती हैं।

रोटरी के मिशन को अब इस स्पष्टता के साथ विकसित होना चाहिए: हम यहाँ केवल युद्धों को समाप्त करने के लिए नहीं हैं। हम यहाँ मानवता को ऊपर उठाने के लिए हैं।

शांति की यात्रा में कभी-कभी सबसे बड़ी ताकत स्थिरता में निहित होती है। संयम में। उस चुनाव में, जब आप नुकसान पहुँचा सकते हैं-फिर भी नहीं पहुँचाते।

ज़रा सोचिए: जब हाथियों को एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक हवाई मार्ग से ले जाया जाता है, तो उनके क्रेट्स में नाजुक चूज़ों को भी रखा जाता है-साथ देने के लिए नहीं, बल्कि उनके स्वभाव की परीक्षा के लिए।

और वह शक्तिशाली हाथी क्या करता है?

वह पूरी तरह से स्थिर रहता है।

पूरी उड़ान के दौरान हाथी - अपने विशाल कद के बावजूद - जोर देकर एक भी कदम हिलाता नहीं क्योंकि उसे डर होता है कि कहीं वह अनजाने में किसी चूजे को चोट न पहुंचा दे। वह इस अंतरात्मा की परीक्षा में बड़ी शांति एवं गरिमापूर्ण व्यवहार से पास होता है। डर से नहीं, बल्कि प्रेम से।

वैज्ञानिकों ने पाया है कि हाथियों के पास भी मनुष्यों की तरह दुर्लभ स्पिंडल कोशिकाएं होती हैं - ये न्यूरॉन्स आत्म-जागरूकता, सहानुभूति और

शांति की यात्रा में कभी-कभी सबसे बड़ी ताकत होती है स्थिरता में। संयम में। उस चुनाव में कि आप चाहें तो नुकसान पहुँचा सकते हैं, लेकिन फिर भी नहीं पहुँचाते।

शांति को केवल हिंसा की अनुपस्थिति से नहीं परिभाषित किया जा सकता – इसे मानवीय अंतरात्मा के जागरण के रूप में समझना होगा, एक ऐसा जानबूझकर किया गया चयन, जिसमें हम क्रूरता में सक्षम दुनिया में करुणा को चुनते हैं।

जटिल सामाजिक समझ से जुड़े होते हैं।

वे केवल शारीरिक रूप से विशाल ही नहीं बल्कि भावनात्मक रूप से भी महत्त्वपूर्ण प्राणी हैं।

लियोनार्डो दा विंची ने एक बार कहा था कि हाथी धर्म, विनम्रता और संतुलन के साथ जीता है। वह खुद को शुद्ध करने के लिए स्नान करता है, कभी भी झुंड के सामने संभोग नहीं करता है, कभी अकेला नहीं चलता और जब मृत्यु करीब आती है तो वह समूह को छोड़कर अकेले मरने चला जाता है - बाकी बचे हुए लोगों के प्रति करुणा के चलते।

इससे हमें क्या सीखने को मिलता है?

शांति निष्क्रिय नहीं होती। यह आंतरिक स्पष्टता और कोमल शक्ति का एक सक्रिय कार्य है। यह अराजकता से भरी दुनिया में मजबूती से खड़ा होना है ताकि अधिक कमजोर लोगों को कोई नुकसान न पहुंचे। यह वर्चस्व के बजाय संयम का चयन करना है। प्रदर्शन के बजाय गरिमा को चुनना और बल प्रयोग के बजाय संतुलन को।

यदि हम, रोटेरियन और वैश्विक नागरिक के रूप में अपने बोझ को भी उसी गरिमा के साथ उठाना सीख जाएँ- तो शायद शांति की यात्रा भी उस हाथी की उड़ान की तरह संतुलित बनी रह सकती है।

संघर्ष मानवता के लिए अजनबी नहीं है - यह एक दर्पण है। यह हमें दिखाता है कि हम अभी भी विभाजित हैं, न केवल राष्ट्रों के रूप में बल्कि आत्माओं के रूप में भी।

जैसा कि मेरे गुरु ने एक बार मुझसे कहा था: हिंसा भी मानव विकास की प्रक्रिया में अपनी एक भूमिका रखती है। लेकिन सच्चा मार्ग इसे नकार कर मिटाने का नहीं बल्कि इसे समझ कर पार करना है।

विश्व शांति के लिए रोटरी का कार्य कोई काल्पनिक स्वप्न नहीं है। यह वास्तविकता का साहसी सामना है। यह हमें यह स्वीकार करने के लिए कहता है:

- अच्छे और बुरे दोनों इंसान ही हैं।
- कि गरिमा के बिना कोई भी शांति स्थायी नहीं होती।
- वास्तविक परिवर्तन तभी संभव है जब हम अपनी पूर्णता को अपनाएं।

वैश्विक संकट के समय में रोटरी की भूमिका

जब दुनिया यूरोप से लेकर मध्य पूर्व तक, एशिया की नाज़ुक सीमाओं से लेकर अफ्रीका के भूले-बिसरे युद्धों तक, बहु-क्षेत्रीय संघर्ष के किनारे पर खड़ी है-ऐसे समय में रोटरी एक मौन दर्शक नहीं रह सकती। उसे एक नैतिक दिशा-दर्शक बनना होगा।

यहाँ देखिए कैसे:

- साहसपूर्वक बोलें, निडरता से कार्य करें: रोटरी को एक वैश्विक आवाज बनना होगा जो केवल युद्धविराम की नहीं बल्कि संस्कृतियों, विचारधाराओं और इतिहास के गहरे सामंजस्य का आग्रह करे।
- भीतर से निर्माण: शांति निर्माण की शुरुआत व्यक्तिगत रूपांतरण से होनी चाहिए। युवा फैलोशिप्स, शांति छात्रवृत्तियाँ और नेतृत्व कार्यक्रमों में सहानुभूति, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और अंतरधार्मिक समझ को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- एक नई कहानी सुनाएं: युद्ध के रंगमंच से घिरी इस दुनिया में रोटरी को नई कहानियाँ सुनानी होंगी-करुणा की,

पुनर्वास की और लोग कैसे ठीक होते हैं, उसकी। आइए हम शांति की जीत को उतने ही जोश से प्रकाशित करें जितना हम युद्ध के मैदान की खबरें प्रकाशित करते हैं।

- सिर्फ मदद नहीं, उपचार करें: ऐसे कार्यक्रमों का समर्थन करें जो मानसिक स्वास्थ्य, आघात-सूचित देखभाल और सामुदायिक लचीलापन को एकीकृत करें-विशेषकर युद्ध प्रभावित बच्चों के लिए।
- संवाद से दूरियाँ मिटाएं: हर उस क्षेत्र में जहाँ ध्रुवीकरण बढ़ रहा है, रोटरी को सम्मानजनक संवाद के लिए स्थान तैयार करने चाहिए। शांति अक्सर सुनकर ही आती है।
- आध्यात्मिक ज्ञान और व्यावहारिक नीति का आयोजन करें: आध्यात्मिक नेताओं, पारंपरिक ज्ञान संरक्षकों और आधुनिक राजनयिकों को समस्या-समाधान के एक साझा मंच पर आमंत्रित करें। जब हृदय नेतृत्व करता है, तो मस्तिष्क उसका अनुसरण करता है।

कश्मीर: मेरे अनुभव की जीवंत गाथा

संघर्ष-ग्रस्त कश्मीर में हम जिन फोस्टर होम्स का संचालन करते हैं, वहाँ मैंने इस सच्चाई को देखा है: शांति दी नहीं जाती-स्थापित की जाती है।

रोटरी ने हमें उन जगहों पर शिक्षा, आश्रय और उपचार प्रदान करने में मदद की जहाँ कभी बच्चे गोलियों की गूंज के बीच सोते थे। ये लड़कियाँ- जिनमें से बहुत-सी हिंसा की वजह से अनाथ हो गयी थीं-अब खुद नर्स, शिक्षिका और शांति-निर्माता बन रही हैं।

वह रोटेरियन क्रांति है: शोर में नहीं बल्कि शांत परिवर्तन में।

शांति: सम्पूर्णता का मार्ग

शांति कोई परिपूर्णता नहीं है। यह सहभागिता है - जीवन में, सत्य में और सभी के लिए गरिमा में।

रोटेरियन होने के नाते, हम यहाँ यह तय करने के लिए नहीं हैं कि कौन सही है और कौन गलत। हम यहाँ उस स्थान को संभालने के लिए हैं जहाँ पीड़ा भी है और संभावना भी। हम यहाँ पुल बनने के लिए हैं-न्यायाधीश नहीं; एक शरणस्थल बनने के लिए ही-तलवार नहीं।

हमें इस प्रतीक्षा में नहीं रहना चाहिए कि दुनिया शांत हो तभी हम बोलें। हमें स्वयं तूफ़ान के बीच की शांति बनना चाहिए। हमें शांति को युद्ध के अंत के रूप में नहीं देखना चाहिए बल्कि शांति को जागृति की शुरुआत के रूप में अपनाना चाहिए।

क्योंकि अंततः शांति का अर्थ केवल बंदूकें शांत कर देना नहीं है। यह मानवता की अंतरात्मा को जगाने और दुनिया को यह याद दिलाने के बारे में है कि हम सभी अब भी पूर्ण होने की यात्रा में हैं।

लेखक के बारे में

अधिक कदम बॉर्डरलेस वर्ल्ड फाउंडेशन के संस्थापक हैं, जो पिछले 27 वर्षों से जम्मू और कश्मीर के संघर्ष-ग्रस्त क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर काम कर रहे हैं। अनाथालय देखभाल, मोबाइल चिकित्सा सेवाओं और शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से उनका कार्य इस बात को प्रदर्शित करता है कि शांति गरिमा से शुरू होती है। वह रोटरी के साथ घनिष्ठ रूप से सहयोग करते हैं और मानते हैं कि दुनिया को ठीक करने की प्रक्रिया मानव आत्मा को जागृत करने से शुरू होती है।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

डॉक्टरी दिल, रोटरी धड़कन

जयश्री

रोटरेक्ट क्लब ऑफ मेडीक्रू की स्थापना वर्ष 2020 में रोटरी क्लब ऑफ बॉम्बे पियर, रो ई मंडल 3141 द्वारा की गई थी। अपने नाम के अनुरूप, इस क्लब में भारत, अमेरिका, इंग्लैंड, स्विट्ज़रलैंड, ऑस्ट्रेलिया, नेपाल, पाकिस्तान, बेल्जियम, यूएई और कनाडा सहित 10 देशों के कुल 6,102 मेडिकल छात्र रोटरेक्टर्स शामिल हैं। क्लब की पूर्व अध्यक्ष और के जे सोमैया मेडिकल कॉलेज, मुंबई में एमबीबीएस की अंतिम वर्ष की छात्रा सलोनी शाह कहती हैं, मुंबई में क्लब की शुरुआत के बाद से, हम रो ई मंडल 3141 का हिस्सा रहे हैं। वह अपने पहले वर्ष में ही क्लब में शामिल हो गईं और आज भी इसके मिशन के प्रति समर्पित हैं।

भारत के 37 शहरों और दुनिया भर के 50 शहरों में सदस्यों के साथ, इस क्लब ने तेज़ी से विकास किया है - कुछ साल पहले 3,000 सदस्यों से शुरू होकर, इसकी सदस्य संख्या अब दोगुनी हो चुकी है। वह कहती हैं, हालांकि महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण भारत में हमारा आधार हमेशा से मज़बूत रहा है, इस साल गुड़गांव, दिल्ली, फ़रीदाबाद और पूर्वी भारत से भी सदस्यों की संख्या में वृद्धि देखने को मिल रही है।

पिछले पाँच वर्षों में, इन रोटरेक्टर्स ने कई प्रभावशाली सेवा पहलों का नेतृत्व किया है। केवल 2024-25 में ही उन्होंने पूरे भारत में 479 कार्यक्रम आयोजित किए: सलोनी मुस्कुराते हुए कहती हैं, यह एक मील का पत्थर उपलब्धि है। उनके प्रमुख कार्यक्रमों में से एक वार्षिक वेबिनार है, जो चिकित्सा क्षेत्र में करियर बनाने के इच्छुक 1,000 से अधिक हाई स्कूल के छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान करता है। वह बताती हैं, उनमें से कई डॉक्टर बनने का सपना देखते हैं, लेकिन विकल्पों और रास्ते को लेकर अनिश्चित होते हैं। ये सत्र विभिन्न चिकित्सा पाठ्यक्रमों, संस्थानों और प्रत्येक क्षेत्र से जुड़ी अपेक्षाओं के बारे में स्पष्ट जानकारी प्रदान करते हैं।

प्रत्येक रोटरेक्टर अपने स्थानीय समुदाय की ज़रूरतों के आधार पर सेवा परियोजनाओं में योगदान देता है, और दुनिया भर में क्रियान्वित सेवा परियोजनाओं की जियोटैग की गई तस्वीरें क्लब की वेबसाइट पर अपलोड की जाती हैं। परियोजनाओं की योजना बनाना और उन्हें अनुमोदित करना क्लब की कोर कमेटी और निर्वाचित निदेशक मंडल की ज़िम्मेदारी होती है। एक समर्पित मानव संसाधन विकास उपसमिति, जिसमें प्रत्येक देश के 1-2 राज्य निदेशक और क्षेत्रीय अंतर्राष्ट्रीय राजदूत होते हैं, गतिविधियों और सदस्यों के परिचय का समन्वय करती है। सलोनी बताती हैं, हम व्यक्तिगत नेटवर्क और इंस्टाग्राम के माध्यम से एमबैसेडर की भर्ती करते हैं। चुने जाने के बाद, वे परिचय का प्रबंधन करते हैं - चाहे वह ऑफ़लाइन हो या ऑनलाइन। ओरिएंटेशन कार्यक्रम नए सदस्यों को क्लब की पिछली परियोजनाओं, नेटवर्किंग के अवसरों और आगामी योजनाओं से परिचित कराते हैं, जो सामुदायिक सेवा और व्यक्तिगत विकास दोनों पर केंद्रित होते हैं।

मेडिकल छात्रों के एक क्लब के रूप में, स्वास्थ्य संबंधी परियोजनाएँ उनकी सेवा का एक अभिन्न हिस्सा हैं। ऐसी ही एक पहल, *डायबअवेयर* ने स्थानीय सहयोगियों के साथ मिलकर देश भर में मधुमेह और रक्तचाप जाँच शिविर आयोजित किए। प्रतिभागियों को तत्काल रीडिंग, व्यक्तिगत स्वास्थ्य सलाह और अनुवर्ती रेफरल प्राप्त हुए। पुणे की रहने वाली क्लब अध्यक्ष जेसिका गुप्ते कहती हैं, सिर्फ़ निदान तक सीमित नहीं रहना था, हमारा लक्ष्य स्वास्थ्य जागरूकता फैलाना और जटिलताओं को रोकने में मदद करना था। मुंबई में, बॉम्बे पियर, मुंबई और डाउनटाउन सीलैंड के रोटरी क्लबों ने इस प्रयास में भागीदारी की।

रोटरेक्टर्स एक वृद्धाश्रम में बुज़ुर्ग महिला की ब्लड शुगर जांच करते हुए।

चेन्नई में क्लब द्वारा आयोजित डेंटल कैंप में एक छात्र को दांतों की साफ-सफाई के बारे में सलाह देते हुए रोटरेक्टर्स।

रोटरेक्टर्स बच्चों के बीच एनीमिया के बारे में जागरूकता फैलाते हुए।

एक अन्य महत्वपूर्ण परियोजना, *रक्त की शक्ति* ने मुंबई के स्कूलों और वंचित समुदायों में जागरूकता और जाँच शिविरों के माध्यम से आयरन की कमी से होने वाले एनीमिया पर ध्यान केंद्रित किया। गैर-सरकारी संगठनों भूमि और युवाह के साथ साझेदारी में आयोजित इन शिविरों में प्रतिभागियों को लक्षणों, आयरन युक्त आहार और कृमि संक्रमण जैसे कारणों के बारे में शिक्षित किया गया। विशेष रूप से किशोरियों और उच्च जोखिम वाली महिलाओं को आयरन की खुराकें वितरित की गईं।

स्माइल ट्रेन इंडिया के सहयोग से, अखिल भारतीय स्तर पर दंत चिकित्सा जाँच अभियान, *लिफ्ट द लिप* का उद्देश्य बच्चों में दंत समस्याओं का समाधान और क्लेफ्ट की स्थिति का शीघ्र पता लगाना था। मुंबई, पुणे, दिल्ली, बेंगलुरु और चेन्नई में आयोजित इस सप्ताह भर चलने वाले अभियान में दंत और मैक्सिलोफेशियल सर्जन, ऑर्थोडॉन्टिस्ट और 50 स्वयंसेवक शामिल हुए। इस दौरान 200 से ज़्यादा बच्चों की जाँच की गई, जिनमें से कई को मुफ़्त क्लेफ्ट सर्जरी और अनुवर्ती

एक वालंटियर स्कूल शिक्षकों को बाल यौन शोषण के बारे में जानकारी देती हुई।

रोटरेक्ट क्लब मेडिक्रू के रोटरेक्टर्स बच्चों को स्कूली सामग्री वितरित करने के बाद।

देखभाल के लिए रेफर किया गया। परिवारों को सर्जरी के बाद मिलने वाली सहायता के बारे में भी परामर्श दिया गया, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि उचित हस्तक्षेप से क्लेफ्ट एक उपचार योग्य स्थिति है।

बाल यौन शोषण के संवेदनशील मुद्दे से निपटने के लिए, क्लब ने *शील्डिंग इनोसेंस* नामक एक परियोजना शुरू की, जिसका उद्देश्य कमज़ोर बच्चों की सुरक्षा करना है। स्वयंसेवकों को बाल मनोविज्ञान और कानूनी प्रोटोकॉल का प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें उन्होंने सौम्य और खुले प्रश्नों का उपयोग करना और रिपोर्टिंग प्रक्रियाओं को समझना सीखा। उन्होंने सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श पर सत्र आयोजित किए और बड़े बच्चों को उनके कानूनी अधिकारों और उपलब्ध सहायता तंत्रों के बारे में शिक्षित किया।

प्रोजेक्ट शिक्षा के माध्यम से, क्लब ने अनाथ बच्चों की शिक्षा में सहयोग के लिए स्कूल की सामग्री दान की और करियर काउंसलिंग का आयोजन किया। कॉलेज कैंटीनों में रखे गए दान-पेटियों के माध्यम से छात्रों को नकद या वस्तु के रूप में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया गया। अकेले इस वर्ष, देश भर के 35 अनाथालयों के 1,600 बच्चों को इस कार्यक्रम से लाभ मिला।

एक अन्य शैक्षणिक पहल, *फ़ाउंडेशन फ़ॉर फ़्यूचर,* 6-14 वर्ष की आयु के वंचित बच्चों के लिए गणित, विज्ञान और भाषा की बुनियादी शिक्षा पर केंद्रित है। चाइल्ड राइट्स एंड यू और रॉबिनहुड आर्मी के सहयोग से संचालित इस पहल के तहत सप्ताहांत की कक्षाओं में शैक्षणिक अवधारणाओं को खेल-खेल में सीखने के साथ मिश्रित किया गया। जेसिका कहती हैं, पारंपरिक व्याख्यानों के बजाय, हमने आनंददायक जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित किया।

चाहे बुनियादी अंकगणितीय संक्रियाएँ सिखाने के लिए मैथ रिले हो, शब्दावली के लिए 'हैंगमैन' खेल हो, हिंदी को मज़बूत करने के लिए कविता पाठ हो, या आसपास के विज्ञान समझने के लिए एक साधारण प्रकृति भ्रमण हो, सीखने को और अधिक रोचक बनाने के लिए नए-नए तरीके अपनाए गए। विज्ञान और अंग्रेजी की प्रश्नोत्तरी ने टीमों को सक्रिय बनाए रखा, जबकि कैडबरी चॉकलेट का उपयोग भिन्न और दशमलव सिखाने के लिए किया गया। लेडीबर्ड कहानी-पुस्तकों का उपयोग करके भूमिका-नाटकों के माध्यम से पढ़ने की प्रवाहशीलता का आकलन किया गया, और कहानी-कथन मंडलियों ने प्रतिभागियों को पंचतंत्र की कहानियों को अपने शब्दों में दोहराने के लिए आमंत्रित किया। सत्रों में सांस्कृतिक शिक्षा पर भी ज़ोर दिया गया, जिसमें त्योहार-आधारित गतिविधियाँ और प्रतियोगिताएँ अपनेपन की भावना और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देती थीं।

सलोनी ने बताया कि आगामी अध्यक्ष राधारानी, जो स्वयं मुंबई से हैं, इस पहल को अगले वर्ष (2025-26) तक जारी रखने तथा कुछ और सार्थक सेवा परियोजनाएं जोड़ने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। ■

रोटरी क्लब केजीएफ ने 70 वर्ष पूरे किए

टीम रोटरी न्यूज़

डीजी सतीश माधवन, रो ई मंडल 3191 ने हाल ही में इस क्लब के अपने आधिकारिक दौरे के दौरान कोलार गोल्ड फील्ड्स में अपने प्रारंभिक जीवन की मधुर स्मृतियों को और रोटरी क्लब कोलार गोल्ड फील्ड्स के साथ अपने पुराने जुड़ाव को याद किया, जिसने मई में 70 वर्ष पूरे कर लिए हैं।

जब भी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर इस क्लब में आते थे, तो वे केजीएफ क्लब में एक भोज पार्टी का आयोजन करते थे, जो एक शानदार ब्रिटिश-युग की इमारत थी। क्लब के सदस्य वी आर प्रसाद कहते हैं, उस समय सभी रोटेरियन काले पतलून और सफेद कोट पहनकर आते थे। यह विशिष्ट ब्रिटिश राज शैली में होता था। भोजन में सात या आठ कोर्स का मेनू होता है, जिसकी शुरुआत भारत के राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री के लिए टोस्ट से होती है, फिर रो ई अध्यक्ष के लिए, और अंत में आने वाले रोटरी गवर्नर के लिए। ये व्यवस्थाएँ देखने लायक होती थीं। बैंगलोर के आने वाले सदस्यों ने हमारी व्यवस्थित तैयारी की बहुत प्रशंसा की।

क्लब की एक और विशेषता यह है कि इसके सभी सदस्य हर मंगलवार को शाम 7 बजे होने वाली साप्ताहिक बैठक के लिए पहले से ही शाम 6.30 बजे केजीएफ क्लब पहुँच जाते थे। प्रसाद कहते हैं, ''बैठक हमेशा समय पर शुरू होती है और शाम 7.30 बजे समाप्त हो जाती है, सिवाय इसके कि जब बैंगलोर, मद्रास या अन्य जगहों से कोई अतिथि वक्ता आता है।'' अपने शानदार सफर में, क्लब ने कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भाषण देते देखा है, जिनमें डॉ टी एम ए पई, सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश के एस हेगड़े, तत्कालीन मद्रास के एक प्रसिद्ध व्यक्ति ए पी एस अयंगर, पूर्व केंद्रीय मंत्री टी ए पई, बॉम्बे से साहित्यकार सोफिया वाडिया, *इलस्ट्रेटेड वीकली* के पूर्व संपादक एम वी कामथ, कर्नाटक उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश निट्टूर श्रीनिवास और कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बी डी जट्टी शामिल हैं।

इसकी उल्लेखनीय परियोजनाओं में, लक्ष्मी सागर गांव में एक प्राथमिक विद्यालय का निर्माण, 1966 में केजीएफ के सामान्य अस्पताल में टीबी रोगियों के लिए दो वार्डों का निर्माण, तथा इसके रजत जयंती वर्ष की पूर्व संध्या पर पशु चिकित्सालय में पशुओं के लिए एक बचाव आश्रय का निर्माण शामिल हैं, जो इसकी सामुदायिक पहलों की विविधता और व्यापकता का प्रमाण हैं।

1994 में, डॉ अल्बर्ट एली और उनकी अमेरिका से आई टीम के सहयोग से एक मेगा आईओएल (इंट्राओकुलर लेंस) सर्जरी शिविर आयोजित किया गया था। क्लब के एक सदस्य बताते हैं, हमने पिछले कुछ वर्षों में कई गांवों में पीने का पानी उपलब्ध कराया है; और ग्रामीण स्कूलों को फर्नीचर और किताबें दान की हैं। कर्नाटक कैंसर सोसाइटी के साथ मिलकर कैंसर जांच शिविर ने 1977 में इसकी सार्वजनिक छवि को बढ़ावा दिया; और क्लब ने रोटरी क्लब कोलार, मुलबागल सेंट्रल और बंगारपेट के सहयोग से 1993 और 2015 में दो बार आईसीजीएफ - इंटरनेशनल कन्वेंशन ऑफ ग्लोबल फ्रेटरनिटी की मेजबानी भी की। वृक्षारोपण अभियान, रक्तदान शिविर, RYLA, कैंसर जांच शिविर तथा स्कूलों और कॉलेजों में प्रश्नोत्तरी और वाद-विवाद जैसी चल रही परियोजनाओं ने केजीएफ के लोगों के बीच क्लब की मजबूत पहचान बनाई है।

जब 1955 में क्लब को रोटरी क्लब बैंगलोर द्वारा प्रायोजित किया गया था, तब इसके 40 चार्टर सदस्य थे, जिनमें अंग्रेज, सोने की खदानों के शीर्ष अधिकारी और केजीएफ, कोलार तथा कुप्पम तालुकों के प्रमुख नागरिक शामिल थे। प्रसाद कहते हैं, हमने दशकों से कई रोटेरियनों को मंडल स्तर पर सेवा करने के लिए भेजा हैं, और हम साल भर चलने वाले कार्यक्रमों के साथ इस मील के पत्थर का जश्न मनाएंगे। अपने संदेश में, नए डीजी श्रीधर बी आर ने कहा, आपकी 70 साल की यात्रा प्रेरक कहानियों से भरी हुई है। ये प्रयास हमेशा सुर्खियाँ नहीं बनाते, लेकिन इन्होंने कई लोगों के जीवन में बड़ा बदलाव लाया है। ■

वह स्थान जहाँ प्रसिद्ध केजीएफ क्लब साप्ताहिक रूप से मिलता है।

कैलगरी सम्मेलन के यादगार लम्हें

एटेल्का लेहॉकजी

कनाडा के कैलगरी में आयोजित 2025 रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन सौहार्द और नवऊर्जा की भावना के साथ संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम के आम सत्र समापन को संबोधित करते हुए रो ई अध्यक्ष स्टेफनी उर्चिक ने सदस्यों से अपने आपसी संबंधों की शक्ति को पहचानने का आग्रह किया।

रोटरी की सबसे बड़ी ताकत हमेशा आप – हमारे सदस्य – ही रहे हैं। लेकिन हम उतने ही मजबूत हैं जितना कि हमारे साथ खड़े लोग, उन्होंने कहा। हम लक्ष्यों और रणनीति के बारे में बहुत बात करते हैं। लेकिन अगर मित्रता न हो, प्रोत्साहन न हो, तो यह सब व्यर्थ है। रोटरी की सफलता हमारे कार्यों से जुड़ी है। यह हमारा समुदाय है और यह मायने रखता है।

इस सत्र में रोटरी के भावी नेताओं को भी शामिल किया गया। अध्यक्ष-निर्वाचित फ्रांसेस्को अरेज़ो ने 2025-26 के अध्यक्षीय संदेश, *यूनाइट फॉर गुड* के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। ''इसका अर्थ है सभी सदस्यों को शामिल करना, लेकिन केवल सदस्यों को ही नहीं बल्कि हमारी सेवा में इसका मतलब है कि भागीदार संगठनों को शामिल करना... स्थानीय प्रशासन, अन्य स्वयंसेवी संगठन। संक्षेप में, इसका अर्थ है महमारी पहुँच को विस्तारित करना,'' मअरेज़ो ने कहा। ''आइए हम मिलकर एक ऐसा सपना देखें जो हमें एकजुट करें, हमें उत्साहित करें और दुनिया के साथ-साथ हमारे जीवन को भी परिवर्तित करें।''

उन्होंने कहा कि पहले वह क्लब अध्यक्ष और मंडल गवर्नर जैसे पद नहीं स्वीकारना चाहते थे क्योंकि उन्हें हकलाने की समस्या थी, लेकिन रोटरी सदस्यों के जबरदस्त समर्थन ने उन्हें प्रेरित किया और उन्होंने न सिर्फ यह भूमिकाएं निभाई बल्कि बाद में रो ई निदेशक के रूप में सेवा दी और अब अध्यक्ष-निर्वाचित है। ''मुझे पूरा विश्वास है कि आप वही समर्थन और स्नेह देंगे जो मुझे हमेशा रोटरी में मिला है,'' उन्होंने कहा।

सम्मेलन में शामिल प्रतिभागियों ने अपने प्रभाव को अधिकतम करने के लिए विभिन्न तरीकों की खोज की। एक ब्रेकआउट सत्र, *द अमेजिंग पीस रेस* में इस बात पर चर्चा हुई कि क्लब अपनी परियोजनाओं में सकारात्मक शांति के आठ स्तंभों को कैसे शामिल कर सकते हैं। *लिटरेसी अलाइव* सत्र ने बेलीज में बच्चों में पढ़ने के प्रारंभिक कौशल को विकसित करने की एक पहल की सफलता पर ध्यान केंद्रित किया।

रोटरी एक्शन ग्रुप अगेंस्ट स्लेवरी द्वारा एक विशेष रूप से भीड़ भरे सत्र की मेजबानी की गई, जो दुनिया भर में मानव तस्करी को रोकने हेतु कार्य करता है। सप्ताह की शुरुआत में इस एक्शन ग्रुप ने कैलगरी शहर के बीचों-बीच एक स्थायी शांति स्तंभ का अनावरण किया। इस ब्रेकआउट सत्र में कनाडा के गैर-लाभकारी संगठन *वनचाइल्ड* की संस्थापक और अध्यक्ष चेरिल परेरा ने भाग लिया जिन्हें 2025 नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था। उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने किशोरावस्था में ही बाल तस्करी से लड़ने का रास्ता खोजा और श्रीलंका

एक ब्रेकआउट सत्र द *अमेज़िंग पीस रेस* में यह जानने की कोशिश की गई कि क्लब अपने प्रोजेक्ट्स में पॉज़िटिव पीस के आठ स्तंभों को कैसे शामिल कर सकते हैं। सत्र *लिटरेसी अलाइव* में बेलीज़ में बच्चों की प्रारंभिक पढ़ाई की क्षमताओं को विकसित करने की एक पहल की सफलता पर चर्चा हुई।

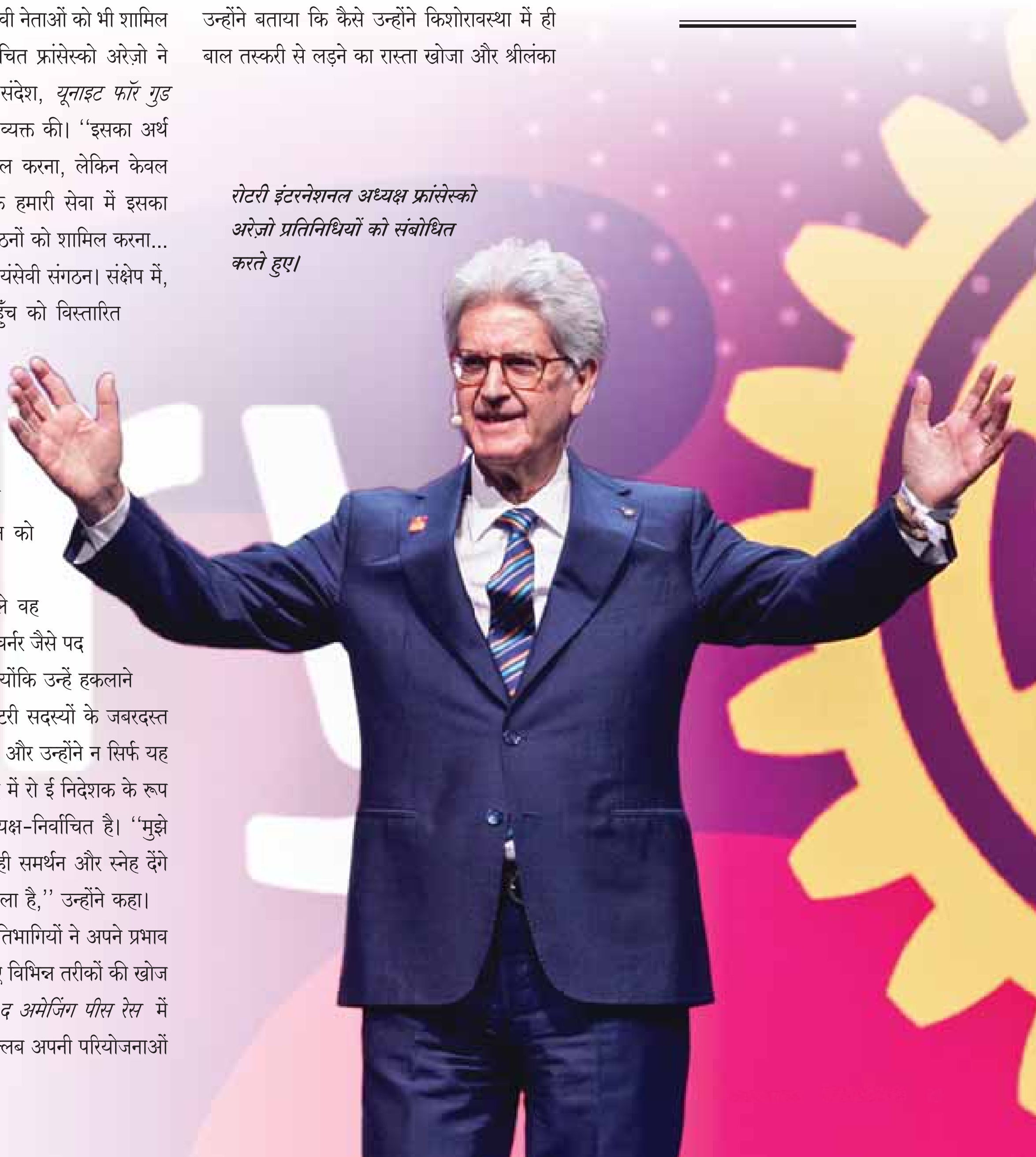

रोटरी इंटरनेशनल अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए।

में एक सरकारी स्टिंग ऑपरेशन के लिए प्रलोभनकारी व्यक्ति के रूप में काम किया। ''मैं बाल यौन व्यापार को अंदर से समझना चाहती थी। मैंने उस सरकारी विभाग से संपर्क किया जो बच्चों की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार था और मैंने पूछा कि क्या कोई तरीका है जिससे मैं यह अंडरकवर ऑपरेशन देख सकती हूँ। उन्होंने कहा, 'हाँ, वास्तव में आप एक प्रलोभनकारी व्यक्ति की भूमिका निभा सकती हैं।'''

परेरा ने एक अपराधी को पकड़ने और उसे गिरफ्तार करवाने में मदद की। इस अनुभव ने उनके इस मुद्दे के प्रति समर्पण को और मजबूत बना दिया और इसी के परिणामस्वरूप उन्होंने *वनचाइल्ड* नामक संस्था की स्थापना की जो बच्चों और किशोरों को बाल तस्करी के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए संगठित करती है।

हाउस ऑफ फ्रेंडशिप प्रदर्शनी हॉल में रोटरी मंडल 5360 (अल्बर्टा और सस्केचेवान, कनाडा के कुछ हिस्सों) द्वारा प्रायोजित 20 फुट लंबी टिपी (पारंपरिक आदिवासी तंबू) को न देखना असंभव था। इस टिपी को अनेक शैक्षिक उपकरणों से सुसज्जित किया गया था ताकि आगंतुकों को आदिवासी समुदायों की चिंताओं के बारे में जानकारी दी जा सके।

''हमें बहुत गर्व है कि हमारे मंडल ने इस प्रदर्शनी को प्रायोजित किया है और हम चाहते है कि यह सिलसिला जारी रहें,'' कैम स्टीवर्ट ने कहा जो 2023 के रोटरी पीपल ऑफ एक्शन सम्मान के प्राप्तकर्ता है। ''हम दुनिया भर के रोटेरियनों की उनकी स्वदेशी

बाएं से घड़ी की दिशा में: *रोटरी इंटरनेशनल के महासचिव जॉन ह्यूको, ट्रस्टी चेयर होल्गर नेक, वानती, सुसान, मार्गा और पूर्व रो ई अध्यक्ष के आर रविंद्रन।*

रो ई अध्यक्ष अरेज़ो, भारत ज़ोन के निदेशक एम मुरुगानंदम सहित अन्य निदेशकों के साथ।

ऊपर: रोटरी इंटरनेशनल अध्यक्ष अरेज़ो, पूर्व रोटरी अध्यक्षों और उनकी पत्नियों के साथ।

बाएं: बाएं से (बैठे हुए): PRIPs कल्याण बेनर्जी, रविंद्रन और वानती, प्रतिनिधियों के साथ एक ब्रेकआउट सत्र में।

नीचे: बाएं से: रोटरी इंटरनेशनल अध्यक्ष अरेज़ो, पूर्व अध्यक्ष अर्चिक, पूर्व टीआरएफ ट्रस्टी चेयर मार्क मलोनी और चेयर होल्गर नेक, प्रतिनिधियों के साथ।

आबादी के साथ अधिक काम करने में मदद करना चाहते हैं।

जैसे ही सम्मेलन का समापन करीब आया, 2025 कैलगरी कन्वेंशन कमेटी के अध्यक्ष ब्रायन स्टाइल्स ने इस आयोजन की सफलता पर प्रकाश डाला। ''सभी व्यक्तियों ने मुझसे यही कहा कि उन्हें यह स्थल बहुत पसंद आया। यह इमारत बहुत सुंदर है – गर्मजोशी से भरी और स्वागत योग्य। और लोग कैलगरी से प्यार करते हैं। मुझे बहुत ही शानदार प्रतिक्रियाएं मिली है।''

कई प्रतिभागी अभी से आगामी सम्मेलनों को लेकर उत्साहित थे। 2026 के ताइपे कन्वेंशन कमेटी के अध्यक्ष, एंड्रियास वॉन मोलर ने पूरे उत्साह के साथ प्रतिभागियों को ताइपे, ताइवान में आयोजित होने वाले रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन 2026 के लिए आमंत्रित किया।

''ताइवान के 34,000 रोटरी सदस्य आपको हमारी संस्कृति को जानने और शानदार ग्रामीण इलाकों, नेशनल थिएटर और सुंदर मंदिरों का अनुभव करने के लिए आमंत्रित करते है। 2026 का अधिवेशन आपको जीवन भर साथ रहने वाला अनुभव प्रदान करेगा।''

©Rotary.org

MEGA DOCTORS DAY AWARDS - 1

Rotary Doctors Day Awardees.

AKS. RTN. VINOD SARAOGI
District Governor 2025-26
RID 3234

Dr. H. V. Hande
FORMER HEALTH MINISTER
"ROTARY POLIO CHAMPION AWARD"

Dr.Prathap C. Reddy
FOUNDER-CHAIRMAN, APOLLO HOSPITALS
"DOYEN OF MODERN HEALTH CARE
IN INDIA AWARD"

D
LIVE
"LIFET

Dr. K. R. Balakrishnan
HEART & LUNGS TRANSPLANT SURGEON
"LIFETIME ACHIEVEMENT AWARD"

Dr. Devi Shetty
FOUNDER & CHAIRMAN NARAYANA HEALTH
"LIFETIME ACHIEVEMENT AWARD"

FOUNDER
"LIFET

Dr C Mayilvahanan Natarajan
BONE TUMOUR SURGEON
"LIFETIME ACHIEVEMENT AWARD"

Dr. V. S. Natarajan
RENOWNED GERIATRIC PHYS
LIFETIME ACHIEVEMENT AW

ST JULY 2025 BY RI DISTRCT 3234

.

Dr. Mohamed Rela
ER TRANSPLANT SURGEON
TIME ACHIEVEMENT AWARD"

Dr. C. Palanivelu
R - CHAIRMAN, GEM HOSPITALS
TIME ACHIEVEMENT AWARD"

n
SICIAN
ARD

Institutional Excellence Award for Exceptional Service.

Madras Medical College
185 years in Academic Excellence Founded in 1835.
Beacon of Academic Excellence, Clinical Leadership.

Stanley Medical College
Iconic Institution Founded in 1938.
1500 bed vibrant Clinical Training Ground.

Sankara Nethralaya
Pioneering Contribution to Eye Care in India.

Kanchi Kamakoti Childs Trust Hospital
Latest Technology Medical Care for Children & Women.

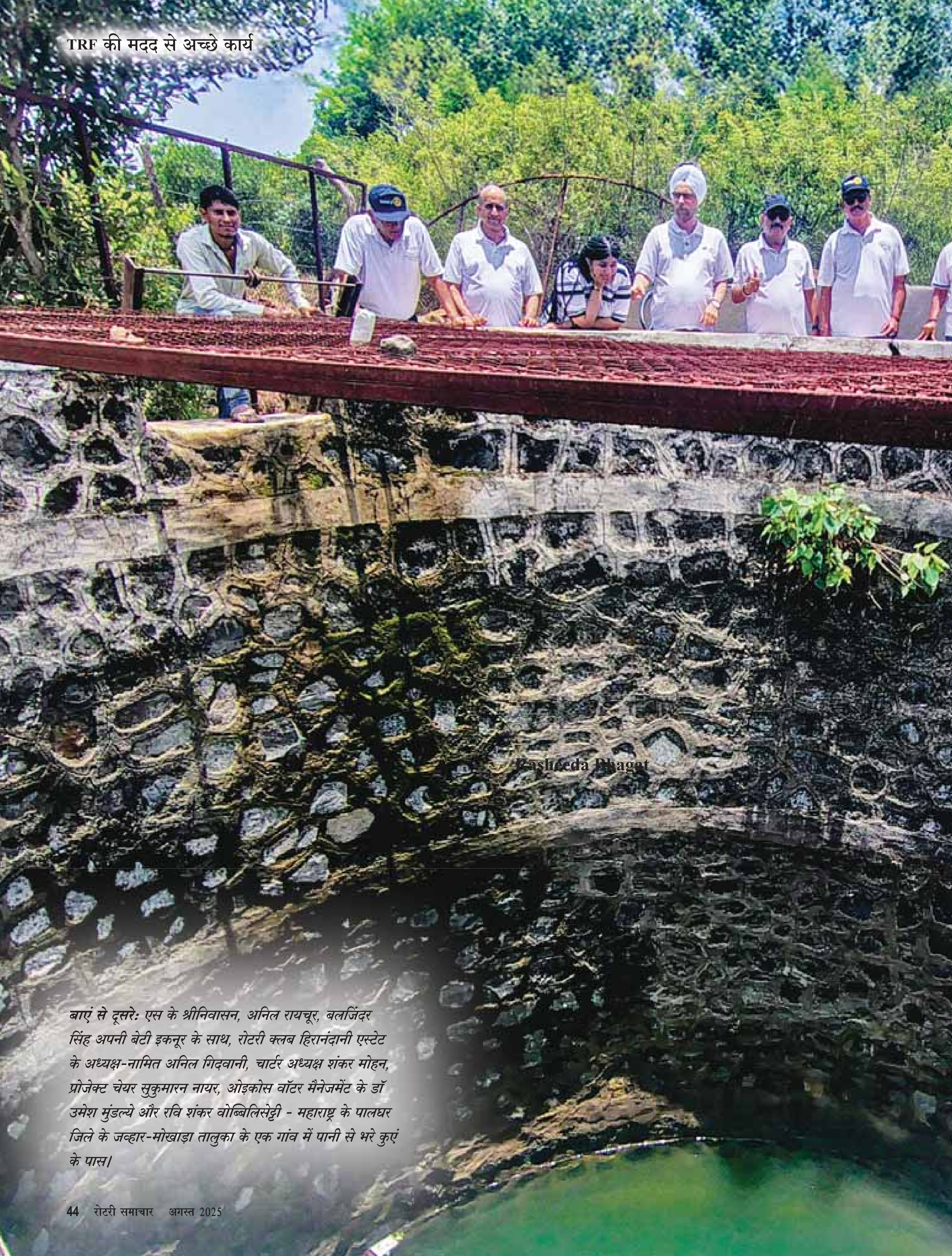

Rasheeda Bhagat

बाएं से दूसरे: एस के श्रीनिवासन, अनिल रायचूर, बलजिंदर सिंह अपनी बेटी इकनूर के साथ, रोटरी क्लब हिरानंदानी एस्टेट के अध्यक्ष-नामित अनिल गिदवानी, चार्टर अध्यक्ष शंकर मोहन, प्रोजेक्ट चेयर सुकुमारन नायर, ओइकोस वॉटर मैनेजमेंट के डॉ उमेश मुंडल्ये और रवि शंकर वोब्बिलिसेट्टी - महाराष्ट्र के पालघर जिले के जव्हार-मोखाड़ा तालुका के एक गांव में पानी से भरे कुएं के पास।

महाराष्ट्र के सूखाग्रस्त गांवों को मिला नया जीवन

रशीदा भगत

रोटरी क्लब हीरानंदानी एस्टेट, रो ई मंडल 3142 के सदस्यों ने महाराष्ट्र के ठाणे से बमुश्किल 200 किमी दूर कुछ घंटों की ड्राइव पर जवाहर-मोखड़ा की पहाड़ियों में पानी की कमी से जूझ रहे लगभग 3,000 ग्रामीणों के चेहरे पर मुस्कान ला दी है। फरवरी-मई के सामान्य रूप से सूखे महीनों के दौरान भी इन गांव के कुओं में पर्याप्त पानी होने की वजह से इन ग्रामीणों में सबसे अधिक खुश महिलाएं हैं क्योंकि अब उन्हें बर्तनों में पानी भरकर लाने के लिए इन पहाड़ी इलाकों की 1-1.5 किमी की पैदल यात्रा नहीं करनी पड़ती और अब किसानों के पास अपनी फसलों के लिए पर्याप्त पानी है।

यह सब करीब चार साल पहले शुरू हुआ जब रोटरी क्लब के एक सक्रिय सदस्य सुकुमारन नायर, जो ग्रामीणों के लिए शौचालय निर्माण और अन्य सामुदायिक कल्याण कार्यों में हमेशा आगे रहते थे, महाराष्ट्र के आंतरिक गांवों में गए। ''उस समय मैंने देखा कि कुछ रोटरी क्लबों और अन्य संगठनों द्वारा अनेक चेक डैम बनाए गए थे। पहाड़ी इलाका होने की वजह से यहाँ बारिश अच्छी होती है मगर इसके बावजूद भी फरवरी से मई के बीच भारी सूखा पड़ता है क्योंकि मानसून के दौरान गिरने वाला पानी बह जाता था। हमने देखा कि चेक डैम अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर पा रहे थे क्योंकि बारिश का पानी संचित नहीं हो पा रहा था और गांव के कुएं पूरी तरह सूख जाया करते थे।''

सबसे दुखद बात यह थी कि सूखे की इस स्थिति के दौरान महिलाओं को लंबी दूरी पैदल तय करके घर की दैनिक जरूरतों के लिए पानी

लाना पड़ता था। इससे भी अधिक दुखद तथ्य यह था कि इस कठिन काम में कुछ मदद पाने के लिए छोटी बच्चियों को स्कूलों से निकाल लिया जाता था और उनकी ऊर्जा का उपयोग पानी लाने में किया जाता था। ''हर समय हम कहते हैं लड़की पढ़ाओ लेकिन यहाँ उल्टा हो रहा था और वह भी ऐसी समस्या के लिए जिसका समाधान संभव था,'' वह आगे कहते हैं।

वह अपने क्लब के सदस्यों साथ इन गांवों के लिए कोई जल-संवर्धन या संरक्षण परियोजना करना चाहते थे मगर उन्होंने सोचा कि और अधिक चेक डैम बनाने से कोई विशेष लाभ नहीं होगा। ''हमें यह भी महसूस हुआ कि पहले की परियोजनाओं में जब गांव वालों से कोई योगदान नहीं लिया गया था तो उन्हें रोटेरियनों एवं अन्य द्वारा स्थापित की गई इन सुविधाओं के प्रति कोई अपनापन या जिम्मेदारी का भाव महसूस नहीं हुआ था। इसलिए हमने तय किया कि अब हम जो भी काम करेंगे उसमें गांव वालों को किसी न किसी रूप में शामिल ज़रूर करेंगे,'' नायर कहते है।

एक स्थायी और अभिनव समाधान प्राप्त करने के लिए बहुत विचार-मंथन एवं चर्चा करने के साथ ही जल प्रबंधन और संरक्षण में तकनीकी विशेषज्ञ डॉ उमेश मुंडे से सलाह मशविरा करने के बाद प्रगति प्रतिष्ठा नामक एक गैर सरकारी संगठन के साथ साझेदारी में क्लब ने सतही बांधों का निर्माण करके समाधान खोजने का निर्णय लिया, जो सतह के नीचे के भूजल को संचित करते है और इस प्रकार साल भर पानी की उपलब्धता सुनिश्चित होती है।

क्लब ने तत्कालीन भावी अध्यक्ष सुकुमारन नायर और उनके पूर्ववर्ती रवि शंकर वोबिलिसेट्टी के नेतृत्व में इस परियोजना को शुरू करने के लिए एक वैश्विक अनुदान लेने का निर्णय लिया। पहला वैश्विक अनुदान 51,600 डॉलर का था जिसमें अंतर्राष्ट्रीय साझेदार के रूप में रोटरी क्लब ऑफ साउथ फोर्सिथ काउंटी, यूएस, रो ई मंडल 6910 ने सहयोग किया। डॉ मुंडे के मार्गदर्शन में प्रगति प्रतिष्ठा द्वारा स्थानीय स्तर पर इस परियोजना का क्रियान्वयन किया गया। इस परियोजना में एकेएस सदस्य और क्लब के पूर्व अध्यक्ष डी पी त्रिपाठी द्वारा 4 लाख का योगदान दिया गया।

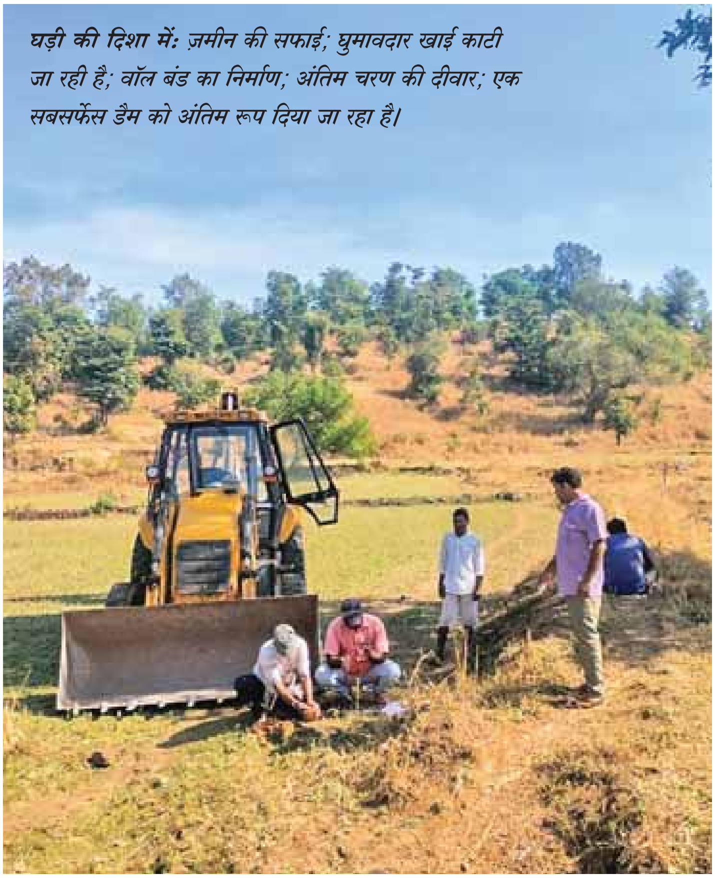

घड़ी की दिशा में: ज़मीन की सफाई; घुमावदार खाई काटी जा रही है; वॉल बंड का निर्माण; अंतिम चरण की दीवार; एक सबसर्फेस डैम को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

इसके बाद जल्द ही रोटरी क्लब ऑफ ग्रेपवाइन, यूएस (रो ई मंडल 5790) और ब्लॉसम चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से 31,422 डॉलर का एक और वैश्विक अनुदान प्राप्त हुआ। इस बार पूर्व अध्यक्ष वोबिलिसेट्टी ने ₹1 लाख का दान दिया। ''दोनों परियोजनाओं को समय पर पूर्ण किया गया जिसमें तकनीकी विशेषज्ञता और स्थानीय सहयोग का बेहतरीन समन्वय था और अब हम कुल 12 भूमिगत बांध बना चुके है जिनसे लगभग 3,000 ग्रामीण लाभान्वित हुए है। हमें सबसे ज्यादा खुशी इस बात की है कि अब इन गाँवों की बच्चियाँ वापस स्कूल जाने लगी हैं और गांव की महिलाओं का लंबी दूरी तय करके पानी लाने में जो कीमती चार घंटे खोटी होते थे वो बच गए,'' नायर कहते है। इसके साथ ही अब यहाँ के किसान जो अपनी फसलों (मुख्य रूप से मक्का और विभिन्न प्रकार की सब्जियों) के लिए पर्याप्त पानी हेतु तरसते थे अब पर्याप्त पानी की उपलब्धता से खुश हैं।

2024 में पूर्ण हुई इस परियोजना का एक तात्कालिक लाभ यह रहा कि - हालांकि जल विशेषज्ञ द्वारा रोटेरियनों को तत्काल परिणाम की उम्मीद न रखने और एक साल तक इंतजार करने की सलाह दी गई थी ताकि उपसतही बांध गांव के कुओं का धीरे-धीरे पुनः भरण कर सकें परंतु उसी वर्ष गांव के कुएं पानी से लबालब भर गए।

उपसतही बांधों के अनेक फायदों के बारे में बताते हुए नायर कहते हैं कि ''चेक बांधों के विपरीत, उपसतही बांधों का निर्माण जमीन के नीचे किया जाता है, जो मौसमी जल धाराओं से बहने वाले जल को संग्रहीत करके जलभृतों को का पुनः भरण करते हैं। इसके लाभों में शून्य वाष्पीकरण हानि, स्वच्छ, परजीवी मुक्त जल की उपलब्धता और कोई रखरखाव, विस्थापन या पारिस्थितिक क्षति शामिल नहीं है। ये विशेष रूप से जवाहर-मोखाडा जैसे पहाड़ी इलाकों में स्थायी, दीर्घकालिक जल सुरक्षा प्रदान करने के लिए कुओं के प्राकृतिक पुनर्भरण का कारण बन सकते हैं।''

प्रत्येक उपसतही बांध की निर्माण लागत बांध की लंबाई के आधार पर ₹4 से ₹14 लाख के बीच होती है, इन बांधों की औसतन लंबाई 9 से 12 मीटर के बीच होती है, हालांकि कुछ बांध इससे अधिक लंबे होते हैं। बांध के लिए खोदी गई खाई की गहराई चट्टानी परत की उपस्थिति पर निर्भर करती है जैसे ही यह परत मिल जाती है खुदाई रोक दी जाती है और पानी को रोकने के लिए वहाँ एक दीवार का निर्माण किया जाता है।

रोटेरियन इस बात से बहुत खुश है कि अब तक इस प्रकार बनाए गए सभी 12 बांध आस पास के कुओं को रिचार्ज करने में सक्षम रहे है। जब उनसे पूछा गया कि क्या लाभार्थियों के घरों तक नल के माध्यम से पानी पहुंचाने की योजना है, तो नायर कहते है, ''यह अगला कदम है, जिस पर हम गंभीरता से विचार कर रहे हैं। हमारा दीर्घकालिक लक्ष्य इस क्षेत्र में लगभग 140 उपसतही बांध बनाना है। इसके बाद हमारी सौर ऊर्जा की मदद से पाइपलाइन बिछाकर पानी को सीधे ग्रामीणों के घरों तक पहुँचाने की योजना हैं।

(बाएं से पाँचवे): रायचूर, डॉ मुंडल्ये, बलजिंदर सिंह, श्रीनिवासन, मोहन, प्रोजेक्ट चेयर नायर, वोब्बिलिसेट्टी और गिदवानी - पालघर जिले के वसिंद गांव में सबसर्फेस डैम के उद्घाटन के दौरान।

मई जैसे सूखे मौसम में भी नल से जल उपलब्ध।

एक गांव में पहले से ही पाइपलाइन तो थी मगर साल भर उसमें पानी नहीं आता था; पर अब आता है।''

वह आगे कहते हैं कि डीजीई नीलेश जयवंत (2026-27) इस बात को लेकर उत्सुक हैं कि मंडल के छोटे क्लबों को भी बड़ी परियोजनाओं में शामिल किया जाना चाहिए ताकि जब एक बार उन्हें अंतर्राष्ट्रीय भागीदार मिल जाता है, ''तो हम इस उद्देश्य के लिए एक और वैश्विक अनुदान करने की योजना बना रहे हैं,'' वह आगे कहते हैं।

इस बीच, वह खुश हैं कि ''यह वैश्विक अनुदान परियोजना स्थानीय स्तर पर जबरदस्त प्रभाव डालने में सफल रही। पहले लोगों को एक दिन में 11 लीटर पानी से गुज़ारा करना पड़ता था पर अब उन्हें 55 लीटर पानी मिल रहा है, जो एक सम्मानजनक एवं स्वस्थ जीवन जीने के लिए पर्याप्त है।'' एक स्थानीय किसान ने बड़ी मुस्कान के साथ मुझसे कहा: 'इस पानी ने हमें नया जीवनदान दिया है, इसने न केवल हमारे खेतों में बल्कि हमारे सपनों में भी जान डाल दी है।'

उन्होंने इस परियोजना को समर्थन देने के लिए आईपीडीजी मिलिंद कुलकर्णी को धन्यवाद दिया।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रो ई मंडल 3131 ने सी एस आर पुरस्कार प्रदान किए

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 3131 नेताओं की उपस्थिति में आयोजित एक शानदार कार्यक्रम में, रोटरी के फोकस क्षेत्रों में रोटरी क्लबों के साथ साझेदारी करते हुए, 29 कंपनियों को उनकी सी एस आर परियोजनाओं के लिए सम्मानित किया गया।

80 से ज़्यादा कंपनियों ने ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया के ज़रिए नामांकन जमा किए थे। सी एस आर पुरस्कारों में कंपनी के आकार के आधार पर चार श्रेणियां थीं, जैसे कि लघु, मध्यम, बड़े और मेगा उद्यम, इसके अलावा, सी एस आर परियोजनाओं को क्रियान्वित करने वाली कंपनियों के लिए एक विशेष श्रेणी भी थी, हालांकि यह उनके लिए अनिवार्य नहीं था। यहां तक कि जिन कंपनियों ने नामांकन जमा नहीं किया था, लेकिन अपनी सी एस आर परियोजनाओं में रोटरी के साथ साझेदारी कर रही थीं, उन्हें भी प्रशंसा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। सभी पुरस्कार और प्रमाण पत्र वाइस एडमिरल गुरचरण सिंह, कमांडेंट, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, पुणे जो कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे, द्वारा प्रदान किए गए।

100 कॉर्पोरेट अधिकारियों सहित 300 आमंत्रितों की सभा को संबोधित करते हुए वाइस एडमिरल सिंह ने कहा, ''सच्चा नेतृत्व सेवा में निहित है। राष्ट्र निर्माण में कॉर्पोरेट जगत की एक शक्तिशाली भूमिका है, और उनके प्रयासों को मान्यता देने के लिए रोटरी की पहल सराहनीय है।'' उन्होंने आगे कहा, किसी राष्ट्र की ताकत केवल उसके सशस्त्र बलों में ही नहीं होती, ''बल्कि उसके लोगों और संस्थानों द्वारा दिखाई गई करुणा और जिम्मेदारी में भी होती है। सी एस आर पुरस्कार जैसे कार्यक्रम सेवा की भावना को उजागर करते हैं, जो हम सभी को एक साथ बांधती है।''

लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) डी बी शेकटकर, राज्य के पूर्व प्रधान सचिव महेश जगाडे, माहेर की संस्थापक सिस्टर लूसी कुरियन, ललित कला जगत की हस्ती मोहन आगाशे, अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी अंजलि भागवत, अर्न्स्ट एंड यंग के निदेशक अरविंद सेठी और उनके सहयोगी प्रसाद गिरि की जूरी पैनल ने पुरस्कार विजेताओं का चयन करने के लिए शॉर्टलिस्ट की गई कंपनियों की जांच की।

अपने संबोधन में डीजी शीतल शाह ने कहा कि सी एस आर पुरस्कार सतत और समावेशी विकास के लिए ''साझा प्रतिबद्धताफ को दर्शाते हैं। रोटरी को ऐसी प्रभावशाली भागीदारी को सुविधाजनक बनाने पर गर्व है।'' डीआरएफसी शैलेश पालेकर ने सहयोग के पारस्परिक लाभों पर प्रकाश डालते हुए, ''कॉरपोरेट्स और रोटरी क्लबों के बीच दीर्घकालिक साझेदारी के मूल्य पर जोर दिया। इसका मतलब है कि जब उद्यम अपने सी एस आर लक्ष्यों को पूरा करते हैं, तो वे रोटरी सेवा परियोजनाओं में भी सार्थक योगदान देते हैं।''

रोटरी सी एस आर अवार्ड्स के संयोजक रवि कपूर ने कहा कि नामांकन में दिखाई गई ''गहराई, नवीनता और सामाजिक प्रतिबद्धता उल्लेखनीय थी, क्योंकि सी एस आर परियोजनाएं कॉर्पोरेट्स के दायित्व से विकसित होकर वास्तविक सामाजिक प्रभाव में बदल गई हैं।'' रो ई मंडल 3131 के सभी सात रोटरी क्लबों ने पुणे में रोटरी सी एस आर अवार्ड्स के तीसरे संस्करण की सह-मेजबानी की। ■

पुणे में रोटरी सीएसआर अवॉर्ड प्राप्तकर्ताओं के साथ पीछे की पंक्ति में (दाएं से सातवें) डिस्ट्रिक्ट गवर्नर शीतल शाह, पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर पंकज शाह और मंजू फडके।

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी क्लब तिनसुकिया के कृत्रिम अंग शिविर

जयश्री

रोटरी क्लब तिनसुकिया, रो ई मंडल 3240 के तत्काल पूर्व अध्यक्ष नीरज अग्रवाल ने बताया, जब हमने नौ वर्षीय अनुपम को साइकिल चलाते देखा, तो उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था, और जब आरव ने हमारे एक सदस्य द्वारा फेंकी गई गेंद को मारा, तो हमारा दिल खुशी और संतुष्टि से भर गया, और हमारी आंखों से आंसू छलक आए।

अनुपम और आरव उन 30 लाभार्थियों में शामिल थे, जिन्हें अगस्त में असम के तिनसुकिया में क्लब द्वारा आयोजित एक विशेष शिविर के दौरान एलएन-4 कृत्रिम हाथ लगाए गए। रोटरी क्लब कोलकाता प्रेसीडेंसी, रो ई मंडल 3291, ने इस क्लब के साथ साझेदारी की। अनुपम ने चार साल की उम्र में एक दुर्घटना में अपना दाहिना हाथ खो दिया था; जबकि आरव जन्म से ही अंग-विकृति के साथ पैदा हुआ था। उन्होंने कहा, लाभार्थियों में वे छोटे बच्चे

यह शिविर नौ वर्षीय जीवंत बच्ची रश्मि पहाड़िया के लिए एक बदलाव का मोड़ बन गया, जो एक अग्निकांड में अपनी दाहिनी भुजा के गंभीर रूप से जल जाने और बिगड़ जाने के बाद इससे उबर रही है।

शिविर के दौरान एलएन-4 कृत्रिम हाथ प्राप्त एक बालक के साथ सहायक गवर्नर शैलेश सरमाह।

शामिल थे, जो अब आत्मविश्वास के साथ स्कूल जा सकते हैं, और वे युवा, जो रोज़गार या व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए बेहतर ढंग से सक्षम हैं।

यह शिविर नौ साल की जिंदादिल बच्ची रश्मि पहाड़िया के लिए भी एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, जो जलने की गंभीर घटना में जीवित बची थी। लगभग पांच साल पहले, घर में लगी आग की एक दुर्घटना में वह बुरी तरह से जल गई थी; उसका दाहिना हाथ उसकी ऊपरी बांह से जुड़ गया था और उंगलियां आपस में चिपक गई थीं। अग्रवाल ने कहा, उसकी मां उसे एलएन-4 कृत्रिम हाथ लगवाने की उम्मीद से शिविर में लेकर आई थी। लेकिन शिविर में मौजूद डॉक्टरों ने प्लास्टिक सर्जरी की सलाह दी। हमने तुरंत डिब्रूगढ़ में उसके इलाज का खर्च उठाने का फैसला किया। उन्होंने यह भी बताया कि रश्मि के लिए आगे और सर्जरी की योजना बनाई गई है, और उम्मीद है कि उसकी बाँह पूरी तरह से ठीक हो जाएगी। रश्मि के इस परिवर्तनकारी उपचार में क्लब के सदस्य शैलेश सरमाह, राजीव मित्तल और नीरज अग्रवाल, जो चिकित्सा सेवाओं से जुड़े व्यवसाय में हैं, ने हरसंभव सहयोग प्रदान किया। एलएन-4 शिविर की सफलता से उत्साहित होकर, क्लब ने महावीर सेवा सदन, कोलकाता के सहयोग से दिसंबर में तीन दिवसीय कृत्रिम अंग और कैलीपर्स शिविर का आयोजन भी किया। विभिन्न कारणों से अपने निचले अंग खो चुके साठ व्यक्तियों को शिविर से लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर में एक वरिष्ठ नागरिक को कृत्रिम अंग ससम्मान प्रदान किया गया।

जलने से बची रश्मि पहाड़िया, जिनकी दाहिनी भुजा पर जलने के निशान हैं; दाईं ओर: प्लास्टिक सर्जरी के एक चरण के बाद रश्मि।

56 साल पहले स्थापित, रोटरी क्लब तिनसुकिया के वर्तमान में 66 सदस्य हैं, जिनमें 12 महिला रोटेरियन शामिल हैं, और इसे दो गवर्नर - कीर्ति रंजन डे और एम एस कुमार - तैयार करने का गौरव प्राप्त है। यह क्लब एक टीकाकरण केंद्र का संचालन करता है और समुदाय में साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। आठ साल पहले, इसने एक गाँव के प्राथमिक विद्यालय को एक हैप्पी स्कूल में बदल दिया, और वंचित परिवारों के छात्रों के लिए शैक्षिक सामग्री और छात्रवृत्ति के साथ इसे सहयोग देना जारी रखा है। अग्रवाल ने कहा, यह सुनिश्चित करने का हमारा तरीका है कि कोई भी बच्चा पीछे न छूटे। ■

रो ई मंडल 3234 ने

8 उत्कृष्ट डॉक्टरों और 4 अस्पतालों को सम्मानित किया

वी मुत्तुकुमारन

हाल ही में न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र के एक मेडिकल सम्मेलन में तमिलनाडु की *मक्कलाई थेडी* (लोगों की तलाश में) योजना की वैश्विक संस्था ने सराहना की। इस योजना के तहत राज्य के वरिष्ठ नागरिकों और दूरदराज़ के इलाकों में रहने वाले लोगों को दवाइयों सहित मुफ्त स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं। स्वास्थ्य मंत्री मा सुब्रमण्यन ने रो ई मंडल 3234 द्वारा आयोजित डॉक्टर्सफ डे कार्यक्रम में चिकित्सा बिरादरी और रोटेरियनों को संबोधित करते हुए यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र अंतर-एजेंसी टास्क फोर्स ने अपनी नवीनतम रिपोर्ट में राज्य सरकार की सभी के लिए चिकित्सा सेवाएं सुलभ बनाने के साहसिक दृष्टिकोण के साथ इस अग्रणी पहल के लिए सराहना की है।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन द्वारा अगस्त 2021 में पाँच प्रमुख गैर-संचारी रोगों (बीपी, मधुमेह, थायराइड, आदि) से निपटने के उद्देश्य से शुरू की गई मक्कलाई थेडी योजना से अब तक 2.28 करोड़ लोग लाभान्वित हो चुके हैं, मंत्री ने कहा। मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना और अन्य नवीन चिकित्सा योजनाओं ने तमिलनाडु को सभी को मुफ्त, कुशल और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने में देश में नंबर एक बना दिया है। चाहे अंगदान हो, प्रत्यारोपण हो, या नियमित जाँच के माध्यम से हृदय की देखभाल हो, हम देश में शीर्ष स्थान पर हैं।

एक अन्य योजना, *इनुयिर कापोम* (जीवन रक्षा) के तहत सड़क दुर्घटना पीड़ितों को मुफ्त चिकित्सा उपचार प्रदान किया जाता है, बशर्ते उन्हें घटना के 48 घंटों के भीतर सूचीबद्ध अस्पतालों में भर्ती कराया जाए। उन्होंने बताया, इस चिकित्सा योजना से अब तक लगभग चार लाख लोग लाभान्वित हुए हैं। मंत्री ने बताया कि चेन्नई निगम ने 2006 में रोटरी और लायंस क्लब जैसे गैर-सरकारी संगठनों और निजी अस्पतालों के सहयोग से 155 स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया, जिसमें एक ही दिन में 64,000 लोगों की जांच की गई थी। इस उपलब्धि के लिए निगम का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया था।

मंत्री महोदय ने बताया कि 1991 से भारत हर वर्ष 1 जुलाई को पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा के अग्रदूत डॉ बी सी रॉय की जयंती के उपलक्ष्य में डॉक्टर्सफ डे के रूप में मनाता आ रहा है। कोविड महामारी के दौरान डॉक्टरों और चिकित्सा क्षेत्र की असाधारण सेवा को याद करते हुए, उन्होंने रोटरी की आठ प्रतिष्ठित डॉक्टरों, दो सरकारी अस्पतालों और दो गैर-लाभकारी अस्पतालों को सम्मानित करने के लिए प्रशंसा की।

97 वर्षीय एंडोस्कोपिक सर्जन और तमिलनाडु के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री डॉ एच वी हांडे के साथ अपने लंबे संबंधों को याद करते हुए, सुब्रमण्यन ने कहा, 1990 के दशक की शुरुआत में, एक गंभीर बीमारी के दौरान उनके बेटे डॉ कृष्णा हांडे ने उनके अस्पताल में मेरा इलाज किया था। सैदापेट में वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक विशाल अस्पताल की स्थापना करते समय, मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने वृद्धावस्था चिकित्सक और पुरस्कार विजेता डॉ वी एस नटराजन के सहयोग पर भरोसा किया।

तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री मा सुब्रमणियन ने डॉ एच वी हैंडे को लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड प्रदान किया। चित्र में डीजी विनोद सराओगी (बाएं) और पीडीजी अबिरामी रामनाथन भी शामिल हैं।

बाएं से: मोहम्मद रेला, मयिल वाहनन नटराजन, सी पलानीवेलु, एच वी हांडे, वी एस नटराजन, पीडीजी रामनाथन, स्वास्थ्य मंत्री सुब्रमणियन, डीजी सराओगी और के आर बालकृष्णन - चेन्नई में आयोजित डॉक्टर्स डे कार्यक्रम में।

चिकित्सा पर्यटन का केंद्र

सुब्रमण्यन ने बताया कि दुनिया भर से किफायती स्वास्थ्य सेवाओं के लिए भारत आने वाले चिकित्सा पर्यटकों में से 25 प्रतिशत तमिलनाडु से आते हैं, जिससे हर साल 15 लाख से अधिक विदेशी मरीज यहां आते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि रोटरी क्लब हर साल चेन्नई में चिकित्सा परियोजनाओं और सेवाओं पर लगभग ₹20 करोड़ खर्च करते हैं।

डीजी विनोद सरावगी ने कहा कि वंचित क्षेत्रों में नियमित जाँच, बुनियादी उपचार और आवश्यक टीकाकरण से लेकर दूरदराज के इलाकों में महिलाओं की जाँच करने वाली मोबाइल मैमोग्राफी इकाइयों तक, रोटरी क्लबों ने मुफ्त स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से सभी लोगों के लिए स्वास्थ्य सेवा सुलभ बनाई है। उन्होंने कहा कि बाल चिकित्सा सर्जरी ने बच्चों को नया जीवन दिया है, लैप्रोस्कोपिक प्रक्रियाओं से वंचित रोगियों में तेज़ी से सुधार हुआ है, और तमिलनाडु के सरकारी स्कूलों में सामान्य स्वास्थ्य और दंत चिकित्सा जांच ने जहाँ ज़रूरी हो, वहाँ शीघ्र हस्तक्षेप प्रदान किया है। उन्होंने कहा, हमने स्कूलों में लड़कियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाने के लिए बड़े पैमाने पर टीकाकरण अभियान चलाए हैं। पोलियोप्लस अभियान के माध्यम से, रोटरी ने न केवल वैश्विक टीकाकरण प्रयासों का नेतृत्व किया है, बल्कि इस बीमारी को खत्म करने के साथ-साथ जीवित बचे लोगों को सम्मान और देखभाल के साथ पुनर्वास में भी मदद की है।

स्वच्छता और स्वास्थ्य परियोजनाओं के माध्यम से, डीजी ने कहा हमने गाँवों में शौचालय का निर्माण कराया है, लड़कियों के स्कूलों को मासिक धर्म स्वच्छता की सुविधाओं से सुसज्जित किया है, और सैनिटरी पैड्स की आपूर्ति के साथ-साथ स्वास्थ्य शिक्षा भी सुनिश्चित की है, जिससे न केवल स्वास्थ्य को बढ़ावा मिला है, बल्कि उनकी गरिमा की भी रक्षा हुई है। उन्होंने आगे कहा कि स्वास्थ्य शिक्षा रोटरी क्लबों की पहुँच का एक प्रमुख आधार बनी हुई है, जिससे स्वच्छता, पोषण और बीमारियों की रोकथाम के बारे में जागरूकता बढ़ती है।

रोटरी के लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार आठ डॉक्टरों को प्रदान किए गए - पूर्व स्वास्थ्य मंत्री एच वी हांडे; अपोलो हॉस्पिटल्स के संस्थापक-अध्यक्ष प्रताप सी रेड्डी; नारायण हेल्थ के संस्थापक-अध्यक्ष देवी शेट्टी; डॉ रेला हॉस्पिटल के अध्यक्ष-निदेशक मोहम्मद रेला; जेम हॉस्पिटल्स के सी पलानीवेलु; आर्थोपेडिक ऑन्कोलॉजिस्ट मायिलवाहनन नटराजन और जेरिएट्रिक फिजिशियन वी एस नटराजन; और हृदय एवं फेफड़े के विशेषज्ञ एस आर बालकृष्णन। उन्हें प्रशस्ति पत्र और पुरस्कार शील्ड प्रदान किए गए।

इसी तरह, मद्रास मेडिकल कॉलेज अस्पताल; स्टेनली मेडिकल कॉलेज अस्पताल, शंकर नेत्रालय और कांची कामकोटि चाइल्ड्स ट्रस्ट अस्पताल को संस्थागत उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किए गए। अपने स्वीकृति भाषण में, डॉ हांडे ने कहा, हमें आने वाले अवसरों का पूरा लाभ उठाना चाहिए। जब तत्कालीन मुख्यमंत्री एम जी रामचंद्रन ने मुझे स्वास्थ्य मंत्री नियुक्त किया और मुझे निर्णय लेने और उन्हें लागू करने की पूरी आज़ादी दी, तब मैंने पाया कि 1980 के दशक की शुरुआत में राज्य भर के कुष्ठ आश्रमों में बहुत से मरीज़ थे।

मंडल शिक्षा अधिकारियों, मंडल स्वास्थ्य अधिकारियों और मंडल कलेक्टरों के साथ विचार-विमर्श करने तथा मूल समस्या का अध्ययन करने के बाद, उन्होंने चेन्नई के निकट ओरागदम में कुष्ठ रोग के उपचार के लिए एक पायलट मल्टीड्रग रेजिमेंट सुविधा की स्थापना की।

कुछ ही महीनों में सभी कुष्ठ आश्रम खाली हो गए क्योंकि नई उपचार प्रक्रिया बेहद सफल रही। इसके अलावा, डॉ हांडे ने याद करते हुए कहा, जब मैं मंत्री बना था, तब तमिलनाडु में केवल 2,000 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और उनके उप-अनुभाग थे। हालाँकि, मेरे पद छोड़ने के बाद यह संख्या बढ़कर 8,000 से ज़्यादा हो गई। उन्हें डीजी सरावगी द्वारा रोटरी पोलियो चैंपियन पुरस्कार भी प्रदान किया। पीडीजी अबिरामी रामनाथन ने बैठक को संबोधित किया। रो ई मंडल 3234 के लगभग 400 रोटेरियन और 400 रोटरेक्टर्स ने इसमें भाग लिया।

चित्र: वी मुतुकुमारन

Rotary PEOPLE OF ACTION

कूड़ाघर से हरे-भरे स्वर्ग तक

जयश्री

रोटरी क्लब पांडिचेरी बीच टाउन, रो ई मंडल 2981 द्वारा विकसित मियावाकी इको टूरिज्म पार्क, दक्षिण भारत के पुडुचेरी (पांडिचेरी) के हृदय में तेज़ी से एक हरा-भरा रत्न बनता जा रहा है। शहर के मेट्टुपालयम ट्रक टर्मिनल पर स्थित 35,000 वर्ग फुट जो कभी एक विशाल कूड़ाघर था, वह क्लब की पहल की बदौलत अब एक जीवंत शहरी वन और इको-पार्क में तब्दील हो गया है। इस परियोजना में औलगरेट नगर पालिका और पुडुचेरी सरकार ने इस क्लब के साथ साझेदारी की है।

12 वर्षों से अधिक समय तक यह स्थल बदसूरती और औद्योगिक कचरे का डंपिंग ग्राउंड बना रहा। पिछले रोटरी वर्ष में हमने इसे साफ़ करने का संकल्प लिया था। तीन फीट से ऊँचे जमा हुए लगभग 250 टन हानिकारक मलबे को हटाने में हमें तीन महीने लगे, क्लब सचिव एस एस प्रकाश ने कहा। ओल्गारेट नगरपालिका ने इस कचरे का सुरक्षित तरीके से निपटान किया।

परियोजना का पहला चरण इस बंजर भूमि के 17,000 वर्ग फुट क्षेत्र को मियावाकी शहरी वन में बदलने पर केंद्रित था। उन्होंने बताया, मियावाकी वनरोपण तकनीक, जो प्राकृतिक वन पारिस्थितिकी तंत्र की नकल करने के लिए देशी प्रजातियों के सघन रोपण पर आधारित है, के माध्यम से हमने 40 देशी वृक्ष प्रजातियों के कुल 1,050 पौधे लगाए। यह तकनीक वनों के विकास को बढ़ावा देती है और यह सुनिश्चित करती है कि यह क्षेत्र कुछ ही वर्षों में आत्मनिर्भर बन सके।

दूसरे चरण में, क्लब ने जंगल के किनारे 18,000 वर्ग फुट का एक इको पार्क विकसित करने में दो महीने और बिताए। इस हरे-भरे पार्क में 900 फूलदार पौधों के साथ-साथ रसदार फूलों से युक्त एक तितली उद्यान भी शामिल है, जिसमें 500 पौधे लगाए गए हैं। इसके अलावा, यहां 12 प्रकार के पारंपरिक औषधीय पौधों वाला एक हर्बल गार्डन भी विकसित किया गया है। इस एकीकृत इको पार्क का उद्घाटन जनवरी में केंद्र शासित प्रदेश के उपराज्यपाल के कैलाशनाथन ने किया था। क्लब के अध्यक्ष विनोद शर्मा ने कहा, तब से यह स्कूल पिकनिक के लिए एक आकर्षण का केंद्र बन गया है। पुडुचेरी के लगभग हर स्कूल के छात्र यहाँ आ चुके हैं। बड़े बच्चों के लिए यह वनस्पति विज्ञान और पर्यावरण संरक्षण की एक

ऊपर: पार्क का एक हिस्सा जिसमें मियावाकी अर्बन फॉरेस्ट, एक इको पार्क, एक हर्बल गार्डन और एक बटरफ्लाई गार्डन शामिल हैं।

नीचे: क्लब द्वारा विकसित मियावाकी ईको टूरिज्म पार्क में रोटरी क्लब पॉन्डिचेरी बीच टाउन के सदस्य। क्लब अध्यक्ष विनोद शर्मा (ऊपरी पंक्ति, दाईं ओर से चौथे) और सचिव एस एस प्रकाश (शर्मा के बाईं ओर) भी दिखाई दे रहे हैं।

जीवंत पाठशाला बन चुका है, जबकि वरिष्ठ नागरिकों के लिए, यह पार्क एक शांतिपूर्ण विश्राम स्थल है, जहाँ वे टहल सकते हैं, मेलजोल बढ़ा सकते हैं और प्रकृति से फिर से जुड़ सकते हैं। मियावाकी वन का उद्घाटन पूर्व उपराज्यपाल तमिलिसाई सौंदरराजन ने किया था।

इसके बाद क्लब ने पार्क के अंदर एक वर्षा जल संचयन प्रणाली स्थापित की। उन्होंने बताया, 400 वर्ग फुट में फैले इस सिस्टम में 125 फुट गहरे दो गड्ढे शामिल हैं, और इसे न केवल पार्क से वर्षा जल, बल्कि आसपास के इलाकों से अतिरिक्त जल संचयन के लिए भी डिज़ाइन किया गया है। इसकी भंडारण क्षमता लगभग 42 लाख घन फुट है।

अपने 23वें वर्ष में, रोटरी क्लब पांडिचेरी बीच टाउन के 37 सदस्य हैं। यह क्लब विकलांगों को गतिशीलता संबंधी सहायता उपकरण और जन्मजात विकारों से ग्रस्त बच्चों को श्रवण यंत्र जैसी सहायक प्रणालियाँ प्रदान करता है। पिछले कुछ वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी विद्यालयों में कंप्यूटर लैब स्थापित की गई हैं। नवंबर 2024 में दक्षिण भारत के तटीय क्षेत्रों में आए चक्रवात फेंगल के दौरान, क्लब ने राहत कार्यों में तेज़ी से काम किया। प्रकाश ने याद करते हुए कहा, हम ज़मीन पर सबसे पहले पहुँचे और मच्छरदानी, पानी, सैनिटरी नैपकिन, निवारक दवाइयाँ, डायपर और दूध जैसी ज़रूरी चीज़ें पहुँचाईं, यहाँ तक कि घुटनों तक पानी में भी चलकर फंसे हुए लोगों तक पहुँचे। ■

Membership Summary

(Interim)

As on July 3, 2025

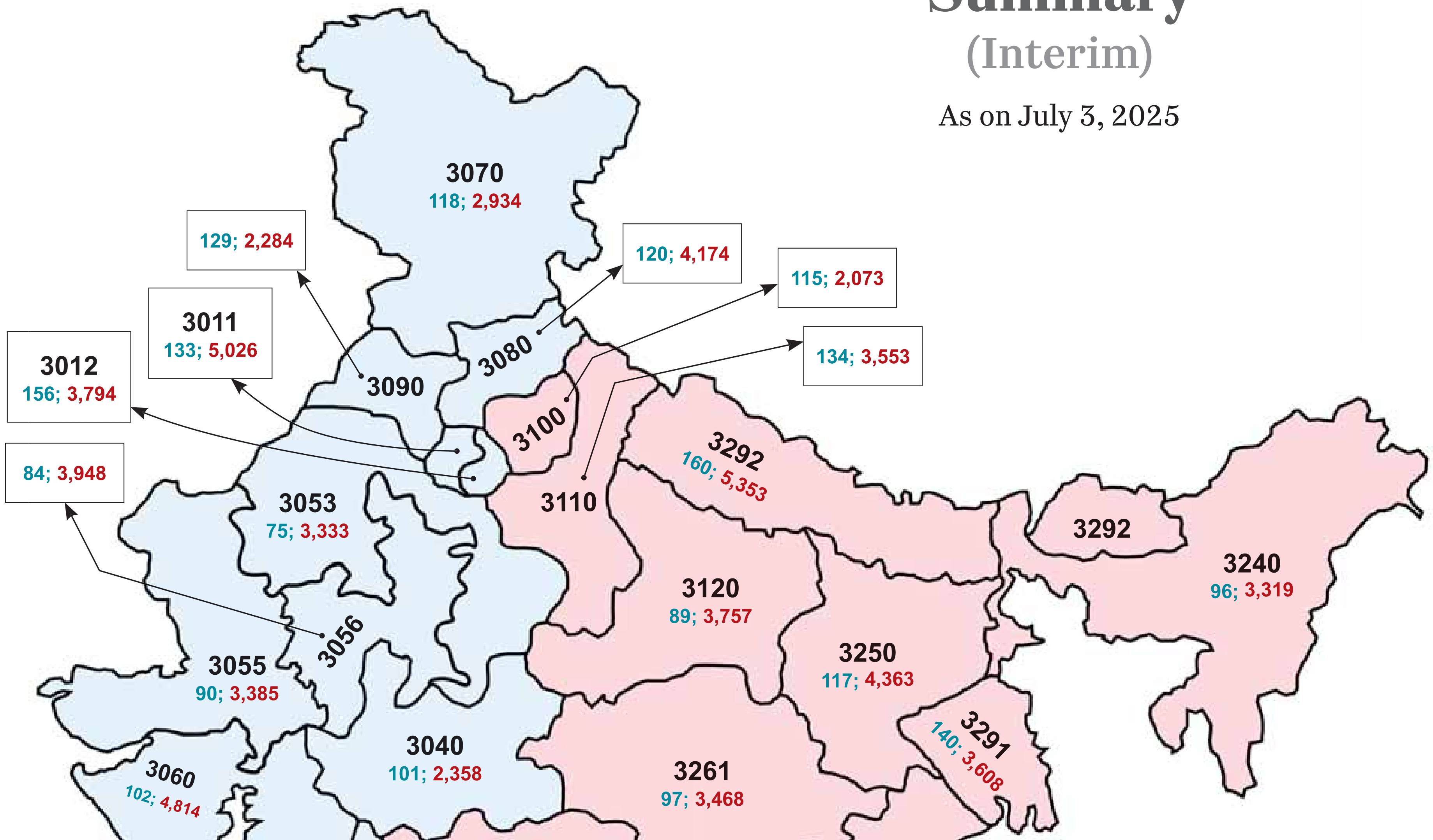

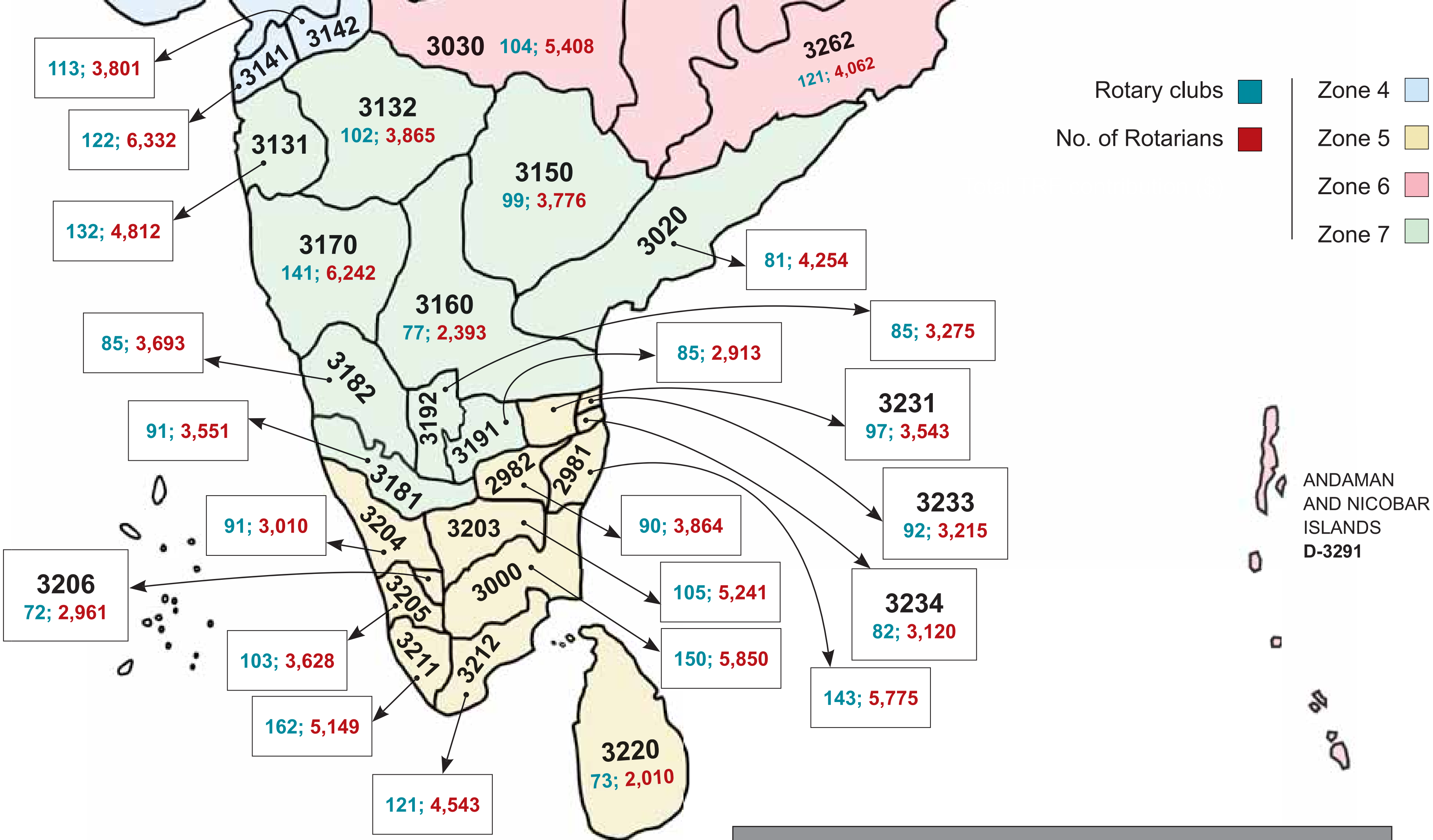

Rotary worldwide

Rotary clubs	:	36,373	Rotary members	:	1,135,050
Rotaract clubs	:	9,539	Rotaract members	:	132,096
Interact clubs	:	17,111	Interact members	:	393,691
RCCs	:	14,073			

As on July 16, 2025

आपके गवर्नर्स से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

कैंसर जागरूकता उनकी प्राथमिकता

उनकी प्राथमिकता सूची में सबसे ऊपर कैंसर जागरूकता और जांच शिविर हैं, जिन्हें वे अगस्त से शुरू करने की योजना बना रहे हैं। रवि प्रकाश कहते हैं, सबसे पहले, हम जागरूकता सत्र आयोजित करेंगे और 10,000 ग्रामीण महिलाओं तक पहुंचेंगे, जिसके बाद कम से कम 40 जांच शिविर आयोजित किए जाएंगे। प्रत्येक ऐसे शिविर से लगभग 30 महिलाओं को लाभ होगा। जब तक वे मैमोग्राफी बस (जीजी: ₹1 करोड़) हासिल नहीं कर लेते, तब तक 4-5 महीने लगेंगे, इस दौरान हम अपने पड़ोसी रो ई मंडल से वाहन का उपयोग करेंगे।

1 जुलाई से, सरकारी स्कूलों के 20,000 छात्रों को चरणबद्ध तरीके से स्कूल बैग वितरित किए जाएँगे। प्रकाश कहते हैं, मैंने क्लब अध्यक्षों से आग्रह किया है कि वे स्कूलों और उनकी ज़रूरतों की पहचान करें, ताकि हम सी एस आर फंड के माध्यम से 100 हैप्पी स्कूल स्थापित कर सकें। सी एस आर अनुदान के ज़रिए 100 गाँवों में लगभग 1,000 सोलर स्ट्रीट लाइटें (₹70 लाख) लगाई जाएँगी; और हर क्लब 2-3 डायग्नोस्टिक कैंप आयोजित करेगा।

रो ई मंडल 3080 पिछले 28 सालों से, ज़्यादातर अफ्रीका में, पीआरआईपी राजेंद्र साबू की सोच से प्रेरित होकर, एक रोटरी मेडिकल मिशन और छत्तीसगढ़ या मध्य प्रदेश में एक ग्रामीण चिकित्सा शिविर का आयोजन करता आ रहा है। हम मंडल स्तर पर पहल करते हुए हरिद्वार में एक प्लास्टिक सर्जरी शिविर तथा देहरादून में कटे होंठों की सर्जरी के लिए एक विशेष शिविर आयोजित करेंगे।

रवि प्रकाश
इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माण
रोटरी क्लब रुड़की मिडटाउन
रो ई मंडल 3080

टीआरएफ-दान के लिए उनका लक्ष्य 500,000 है, और मौजूदा 4,300 सदस्यों और 117 क्लबों में लगभग 1,000 नए सदस्य तथा 20 नए क्लब जोड़े जाने की योजना है। वे 2010 में रोटरी से जुड़े थे और सामुदायिक सेवा से मिलने वाली संतुष्टि से खुश हैं।

पलक्ष के
सेवानिवृत्त प्रोफेसर
रोटरी क्लब हसन
रो ई मंडल 3182

किसानों को गाय उपहार में देना

मंडल के क्लब ग्रामीण क्षेत्रों में गौदान परियोजना के लाभार्थियों की पहचान के लिए सर्वेक्षण कर रहे हैं। के. पलाक्ष कहते हैं, हम लगभग 60 गरीब किसानों को चुनेंगे और उनकी आजीविका में सुधार के लिए ₹35-40 लाख की एक गौदान परियोजना के तहत उन्हें दुधारू गायें प्रदान करेंगे।

रसायन विज्ञान के पूर्व प्रोफेसर होने के नाते, शिक्षा उनके दिल के बहुत करीब है। मैं सरकारी स्कूलों में कक्षा 7 से 9 तक के एक लाख से ज़्यादा छात्रों के लिए करियर मार्गदर्शन कार्यशालाएँ आयोजित करने की योजना बना रहा हूँ। विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित व्यक्ति छात्रों को प्रेरित करने के लिए अपनी सफलता की कहानियाँ सुनाएँगे और उनके करियर को आकार देने के लिए कुछ उपयोगी सुझाव साझा करेंगे। एक स्वच्छता परियोजना के तहत, कुछ स्कूलों में आरओ वाटर फ़िल्टर यूनिट, हैंडवाश स्टेशन और उचित शौचालय सुविधाएँ स्थापित की जाएँगी (जीजी: ₹50-60 लाख)। वे कहते हैं, इस स्वच्छता पहल से हमारे रो ई मंडल के 2,000 से ज़्यादा ग्रामीण स्कूलों को लाभ होगा।

सभी क्लब एक विशाल प्लास्टिक विरोधी अभियान चलाएँगे, जिसमें विभिन्न हितधारकों के लिए जागरूकता सत्र आयोजित किए जाएँगे, और प्रत्येक क्लब एक लाख कपड़े के थैले बाँटेगा और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देगा। इस वर्ष लगभग 200 चिकित्सा शिविर आयोजित किए जाने की योजना है। टीआरएफ के लिए उनका लक्ष्य 3,00,000 इकट्ठा करना है। 1 जुलाई तक 86 क्लबों और 3,700 सदस्यों के साथ, पलाक्ष 1,000 नए रोटेरियन और रोटेरेक्टर्स को जोड़ना चाहते हैं, और 7-8 नए क्लबों की स्थापना करना चाहते हैं। सेवा परियोजनाओं और संगति ने उन्हें 2001 में रोटरी की ओर आकर्षित किया।

हैप्पी स्कूल्स और स्वास्थ्य देखभाल

भूपेश मेहता बताते हैं कि रोटरी की सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने के लिए हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में कम से कम 20 रोटरी शेल्टर और चौक स्थापित किए जाएँगे (प्रत्येक की लागत ₹1 लाख होगी)। इसके लिए सदस्यों के योगदान, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) निधि और वैश्विक अनुदान का मिश्रण होगा।

कुछ सरकारी स्कूलों में शौचालय ब्लॉक बनाए जाएँगे (जीजी: 100,000)। अपने क्लब दौरों के दौरान, वह उनके समुदायों की ज़रूरतों का आकलन करेंगे और फिर हैप्पी स्कूल्स और स्वास्थ्य सेवा परियोजनाओं की प्रकृति पर निर्णय लेंगे। सेवा परियोजनाओं को अंतिम रूप देने में लगभग दो महीने लगने का अनुमान लगाते हुए, मेहता कहते हैं, मैंने शुद्ध सदस्यता वृद्धि में 20 प्रतिशत का लक्ष्य रखा है और आने वाले महीनों में 20 नए क्लबों की स्थापना करूँगा। वर्तमान में, ज़िले में लगभग 2,700 रोटेरियन सदस्यों के साथ 130 क्लब हैं। टीआरएफ दान के लिए उनका लक्ष्य 250,000 डॉलर है।

रोटरी में अपने चार दशक से ज़्यादा के सफ़र को याद करते हुए, वे कहते हैं कि 1984 में रोटरेक्टर के रूप में शामिल होने के बाद, मैं 1991 में डीआरआर बन गया, जो मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। वे स्वीडन गए एक ग्रुप स्टडी एक्सचेंज टीम का हिस्सा थे, एक ऐसा अनुभव जिसने मुझे जीवन के प्रति एक नया नज़रिया दिया।

जीएसई दौरे से लौटने के बाद, मैं रोटरी के आदर्शों और उसके युवा कार्यक्रमों से प्रेरित हुआ और 1991 में इस वैश्विक एनजीओ में शामिल हो गया, और इसके पोलियोप्लस अभियान में पूरी तरह से शामिल हो गया। रोटरी अपने सदस्यों को नेतृत्व प्रशिक्षण के माध्यम से नेटवर्किंग और व्यक्तित्व विकास के बेहतरीन अवसर प्रदान करता है, जो मुझे सबसे आकर्षक लगा, वे मुस्कुराते हुए कहते हैं।

भूपेश मेहता
कृषि,
रोटरी क्लब सिरसा सीनियर,
रो ई मंडल 3090

डीजी भूपेश मेहता 1991 में डीआरआर बने, जो उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। वे स्वीडन गई जीएसई टीम का हिस्सा थे और उसी वर्ष रोटरी में शामिल हुए।

दिनेश बाबू
फिल्म प्रदर्शनी
रोटरी क्लब ईस्ट कोस्ट रामनाड
रो ई मंडल 3212

जैव विविधता संरक्षण

उनका मुख्य ध्यान पर्यावरणीय परियोजनाओं पर होगा, जिसका मंडल विषय *पल्लुयिर कापोम* (जैव विविधता बचाओ) होगा। दिनेश बाबू कहते हैं, पिछले कुछ वर्षों से हम रोटरी के सेमिनारों और अन्य आयोजनों में सिंगल-यूज़ प्लास्टिक का उपयोग नहीं करते हैं। अब, हम कम से कम 10 ऐसे जल निकायों की पहचान कर रहे हैं, जिन्हें पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है, जिसके लिए हम वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन करेंगे। उन्होंने आगे कहा, गाद निकालने और उन्हें सुंदर बनाने के बाद, हम जल निकायों के पास एक इको-पार्क बनाएंगे।

विरुधुनगर में छात्रों की मदद से स्थापित एक पायलट कचरा बैंक को मिली सकारात्मक प्रतिक्रिया के बाद, हम स्कूलों के साथ साझेदारी में ऐसे 20 बैंक स्थापित करने की योजना बना रहे हैं। इसका उद्देश्य छात्रों के माध्यम से परिवारों तक गैर-जैविक कचरे को अलग करने का संदेश पहुँचाना है। स्वच्छता के मोर्चे पर, उनकी योजना 60,000 डॉलर के निर्देशित दान के माध्यम से सरकारी स्कूलों में 20 शौचालय ब्लॉक और हैंडवाश स्टेशन स्थापित करने की है। इसके अलावा, 100 दिव्यांगों के लिए छोटी दुकानें स्थापित की जाएँगी, जिनमें से प्रत्येक की लागत ₹1.5 लाख होगी, ताकि उन्हें अच्छी आय अर्जित करने में मदद मिल सके। दो साल पहले शुरू की गई एक हृदय रोग स्क्रीनिंग बस इस साल 2,000 रोटेरियन और उनके जीवनसाथियों की जाँच करेगी।

वर्तमान में 120 क्लबों में 4,700 रोटेरियन हैं, बाबू 450 नए सदस्य बनाना चाहते हैं और 10 नए क्लबों की स्थापना करना चाहते हैं। टीआरएफ के लिए उनका दान लक्ष्य 10 लाख डॉलर है। उनकी पत्नी और बड़े बेटे दोनों रोटेरियन हैं, जबकि छोटा बेटा एक इंट्रैक्टर है। 2000 में रोटरी से जुड़े महानिदेशक कहते हैं, फेलोशिप और नेटवर्किंग से मुझे सदस्यता बढ़ाने में मदद मिलती है, जिससे हमारी सेवा का विस्तार होता है। ■

फ्रांस में एक भारतीय किशोरी का आर वाई ई अनुभव

जयश्री

जब 18 वर्षीय कामाक्षी भगत मुंबई से पेरिस के लिए अपनी पहली अंतरराष्ट्रीय उड़ान पर सवार हुईं, तो वे उत्साह, जिज्ञासा और थोड़ी घबराहट से भरी हुई थीं। वह दक्षिणी फ्रांस के एक खूबसूरत शहर काहोर्स में दस महीने बिताने वाली थीं, जहाँ वह एक ऐसे मेजबान परिवार के साथ रहेंगी जिनसे वह कभी नहीं मिली थीं, एक ऐसी भाषा बोलेंगी जो उन्होंने केवल स्कूल में पढ़ी थी, और खुद को एक ऐसी संस्कृति में डुबो लेंगी जो उनकी अपनी संस्कृति से बिल्कुल अलग होगी। रोटरी यूथ एक्सचेंज (आर वाई ई) कार्यक्रम में एक प्रतिभागी के रूप में, कामाक्षी एक ऐसी यात्रा पर निकलने वाली थीं, जो उनके विश्वदृष्टिकोण का विस्तार करेगी और उन्हें गहन तरीकों से बदल देगी।

रोटरी क्लब बड़ौदा, रो ई मंडल 3060 के पूर्व अध्यक्ष जयेशकुमार भगत और इनर व्हील 3060 की मंडल सचिव स्नेहा की पुत्री कामाक्षी को रोटरी क्लब बड़ौदा, रो ई मंडल 3060 द्वारा प्रायोजित किया गया था और उनकी मेजबानी रोटरी क्लब काहर्स, रो ई मंडल 1700 ने की थी। टूलूज़ पहुंचने पर उनकी मेजबान मां इसाबेल और उनकी बेटियों नोरा और मैना ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया।

कुछ ही दिनों बाद, 29 अगस्त को, उन्होंने जापान, ताइवान, न्यूज़ीलैंड, मैक्सिको, ब्राजील और कोलंबिया से आए एक्सचेंज छात्रों की एक सभा में भाग लिया। कामाक्षी याद करती हैं, ''मैंने भरतनाट्यम में गणेश वंदना प्रस्तुत कर भारतीय संस्कृति का परिचय कराया।'' वह जल्द ही एक औपचारिक सांस्कृतिक राजदूत बन गईं, अपने फ्रांसीसी स्कूल में आर वाई ई कार्यक्रम की व्याख्या करने लगीं, विभिन्न रोटरी बैठकों में रोटरी क्लब बड़ौदा की सामुदायिक सेवा पहलों पर प्रस्तुतियाँ देने लगीं और अपने मेजबान क्लब के साथ सामुदायिक गतिविधियों सक्रिय रूप से भाग लेने लगीं।

आर वाई ई छात्रा कामाक्षी भगत फ्रांस के काहोरस शहर में दृष्टिबाधित लोगों के लिए गाइड डॉग्स उपलब्ध कराने के उद्देश्य से फंड जुटाने वाले प्रोजेक्ट 30,0000 पोम्स *में भाग लेती हुईं।*

उन्होंने धन उगाहने के प्रयासों में सक्रिय रूप से योगदान दिया। उन्होंने एनजीओ इंटरमार्चे और क्रेडिट एग्रीकोल को दैनिक आपूर्ति प्रदान करने के लिए दान एकत्र किया, और कैंसर से पीड़ित लोगों के इलाज के लिए चिकित्सा उपकरण खरीदने में मदद की। एक यादगार परियोजना *ऑपरेशन 30,000 पॉम्स* थी, जो एक रोटरी फंडरेज़र था, जहाँ सेब और सेब से बने उत्पाद बेचे गए ताकि दृष्टिहीन लोगों के लिए गाइड कुत्ते उपलब्ध कराने हेतु धन जुटाया जा सके। इस कार्यक्रम को लायंस क्लब ऑफ़ काहर्स ने भी समर्थन दिया था।

'रेपस इंटरनेशनल' में भाग लेना ''मज़ेदार और ज्ञानवर्धक अनुभव था। यह एक ऐसा कार्यक्रम था जिसमें विश्व भर के व्यंजनों का जश्न मनाया जाता था। मुझे क्लबों, स्कूलों और सार्वजनिक संस्थानों में भारतीय संस्कृति और परंपराओं को साझा करने के कई अवसर मिले। साथी आरवाईई छात्रों के माध्यम से, मुझे कई अन्य देशों के बारे में भी जानने का

मौका मिला। यह वास्तव में ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं कुएं से बाहर निकल कर समुद्र देख रही हूँ।''

चयन प्रक्रिया के बारे में बात करते हुए, कामाक्षी के पिता भगत ने बताया कि मंडल द्वारा क्लबों को आमंत्रण किए जाने के बाद कामाक्षी का चयन पांच सदस्यीय पैनल द्वारा आयोजित साक्षात्कार के माध्यम से किया गया था। वे कहते हैं, ''हमारे क्लब ने काहर्स तक उसकी यात्रा को प्रायोजित किया। मंडल ने उसे प्रस्थान से पहले उन्मुखीकरण भी दिया।'' कामाक्षी उस वर्ष दीर्घकालिक कार्यक्रम के लिए काहर्स में भेजी जाने वाली एकमात्र भारतीय छात्रा थी। क्लब ने इससे पहले 2013 में एक जर्मन छात्र की मेजबानी की थी, और भगत परिवार ने पहले ओहियो, यूएसए से आए एक आर वाई ई छात्र, ओवेन बास, की मेजबानी की थी। ''हम अभी भी संपर्क में हैं,'' वे कहते हैं।

अपनी यात्रा पर पीछे मुड़कर देखते हुए, कामाक्षी, जो 10 जून को भारत लौटीं, कहती हैं कि इस अनुभव ने उन्हें पूरी तरह से बदल दिया। ''जब मैं फ्रांस पहुंची, तो स्कूल-स्तर के पाठों को दोहराने के बावजूद मैं मुश्किल से फ्रेंच बातचीत समझ पाती थी। लेकिन अब मैं आसानी से भाषा बोल सकती हूँ।'' उनके लिए एक असाधारण क्षण वह था जब उन्होंने अपने फ्रेंच स्कूल के गायक मंडल के साथ एकल सोप्रानो प्रस्तुति दी। ''यह मेरे लिए एक बहुत बड़ा सम्मान और एक अनूठा सांस्कृतिक आदान-प्रदान था।'' इन 10 महीनों के दौरान वह कई मेजबान परिवारों के साथ रहीं, जिनमें से एक ग्रामीण गांव में था। ''इसने मुझे नए वातावरण और दिनचर्या, अलग-अलग लोगों और दृष्टिकोणों के साथ तालमेल बिठाना सिखाया। एक विदेशी भूमि में, लचीलापन ही आपका सबसे अच्छा मित्र बन जाता है।''

कामाक्षी एकल सोप्रानो प्रस्तुति देती हुई।

उनके आर वाई ई वर्ष का एक मुख्य आकर्षण यूरो टूर था - जर्मनी, ऑस्ट्रिया, मोनाको, इटली और विभिन्न फ्रांसीसी शहरों में एक अविस्मरणीय बवंडर यात्रा। ''हर एक दिन कुछ नया, कुछ अप्रत्याशित लेकर आया। जैसे ही आप एक अनुभव में डूबते थे, तुरंत ही कोई और नया अनुभव चकित करने के लिए सामने आ जाता था। लेकिन सबसे खूबसूरत हिस्सा? मैंने जीवन भर के लिए दोस्त बनाए, ऐसे लोगों के साथ जिनकी संस्कृतियाँ, भाषाएँ और आदतें मुझसे बहुत अलग थीं, फिर भी वे मेरे दिल के बेहद करीब हो गए,'' वह मुस्कुराती हैं। ■

अन्य देशों से आए एक्सचेंज छात्रों के साथ।

Rotary PEOPLE OF ACTION

परिवर्तन की शक्ति

छात्राओं को बिस्तर दान किये गये

कस्तूरीबा गांधी बालिका विद्यालय, सिंगपुरम, एक आवासीय विद्यालय में 225 छात्राओं को उनके स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए रोटरी क्लब श्रीकाकुलम, रो ई मंडल 3020 द्वारा बिस्तर दान किए गए। यह पहल श्रीकाकुलम क्षेत्र के मंडल सचिव शिवशंकर देवरसेट्टी सहित क्लब के सदस्यों के प्रयासों से संभव हुई।

केजीबीवी प्रिंसिपल जम्पू लैथा ने इस पहल के लिए क्लब का आभार व्यक्त करते हुए कहा, ''हमारे कई छात्र दूरदराज के इलाकों और वंचित परिवारों से आते हैं। ये आरामदायक बिस्तर उन्हें सम्मान और सुरक्षा की भावना प्रदान करेंगे।'' ■

रोटरी क्लब श्रीकाकुलम के सदस्यों द्वारा सिंगपुरम स्थित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की छात्राओं को बिस्तर दान किए गए।

कपूरथला के जिला मजिस्ट्रेट अमित कुमार पांचाल ने एक शव वाहन को हरी झंडी दिखाई। उनके दाईं ओर रो ई मंडल 3070 के पूर्व डीजी एस पी सेठी और दाईं ओर से तीसरे स्थान पर रोटरी क्लब फगवाड़ा जेम्स के पूर्व अध्यक्ष पवन कुमार कालरा दिखाई दे रहे हैं।

फगवाड़ा को शव वाहन की सौगात

शहर में और इसके आसपास अंतिम संस्कार सेवाएं प्रदान करने के लिए रोटरी क्लब फगवाड़ा जेम्स, रो ई मंडल 3070 द्वारा एक वातानुकूलित शव वाहन प्रायोजित किया गया था।

कपूरथला के मंडल मजिस्ट्रेट अमित कुमार पंचाल ने एक कार्यक्रम में शव वाहन को हरी झंडी दिखाई, जिसमें पीडीजी एस पी सेठी, तत्कालीन क्लब अध्यक्ष पवन कुमार कालरा और अन्य सदस्य उपस्थित थे। फगवाड़ा और आस-पास के गांवों के निवासियों की सेवा करने वाली रोटरी व्हील प्रतीक वाली शव वाहन इस कपड़ा नगरी में और उसके आसपास क्लब की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा देगी। ■

15 लाभार्थियों को मिले ई-ऑटो

आईपीडीजी महादेव प्रसाद ने रोटरी क्लब बैंगलोर वेस्ट, रो ई मंडल 3192 की वार्षिक सी एस आर परियोजना के तहत क्रॉनिक फाउंडेशन, बेंगलुरु में सात दिव्यांगों सहित 15 लाभार्थियों को ई-ऑटो सौंपे। क्लब ने अब तक 40 से अधिक लाभार्थियों को ई-ऑटो दान करने के लिए एटोस इंडिया के साथ समझौता किया है।

वाहनों में अग्निशामक यंत्र, प्राथमिक चिकित्सा किट, पानी की बोतल के पाउच और पढ़ने की सामग्री लगी हुई है; और ड्राइवर एप्रन पर रोटरी ब्रांडिंग है। इस परियोजना को रोटरी क्लब बैंगलोर ग्रीनपार्क और ओएसिस के साथ-साथ कैपिटल फाउंडेशन का समर्थन प्राप्त है, जिसके प्रबंध ट्रस्टी रमेश शिवन्ना इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। नवीन कोलावारा इस परियोजना के अध्यक्ष हैं। ■

रो ई मंडल 3192 के पूर्व डीजी महादेव प्रसाद (दाईं ओर) क्रॉनिक फाउंडेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी रमेश शिवन्ना (बाईं ओर से चौथे) और रोटेरियनों की उपस्थिति में एक लाभार्थी को ई-ऑटो सौंपते हुए।

संबलपुर में रोटरी आर्ट अकादमी

दृश्य, प्रदर्शन और साहित्यिक कलाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, रोटरी क्लब वीरभूमि संबलपुर, रो ई मंडल 3261 ने अपने चार्टर अध्यक्ष मनोज चौधरी और रोहित सुपाकर के नेतृत्व में रोटरी आर्ट अकादमी की शुरुआत की है। यह अकादमी कला को सभी के लिए सुलभ बनाने के लिए कार्यशालाओं, सेमिनारों और प्रतियोगिताओं का आयोजन करेगी।

लॉन्च के अवसर पर चौधरी की एक एकल पेंटिंग प्रदर्शनी आयोजित की गई थी, और नई अकादमी संबलपुर में स्कूली छात्रों के लिए हॉकी टूर्नामेंट के प्रायोजकों में से एक थी। चौधरी ने कहा, अकादमी का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की छिपी प्रतिभा को वैश्विक मंच पर प्रदर्शित करना है। उन्होंने ओडिशा के कलाकारों के लिए अभ्युदय नामक एक पेंटिंग कार्यशाला का आयोजन किया, जिसके बाद रो ई मंडल 3261 के मंडल सम्मेलन में एक सेमिनार का आयोजन किया गया। ■

रोटरी क्लब वीरभूमि संबलपुर के चार्टर अध्यक्ष मनोज चौधरी कलाकारों को सम्मानित करते हुए। रो ई मंडल 3261 के पूर्व डीजी अखिल मिश्रा बाईं ओर दिखाई दे रेहे हैं।

द रोटरी फ़ाउंडेशन ट्रस्टीस 2025–26

रोटरी फ़ाउंडेशन के ट्रस्टी, रोटरी की धर्मार्थ शाखा, जो सेवा गतिविधियों के लिए धन मुहैया कराती है, के व्यवसाय का प्रबंधन करते हैं। रो ई के नवनिर्वाचित अध्यक्ष, ट्रस्टियों को नामित करते हैं, जिन्हें रो ई बोर्ड द्वारा चार वर्षीय कार्यकाल के लिए चुना जाता है। तीन नए ट्रस्टी 1 जुलाई को पदभार ग्रहण करेंगे।

होल्गर नेक

अध्यक्ष 2025-26

ट्रस्टी 2022-26

रोटरी क्लब हर्ज़ोग्टम लॉएनबर्ग-मोलेन, जर्मनी

होल्गर क्नैक, क्नैक केजी नामक एक रियल एस्टेट कंपनी और क्नैक बेकरी एंटरप्राइजेज नामक एक पारिवारिक व्यवसाय के मालिक थे, जिसकी स्थापना 1868 में हुई थी। वे रत्ज़ेबर्ग शहर के सिविक फाउंडेशन के संस्थापक सदस्य और कार्ल एडम फाउंडेशन के संस्थापक और अध्यक्ष भी हैं।

1993 से रोटेरियन रहे नेक ने रोटरी में अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, निदेशक, मॉडरेटर, कई समितियों के सदस्य और अध्यक्ष, उेङ प्रतिनिधि, बंदोबस्ती/प्रमुख उपहार सलाहकार और शिक्षण सुविधा प्रदाता के रूप में सेवा की है।

उन्होंने और उनकी पत्नी सुज़ैन ने 40 से ज़्यादा आरवाईई छात्रों की मेज़बानी की है और टीआरएफ के प्रमुख दानदाता हैं। वे पॉल हैरिस सोसाइटी और बेक्वेस्ट सोसाइटी के भी सदस्य हैं।

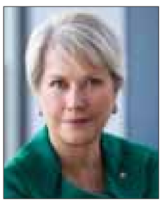

जेनिफर जोन्स

निर्वाचित अध्यक्ष 2025-26

ट्रस्टी 2023-27

रोटरी क्लब विंडसर-रोज़लैंड, ओंटारियो

जेनिफर जोन्स ने 2022-23 में रो ई की अध्यक्ष के रूप में कार्य किया, और रोटरी के तत्कालीन 117 साल के इतिहास में यह पद संभालने वाली पहली महिला बनीं। एक संचार कार्यकारी के रूप में, वह विंडसर, ओंटारियो स्थित एक पुरस्कार विजेता मीडिया कंपनी, मीडिया स्ट्रीट प्रोडक्शंस इंक. की संस्थापक हैं, जो कॉरपोरेट और गैर-लाभकारी संगठनों को अपनी कहानियाँ दृढ़ विश्वास और विश्वसनीयता के साथ कहने में मदद करती है।

अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने इमेजिन इम्पैक्ट टूर की शुरुआत की, जिसमें दुनिया भर में रोटरी के सक्रिय सदस्यों द्वारा की गई टिकाऊ, बड़े पैमाने की परियोजनाओं की कहानियों को प्रदर्शित करने के लिए शीर्ष स्तर के मीडिया पेशेवरों और सामाजिक प्रभावशाली व्यक्तियों को अपने साथ लाया गया।

जोन्स को रोटरी का सर्विस एबव सेल्फ अवार्ड, रोटरी फाउंडेशन प्रशस्ति पत्र फॉर मेरिटोरियस सर्विस और सिल्विया व्हिटलॉक लीडरशिप अवार्ड प्राप्त हो चुका है। उन्हें उनकी सेवाओं के लिए कई सम्मानों से भी सम्मानित किया गया है, जिनमें वाईएमसीए पीस मेडलियन, क्वीन्स डायमंड जुबली मेडल और वेन स्टेट यूनिवर्सिटी का पीसमेकर अवार्ड शामिल है, यह पुरस्कार किसी कनाडाई नागरिक को पहली बार मिला है। उन्होंने विंडसर विश्वविद्यालय और क्वीस विश्वविद्यालय से डॉक्टर ऑफ लॉ की डिग्री प्राप्त की है।

जोन्स की शादी निक क्रायासिच से हुई है, जो एक पारिवारिक चिकित्सक हैं। उन्हें रोटरी, यात्रा, साइकिलिंग, गोल्फ़ खेलने और एरी झील के किनारे स्थित अपने पारिवारिक कॉटेज में आराम करने का शौक है।

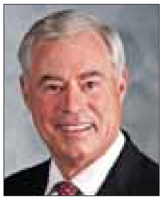

ग्रेग ई पोड

उपाध्यक्ष 2025-26

ट्रस्टी 2022-26

रोटरी क्लब एवरग्रीन, कोलोराडो

ग्रेग पोड एक सेवानिवृत्त प्रमाणित सार्वजनिक लेखाकार और व्यक्तिगत वित्तीय विशेषज्ञ हैं, जिन्होंने 1979 में अपनी स्वयं की फर्म की स्थापना की थी।

वे 1982 में रोटरी में शामिल हुए और उन्होंने रो ई में उपाध्यक्ष और निदेशक के रूप में सेवा प्रदान कर चुके हैं।

रोटरी फ़ाउंडेशन के प्रमुख दान सलाहकार के रूप में, ग्रेग ने अपने मंडल में मिलियन डॉलर डिनर का आयोजन किया, जिससे एक ही रात में 3.1 मिलियन डॉलर से ज़्यादा की राशि एकत्रित हुई। उन्हें सर्विस एबव सेल्फ अवार्ड और टीआरएफ का सराहनीय सेवा के लिए प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुआ है। वह और उनकी पत्नी पाम, प्रमुख दानदाता हैं और एकेएस, बेक्वेस्ट सोसाइटी और पॉल हैरिस सोसाइटी के सदस्य हैं।

ऐन-ब्रिट एसेबोल

ट्रस्टी 2024-28

रोटरी क्लब फालुन-कोप्पर्वगेन, स्वीडन

एन-ब्रिट एसेबोल, डलार्ना काउंटी की काउंटी पार्षद के रूप में कई कार्यकालों की सेवा के बाद, 2022 में स्वीडन की संसद, रिक्सडाग की सदस्य के पद से सेवानिवृत्त हुईं। एक सांसद के रूप में, उन्होंने संविधान समिति और शिक्षा समिति सहित कई समितियों में कार्य किया। राजनीति में आने से पहले, उन्होंने अपने विद्यालय, फालुन में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में एक शिक्षिका, प्रधानाचार्य और प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया। बाद में उन्होंने एक निजी माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की और उसके सीईओ के रूप में भी कार्य किया।

एसेबोल 1993 में रोटरी क्लब की पहली महिला सदस्य के रूप में शामिल हुईं। उनकी पहली अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं में से एक रूस के सेंट पीटर्सबर्ग की सीवर सुरंगों में रहने वाले बच्चों के लिए एक आश्रय गृह की स्थापना थी। आसेबोल ने नेपाल के एक ग्रामीण अस्पताल के लिए स्वच्छ जल सुनिश्चित करने वाली एक वैश्विक अनुदान परियोजना का नेतृत्व भी किया। उन्होंने बाल्टिक देशों और यूक्रेन में भी रोटरी परियोजनाओं का नेतृत्व किया है, साथ ही स्वीडन में यूक्रेनी शरणार्थियों की सहायता भी की है।

एसेबोल रोटरी फ़ाउंडेशन की एक दानदाता, एक प्रमुख दानदाता, कई बार की पॉल हैरिस फ़ेलो और पॉल हैरिस सोसाइटी की सदस्य हैं। उन्हें सराहनीय सेवा के लिए प्रशस्ति पत्र प्राप्त हो चुका है।

मार्था हेलमैन

ट्रस्टी 2022-26

रोटरी क्लब बूथबे हार्बर, मेन

मार्टी हेलमैन ने अपना करियर व्यावसायिक अधिकारियों के लिए लेखन करते हुए शुरू किया और मैकग्रा-हिल तथा अमेरिकन मैनेजमेंट एसोसिएशन में पत्रिका संपादक के रूप में कार्य किया। इसके बाद, उन्होंने ओटो एंड फ्रैन वाल्टर फ़ाउंडेशन की अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला, यह एक गैर-लाभकारी संस्था है, जो विकासशील देशों में स्कूल निर्माण, युवाओं को छात्रवृत्तियाँ प्रदान करने और नरसंहार पीड़ितों को मानवीय सहायता पहुँचाने जैसी पहलों में योगदान देती रही है। वाल्टर फ़ाउंडेशन ने इस्तांबुल स्थित बहसेहिर विश्वविद्यालय में रोटरी शांति केंद्र के लिए धन जुटाने हेतु टीआरएफ के साथ साझेदारी की, जिसका उद्घाटन 2025 में होगा।

मार्टी और उनके दिवंगत पति फ्रैंक 2003 में रोटरी क्लब बूथबे हार्बर में शामिल हुए थे। वह ज़ोन 28 और 32 के लिए भी निदेशक-चुने गए हैं।

टीआरएफ के लिए धन जुटाने में रुचि रखने वाली मार्टी ने सकुजी तनाका रोटरी पीस फेलोशिप को समर्थन देने की पहल शुरू की, जिसके माध्यम से रोटरी पीस सेंटरों के लिए 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर की धनराशि जुटाई गई।

मार्टी एक एकेएस सदस्य हैं और पॉल हैरिस सोसाइटी तथा पोलियोप्लस सोसाइटी की सदस्य के रूप में रोटरी का समर्थन करती हैं। वह और फ्रैंक टीआरएफ की लीगेसी सोसाइटी के चार्टर सदस्य भी थे।

फ्रैंक चिंग-हुई होंग

ट्रस्टी 2024-28

रोटरी क्लब पंचियाओ पश्चिम, ताइवान

फ्रैंक हॉर्नग ट्रोजन ऑर्थोडॉन्टिक क्लिनिक के प्रमुख हैं, जिसकी स्थापना उन्होंने 1988 में की थी। वे 1993 में रोटरी क्लब के चार्टर सदस्य के रूप में इसमें शामिल हुए।

टीआरएफ के तकनीकी सलाहकारों के कैडर के सदस्य के रूप में, उन्होंने बाली और ताइवान में कपाल-चेहरे के सर्जनों को आपस में जोड़ा और मंगोलिया तथा नेपाल में एक व्यावसायिक प्रशिक्षण दल का नेतृत्व किया। यह परियोजना बाद में मौखिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए एक वैश्विक अनुदान पहल में परिवर्तित हो गई, जिससे 360 मंगोलियाई स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित प्रदान किया गया। गवर्नर के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान, होंग के मंडल को राष्ट्रपति प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुआ।

उनके साथी, शू-यान चुआंग भी उनके क्लब के सदस्य हैं। यह जोड़ा एकेएस का सदस्य है। होंग को सर्विस एबव सेल्फ अवार्ड और सराहनीय सेवा के लिए प्रशस्ति पत्र प्राप्त हो चुका है।

चुन-वुक ह्यून

ट्रस्टी 2023-27

रोटरी क्लब सियोल-हानसू, कोरिया

चुन-वूक ह्युन, सियोल स्थित किम एंड चांग में वरिष्ठ भागीदार हैं, जो एशिया की सबसे बड़ी कानूनी फर्मों में से एक है, जहां वे 1981 से श्रम और रोजगार अभ्यास समूह के प्रमुख के रूप में काम कर रहे हैं।

वह 1991 में एक चार्टर सदस्य के रूप में अपने क्लब में शामिल हुए।

वह रोटरी फ़ाउंडेशन कोरिया के निदेशक भी हैं।

ह्यून और उनके साथी, जंग-रिम ओह, एकेएस के सदस्य हैं।

गॉर्डन आर मेकिनेली

ट्रस्टी 2024-28

रोटरी क्लब साउथ क्वींसफेरी, स्कॉटलैंड

गॉर्डन मेकिनेली ब्रिटिश पैडोडोंटिक सोसायटी की पूर्वी स्कॉटलैंड शाखा के अध्यक्ष रह चुके हैं और उन्होंने विभिन्न शैक्षणिक पदों पर कार्य किया है

वह 1984 में 26 साल की उम्र में रोटरी में शामिल हुए। उन्होंने 2023-24 में रो ई अध्यक्ष तथा ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड में रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वह और उनकी साथी हीथर, जो रोटरी क्लब बॉर्डरलैंड्स (पासपोर्ट ग्रुप) की सदस्य हैं, पॉल हैरिस फेलो, प्रमुख दानदाता, रोटरी फाउंडेशन के हितैषी और बेक्वेस्ट सोसाइटी के सदस्य हैं।

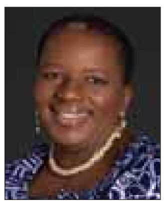

इजोमा पर्ल ओकोरो

ट्रस्टी 2024-28

रोटरी क्लब पोर्ट हरकोर्ट, नाइजीरिया

इजोमा पर्ल ओकोरो को बीमा उद्योग में परिवर्तन, बाज़ार विकास और प्रबंधन प्रयासों का नेतृत्व करने का 30 वर्षों का अनुभव है। अपने पिता की स्मृति में, ओकोरो ने महिला सशक्तिकरण के लिए समर्पित रोमानुस एमेन्यूरो फाउंडेशन फॉर एम्पावरमेंट एंड एजुकेशन डेवलपमेंट की स्थापना की। साथ ही, वह सर एमेका ऑफोर फाउंडेशन के लिए स्वयंसेवा करती हैं।

ओकोरो 1999 में रोटरी में शामिल हुईं। 2019 में उन्हें पोलियो उन्मूलन की लड़ाई का नेतृत्व करने वाली पाँच रोटरी महिलाओं में से एक घोषित किया गया, और पोलियो उन्मूलन के प्रति उनके प्रयासों के लिए उन्हें टीआरएफ से प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ। उन्हें रोटरी का विशिष्ट सेवा पुरस्कार

तथा पोलियो-मुक्त विश्व के लिए क्षेत्रीय सेवा पुरस्कार भी प्रदान किए गए हैं। वह और उनके पति किंग्सले, दोनों ही प्रमुख दानदाता, बेक़ेस्ट सोसाइटी के सदस्य और परोपकारी हैं। वे दोनों, साथ ही उनके दो बच्चे भी, पॉल हैरिस फेलो हैं।

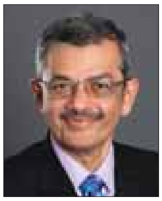

भरत एस पांड्या

ट्रस्टी 2022-26

रोटरी क्लब बोरिवली, भारत

भरत पांड्या एक सामान्य और लेप्रोस्कोपिक सर्जन हैं। वह और उनकी पत्नी माधवी, जो एक स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं, मुंबई में एक निजी अस्पताल के मालिक हैं। पांड्या वर्ष 1989 में एक चार्टर सदस्य के रूप में रोटरी क्लब से जुड़े। मंडल 3140 के गवर्नर के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, उनके मंडल ने टीआरएफ को 20 लाख डॉलर से ज़्यादा का योगदान दिया, जिससे यह 2006-07 में दुनिया भर में सबसे ज़्यादा योगदान देने वाला डिस्ट्रिक्ट बन गया। उन्होंने कई परियोजनाओं का नेतृत्व किया है, जिनमें फाउंडेशन के अनुदान द्वारा वित्त पोषित जल और स्वच्छता परियोजनाएँ शामिल हैं, जिनमें चेक डैम का निर्माण किया गया, जिससे ग्रामीणों को पानी इकट्ठा करने के लिए लंबी दूरी तय न करनी पड़े।

पांड्या रो ई निदेशक, कोषाध्यक्ष, क्षेत्रीय रोटरी इंटरनेशनल सदस्यता समन्वयक और शिक्षण संवाहक रहे हैं और रोटरी की सदस्यता, रणनीतिक योजना, नेतृत्व विकास और सम्मेलन संवर्धन समितियों और इंडिया पोलियोप्लस समिति में कार्यरत रहे हैं। उन्होंने 2023-24 में ट्रस्टी उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वे अपने मंडल की पॉल हैरिस सोसाइटी के चार्टर सदस्य भी हैं।

उन्हें स्वयं से बढ़कर सेवा पुरस्कार, सराहनीय सेवा के लिए प्रशस्ति पत्र तथा रोटरी फाउंडेशन विशिष्ट सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वे और माधवी प्रमुख दानदाता हैं।

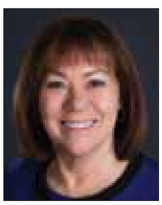

विकी पुलिज़

ट्रस्टी 2025-29

रोटरी क्लब स्पार्क्स, नेवादा

विकी पुलिज़ 1992 में रोटरी क्लब में पहली महिला के रूप में शामिल हुईं। पुलिज़ युवाओं के नेतृत्व विकास में भी रुचि रखती हैं। जब उन्होंने 100 से ज़्यादा रोटरी यूथ लीडरशिप अवार्ड्स प्रतिभागियों को एक संघर्षरत युवती का समर्थन करते देखा, तो रोटरी की शक्ति के बारे में उनका दृष्टिकोण व्यापक हुआ। उन्होंने 2022 में रो ई के लिए पहली युवा सलाहकार परिषद में भी काम किया, जिसमें सभी रोटरी कार्यक्रमों के युवा नेता शामिल थे और जो सीधे रो ई निदेशक मंडल को रिपोर्ट करते थे।

वह रोटरी शांति केंद्र समिति में कार्यरत हैं और उन्होंने इंग्लैंड के ब्रैडफोर्ड तथा इस्तांबुल में शांति केंद्रों के कार्यक्रमों में भाग लिया है।

पुलिज़ और उनके पति टिम, जो स्वयं भी रोटेरियन हैं, रेनो, नेवादा में रहते हैं। वे एकेएस सदस्यों के रूप में रोटरी फाउंडेशन और पॉल हैरिस, बेक़ेस्ट और पोलियोप्लस सोसाइटी के सदस्यों के रूप में सहयोग करते हैं।

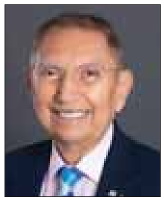

कार्लोस सैंडोवल

ट्रस्टी 2023-27

रोटरी क्लब सैन निकोलस डी लॉस गार्ज़ा, मेक्सिको

कार्लोस सैंडोवल, ऊर्जा क्षेत्र की अग्रणी कंपनी ओरसन कॉर्प के अध्यक्ष हैं और मेक्सिको में एक्सॉन मोबिल के मुख्य वितरक हैं, जिसके देश भर में 270 से ज़्यादा सर्विस स्टेशन और 3,000 से ज़्यादा कर्मचारी हैं। वे बहुराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान बीबीवीए के मेक्सिको प्रभाग के क्षेत्रीय सलाहकार भी हैं।

वह 1975 में रोटरी में शामिल हुए। उन्होंने कई परियोजनाओं में भाग लिया है और उनका नेतृत्व भी किया है। फ़ाउंडेशन के अनुदानों द्वारा समर्थित एक परियोजना ने नशीली दवाओं की लत से उबर चुके लोगों को बेकरी उपकरण और पेशेवर बेकरी प्रशिक्षण प्रदान करने में मदद की है। अपने दिवंगत पुत्र कार्लोस के सम्मान में, उन्होंने टीआरएफ को एक समर्पित दान की स्थापना की जो मेक्सिको, डोमिनिकन गणराज्य और कोलंबिया में महिला उद्यमियों पर केंद्रित सामुदायिक और आर्थिक विकास परियोजनाओं का समर्थन करता है। रोटरी के बाहर उनके परोपकारी कार्यों में ओरसन फ़ाउंडेशन की स्थापना शामिल है, जो एक गैर-लाभकारी संस्था है जो वंचित समूहों के बीच स्वास्थ्य पहलों को बढ़ावा देती है और आपदा स्थितियों में सहायता प्रदान करती है। इसके अलावा, वह मॉन्टेरी क्षेत्र में तीन व्यसन पुनर्वास केंद्रों को प्रायोजित करते हैं और मैक्सिकन रेड क्रॉस की मॉन्टेरी शाखा और ऑटोनॉमस यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूवो लियोन फ़ाउंडेशन के बोर्ड में कार्यरत हैं।

सैंडोवाल को रोटरी फाउंडेशन द्वारा सराहनीय सेवा के लिए प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुआ है। वह और उनकी पत्नी मार्था, ए के एस के सदस्य हैं।

डेनिस जे शोर

ट्रस्टी 2023-27

रोटरी क्लब हॉथोर्न, ऑस्ट्रेलिया

डेनिस शोर एक चार्टर्ड केमिकल इंजीनियर हैं, जिन्होंने न्यू साउथ वेल्स विश्वविद्यालय से स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधियाँ प्राप्त की हैं। वे ऑस्ट्रेलियन पल्प एंड पेपर इंडस्ट्री टेक्निकल एसोसिएशन के फेलो हैं और इस संस्था के विशिष्ट सेवा पुरस्कार से सम्मानित किए जा चुके हैं।

शोर 1980 में रोटरी में शामिल हुए। अपने क्लब के साथ, उन्होंने तिमोर-लेस्ते लोकतांत्रिक गणराज्य में छात्रवृत्तियों और पानी की टंकियों की स्थापना, कंबोडिया में एक अस्पताल, तथा ऑस्ट्रेलिया में मानसिक स्वास्थ्य पहलों से लेकर क्लब की विशिष्ट रोटरी सेफ फैमिलीज़ कार्यक्रम तक, कई परियोजनाओं का समर्थन किया है। शोर, जिन्होंने अपने क्षेत्र में रोटरी फ़ाउंडेशन के अनुदानों को बढ़ाने के लिए ज़मीनी स्तर पर काफ़ी काम किया है, ने 2017 में एक मिलियन डॉलर का रात्रिभोज

भी आयोजित किया था जिससे फ़ाउंडेशन के लिए 35 मिलियन अमेरिकी डॉलर से ज़्यादा की राशि जुटाई गई थी। वह और उनकी पत्नी लिंडा, रोटरी फ़ाउंडेशन के प्रमुख दानदाता और बेक़ेस्ट सोसाइटी के सदस्य हैं। साथ ही, वह डिस्ट्रिक्ट 9800 पॉल हैरिस सोसाइटी और पोलियोप्लस सोसाइटी के सदस्य हैं और टीआरएफ के विशिष्ट सेवा पुरस्कार और सराहनीय सेवा के लिए प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया है।

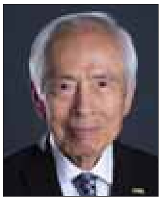

कत्सुहिको तात्सुनो

ट्रस्टी 2025-29

रोटरी क्लब टोक्यो-पश्चिम, जापान

कत्सुहिको तात्सुनो तात्सुनो कॉर्पोरेशन के सीईओ के रूप में कार्यरत हैं। वह 1982 से रोटेरियन हैं। वह जापानी रोटरी समिति के सदस्य थे, जिसने 2011 के तोहोकू भूकंप और सुनामी के बाद पुनर्वास प्रयासों और बचे हुए लोगों को समर्थन प्रदान किया था। यह भूकंप जापान में दर्ज किए गए सबसे शक्तिशाली भूकंपों में से एक था।

वह एकेएस सदस्य, एक बहु पॉल हैरिस फेलो, एक परोपकारी और एक प्रमुख दाता के रूप में टीआरएफ का समर्थन करते हैं।

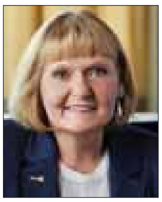

स्टेफ़नी अर्चिक

ट्रस्टी, 2025-29

रोटरी क्लब मैकमरे, पेंसिल्वेनिया

स्टेफ़नी अर्चिक ने 2024-25 में रोटरी की अध्यक्ष के रूप में नेतृत्व किया। उन्होंने रो ई निदेशक और रोटरी फ़ाउंडेशन की ट्रस्टी के साथ-साथ स्ट्रैटेजिक प्लानिंग कमेटी और टीआरएफ की शताब्दी समारोह समिति की अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया है।

1991 से रोटरी सदस्य, अर्चिक ने भारत और नाइजीरिया में राष्ट्रीय टीकाकरण दिवसों सहित कई सेवा परियोजनाओं में भाग लिया है। वियतनाम में, उन्होंने एक स्कूल के निर्माण में मदद के लिए क्लबों के साथ काम किया और डोमिनिकन गणराज्य में वाटर फ़िल्टर स्थापित किए।

अर्चिक ने यूक्रेन में नए रोटरी सदस्यों का मार्गदर्शन किया है और पोलैंड के एक अस्पताल के लिए मैमोग्राफी उपकरण और बायोप्सी यूनिट के लिए फाउंडेशन अनुदान का समन्वय किया है। पोलैंड के क्राकोव स्थित रोटरी क्लब ने अपनी स्मारक पुस्तक में उर्चिक को साम्यवाद-उत्तर पोलैंड में रोटरी के पुनर्जन्म में सहायक एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में उल्लेख किया है। 2025 में उन्होंने इस्तांबुल में एक राष्ट्रपति शांति सम्मेलन की मेजबानी की।

जॉन ह्यूको

महासचिव

रोटरी क्लब कीव, यूक्रेन

उनकी जीवनी के लिए जुलाई 2025 अंक देखें।

©Rotary.org

पॉल हैरिस की प्रतिमा रोटरी क्लब की शोभा बढ़ाएगी

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई मंडल 3090 के पीडीजी बाग सिंह पन्नू और रोटरी क्लब बोकारो स्टील सिटी के सदस्य, क्लब परिसर में रोटरी संस्थापक पॉल हैरिस की प्रतिमा के साथ।

रोटरी के संस्थापक पॉल हैरिस की प्रतिमा को स्थापित करना, उत्तर और भारत के अन्य हिस्सों में रोटरी क्लबों के भ्रमण के दौरान एक परिचित दृश्य बन गया है। कई क्लबों में काले धातु से बनी लगभग तीन फीट ऊंची इस प्रतिमा को स्थापित करने का श्रेय पीडीजी बाग सिंह पन्नू, रो ई मंडल 3090 को जाता है, जो पिछले कुछ वर्षों से इन आकर्षक मूर्तियों को उपहार में दे रहे हैं।

पॉल हैरिस की प्रतिमाएँ रोटरी स्कूलों, अस्पतालों और भारत भर में रोटरी क्लबों के स्वामित्व वाली संस्थाओं में भी स्थापित की गई हैं। पीडीजी पन्नू ने कहा, यह मेरे लिए सम्मान की बात है, क्योंकि पूरी परियोजना का वित्तपोषण मैंने स्वयं किया है। अब तक, हमने उत्तर और पूर्वी भारत के कई रोटरी क्लबों में 284 प्रतिमाएँ स्थापित की हैं, और कुछ कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल और पुडुचेरी में में भी स्थापित की हैं।

हाल ही में उन्होंने बिहार और झारखंड के रो ई मंडल 3250 में क्लबों में छह प्रतिमाएं स्थापित की हैं। उनका लक्ष्य 800 पॉल हैरिस प्रतिमाएं स्थापित करना है, ''ताकि इस महान व्यक्ति को पहचान मिल सके, जिन्होंने दुनिया का पहला सामाजिक सेवा संगठन स्थापित किया था।''

जो क्लब अपने परिसर में रोटरी संस्थापक की प्रतिमा लगाने में रुचि रखते हैं, वे पीडीजी पन्नू से मोबाइल नंबर 98142 21415 पर संपर्क कर सकते हैं। ■

रो ई मंडल 2982

रोटरी क्लब जलकंदपुरम

नए रोटरी वर्ष 2025-26 के पहले दिन, क्लब के सदस्यों ने दिव्यांग बच्चों के एक स्कूल में लगभग 120 बच्चों को दोपहर का भोजन परोसा। स्कूल के अधिकारियों और बच्चों ने स्वादिष्ट भोजन के लिए क्लब को धन्यवाद दिया। बच्चों के मुस्कुराते चेहरों ने रोटेरियनों को गहरी संतुष्टि प्रदान की।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3011

रोटरी क्लब दिल्ली सफदरजंग

एक स्कूल के 250 वंचित बच्चों के लिए दंत स्वच्छता जागरूकता सत्र में वाटर कूलर और शुद्धिकरण प्रणाली स्थापित की गई। स्कूल के अधिकारियों ने पेयजल इकाई स्थापित करने के लिए क्लब को धन्यवाद दिया।

रो ई मंडल 3020

रोटरी क्लब विशाखापट्टनम

अमेरिका की इंट्रक्टर निया और तीन क्लब सदस्यों के सहयोग से आंध्र प्रदेश के अल्लूरी सीताराम राजू जिले के अनंतगिरी मंडल के बूदी गांव में एक आदिवासी स्कूल को 12 बेंचें दान की गईं।

रो ई मंडल 3090

रोटरी क्लब पैट्रन रॉयल

माता प्रेम लता सर्वहितकारी स्कूल, पातड़ां को दस सीलिंग पंखे भेंट किए गए। इससे गर्मी के मौसम में विद्यार्थियों को राहत मिलेगी। इस परियोजना को नारायण गर्ग और जीवन सिंगला ने सहयोग दिया।

रो ई मंडल 3000

रोटरी क्लब मदुरै डाउनटाउन

कन्याकुमारी से मदुरै तक आठ रोटेरियन द्वारा सर्वाइकल कैंसर और पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से *रैली 4 लाइफ* का आयोजन किया गया। इस कार रैली को 60 से अधिक रोटरी क्लबों का समर्थन प्राप्त हुआ। उन्होंने 2,000 कपड़े के थैले और 5,000 पर्चे बांटे। यह रैली रोटरी क्लब तामिरापारानी तिरुनेलवेली के सहयोग से आयोजित की गई थी।

रो ई मंडल 3132

रोटरी क्लब बरसी

क्लब ने ग्रामीण क्षेत्रों में 11 पुस्तक बैंक शुरू किए हैं, जिनमें से प्रत्येक में सभी विधाओं की लगभग 300 पुस्तकें हैं, जिससे 2,500 बच्चे और छात्र लाभान्वित हो रहे हैं क्योंकि वे नियमित रूप से इन केंद्रों से पुस्तकें उधार लेते हैं। इस परियोजना ने इन गांवों में क्लब की सार्वजनिक छवि को बढ़ाया है।

रो ई मंडल 3142

रोटरी क्लब डोंबिवली मिडटाउन

डोंबिवली के शास्त्रीनगर नगर अस्पताल के प्रसूति वार्ड में प्रतिदिन 25 गर्भवती महिलाओं को लंच पैकेट दिए जा रहे हैं। इस वार्षिक परियोजना की निगरानी के लिए नगर निकाय के साथ एक एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए। अन्नदान को रोटेरियन संजय कानिटकर और अन्य दानदाताओं द्वारा समर्थन दिया जाता है।

Rotary PEOPLE OF ACTION

नशा मुक्त भारत के लिए अभियान

किरण ज़ेहरा

इलैयाराजा सुंदरेसन विश्व की सबसे ऊंची मोटरेबल दर्रा उमलिंगा ला पर।

रोटरी क्लब नंगानल्लूर एलीट, रो ई मंडल 3234 के क्लब सेवा निदेशक, इलैयाराजा सुंदरेसन ने चेन्नई से उमलिंग ला तक, जो 19,024 फीट की ऊँचाई पर स्थित, दुनिया का सबसे ऊँचा मोटरेबल दर्रा है, अकेले मोटरसाइकिल से यात्रा पूरी की। भारत के विभिन्न भूभागों से होकर गुज़रती हुई यह 17-दिवसीय, 5,000 किलोमीटर से अधिक की यात्रा, नशे से दूर रहने के महत्व के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से की गई थी।

इस राइड को 9 मई, 2025 को तत्कालीन डीजी एन एस सरवनन ने चेन्नई से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया था। क्लब के अध्यक्ष सतीश राजशेखर कहते हैं, यह मिशन कई क्लबों और रोटेरियन्स के अटूट समर्थन की बदौलत संभव हो पाया, जिन्होंने रास्ते में उनका स्वागत और उत्साहवर्धन किया। ऐसे समय में, जब हमारा देश युवाओं में बढ़ते मादक द्रव्यों के सेवन की चुनौती से जूझ रहा है, इस तरह की पहल युवाओं को अपनी ऊर्जा को अपनी वास्तविक क्षमता की खोज में लगाने के लिए प्रेरित कर सकती है।

सुंदरेसन का पहला पड़ाव हैदराबाद था, जहाँ रोटरी क्लब हैदराबाद नॉर्थ ने रोटरी क्लब कोकापेट एकम, हैदराबाद पर्ल्स, जुबली हिल्स,

चेन्नई में आईपीडीजी एन एस सरवनन (बाएं से तीसरे) ने सुंदरेसन को रवाना किया।

मिडटाउन, हैदराबाद रॉयल्स और हैदराबाद ईस्ट के साथ मिलकर उनके लिए रात्रिभोज और नाश्ते का आयोजन किया। डीजी शरत चौधरी (रो ई निदेशक 3150) ने उन्हें यात्रा के अगले चरण के लिए हरी झंडी दिखाई।

अगले कुछ दिनों में, निज़ामाबाद, नागपुर, झाँसी और फरीदाबाद के क्लबों ने उनका स्वागत और समर्थन किया, जहाँ मेरा गर्मजोशी और आतिथ्य के साथ स्वागत किया गया। डीजी महेश त्रिखा (रो ई निदेशक 3011) ने अपने ज़िले में झंडों के आदान-प्रदान की एक श्रृंखला का समन्वय किया। यह मेरे लिए वास्तव में खास था, क्योंकि इसने रोटरी के जुड़ाव को दर्शाया, वे कहते हैं।

13 मई को वह जम्मू पहुँचे और अगली शाम श्रीनगर पहुँचे। शून्य से नीचे के तापमान और खतरनाक रास्तों से जूझते हुए, मैं लेह पहुँचा और वहाँ के वातावरण के अनुकूल होने के लिए एक दिन रुका। वहाँ से, मैं हान्ले होते हुए उमलिंग ला तक के अंतिम पड़ाव के लिए निकल पड़ा।

> यह यात्रा एक बातचीत की शुरुआत करने का जरिया थी। उपदेश देने के लिए नहीं, बल्कि लोगों को यह याद दिलाने के लिए कि असली नशा तो ज़िंदगी खुद है।
>
> **इलैयाराजा सुंदरेसन**

18 मई को, अपने जन्मदिन पर, बर्फ से ढकी सड़कों पर चलते हुए उमलिंग ला पहुँचने के लिए मैंने अपनी यात्रा पूरी की। यह सबसे कठिन पड़ाव था, लेकिन रास्ते में मिले लोगों, उनकी दयालुता और प्रोत्साहन ने इसे सार्थक बना दिया। हम अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं, लेकिन लोगों का स्नेह सार्वभौमिक है, वह मुस्कुराते हुए कहते हैं।

वापसी यात्रा के दौरान, सिकंदराबाद में, रोटरी क्लब हैदराबाद डेक्कन ने वॉक द टॉक सत्र का आयोजन किया, जिसकी शुरुआत इस चर्चा से हुई कि युवा नशे की ओर क्यों आकर्षित होते हैं। उन्होंने रोटेरियन और रोटरेक्टर्स को सक्रिय पहल के लिए प्रेरित किया। आपको पूरे भारत में घूमने की ज़रूरत नहीं है। बस एक स्कूल से बात करें। किसी पुनर्वास केंद्र में एक बच्चे से मिलें। बस एक कदम ही काफी है।

इस पहल को कई राज्यों के 19 रोटरी क्लबों का समर्थन मिला। जब सुंदरेसन से पूछें कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। ''मैंने कई उज्ज्वल युवा ज़िंदगियों को नशे की वजह से धुँधला होते देखा है। यह सफ़र उपदेश देने के लिए नहीं, बल्कि एक संवाद शुरू करने का एक तरीका था, लोगों को यह याद दिलाने के लिए कि ज़िंदगी ही सबसे बड़ी खुशी है।'' ■

राउरकेला में एक रोटरी चौक

टीम रोटरी न्यूज़

एके एस के सदस्य डी आर पटनायक ने रोटरी क्लब राउरकेला मिड टाउन, रो ई मंडल 3261 द्वारा शहर के प्रवेश द्वार पर निर्मित रोटरी चौक (स्क्वायर) का उद्घाटन किया। राउरकेला स्मार्ट सिटी लिमिटेड के सहयोग से, क्लब ने इस सार्वजनिक छवि परियोजना को हाथ में लिया, जिसके लिए उन्होंने दो साल की योजना बनाने, डिज़ाइन तैयार करने और क्रियान्वयन में समय लगाया।

क्लब सचिव अंकित केडिया ने बताया कि परियोजना स्थल से हर दिन लगभग 15,000 वाहन गुजरते हैं और इसका उद्देश्य सिर्फ एक इमारत बनाना नहीं था, बल्कि रोटरी की उपस्थिति और उद्देश्य का एक दृश्य प्रतीक स्थापित करना था। उन्होंने बताया कि इस रोटरी चौक की एक खासियत जीपीएस-सक्षम एनालॉग घड़ी है, और इसका पूरा डिज़ाइन सौंदर्यपूर्ण आकर्षण को तकनीक के साथ जोड़ता है, जिससे कार्यक्षमता और दृश्यता दोनों सुनिश्चित होती है।

उद्घाटन समारोह में पीडीजी एफ सी मोहंती, मंजीत सिंह अरोड़ा, हरजीत सिंह हुरा, क्लब के अध्यक्ष बिजय दास, सचिव केडिया, परियोजना अध्यक्ष एस के मेहर और राउरकेला के अन्य रोटरी क्लबों के सदस्य उपस्थित थे। ■

बादशाह, बागी और चलती-फिरती किताबें

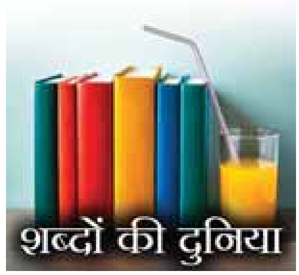

सब अलग हैं, फिर भी सब जुड़े हुए हैं। तीन किताबें – वाकई सबसे बेहतरीन – हमें ये सिखाती हैं कि कैसे।

संध्या राव

शाहरुख खान, चोल साम्राज्य और महामंदी के दौर की तीन अमेरीकी महिलाएं - इन तीनों के बीच क्या समानता हो सकती है? इसे खोजने के लिए आपको मोहर बसु की *लीजेंड आइकन स्टार: शाहरुख खान,* अनिरुद्ध कनिसेट्टी की *लॉर्ड्स ऑफ अर्थ एंड सी: ए हिस्ट्री ऑफ द चोल एम्पायर* और ब्रियाना लाबुस्क की *द बॉक्सकार लाइब्रेरियन* - क्रमशः जीवनी, इतिहास और कथा में गोता लगाना होगा। ये किताबें आपको ले जाएँगी एक हज़ार साल पहले के दक्षिण भारत से लेकर बीसवीं सदी के अमेरिका तक और फिर दोबारा वर्तमान में ले आएंगी। बेशक शाहरुख खान *बादशाह* हैं, चोल शासक बगावती है और किताबें एक चलते-फिरते पुस्तकालय को संदर्भित करती है जो अमेरिका के मोंटाना राज्य के खनन क्षेत्रों तक पहुँचता था।

मैंने बेंगलुरु के केम्पेगौड़ा हवाई अड्डे से शाहरुख खान पर लिखी किताब खरीदी और जैसा कि किसी भी मशहूर हस्ती पर किताब पढ़ते वक्त होता है, मैंने सबसे पहले तस्वीरें देखी, जो बहुत ही शानदार थी। दुख की बात यह है कि इन तस्वीरों के फोटोग्राफर प्रदीप बांदेकर का देहांत इस किताब के प्रकाशित होने से पहले ही हो गया। लेकिन उनके बेटे प्रथमेश की कुछ पंक्तियाँ उनके और शाहरुख़ के रिश्ते को बड़ी खूबसूरती से बयां करती हैं: मैं कभी पूरी तरह यह समझ नहीं पाया कि मेरे पिता को शाहरुख़ ख़ान से इतना लगाव क्यों था। मैं अक्सर उनसे मज़ाक करता: 'आपके पास मेरी नहीं, शाहरुख़ की ज़्यादा तस्वीरें हैं!' पापा के निधन के बाद ही मुझे उनकी इस भावना की गहराई समझ आई - जब खुद शाहरुख़ ने उनकी श्रद्धांजलि सभा में कहा: ''प्रदीप फिल्म इंडस्ट्री में मेरे शुरुआती दोस्तों में से एक थे। जब उन्होंने मेरी पहली तस्वीर ली थी तो मुझे लगा कि मैं एक स्टार हूँ ...''

आमतौर पर बॉलीवुड से जुड़ी ज़्यादातर चीज़ों में एक उत्तर भारतीय झुकाव होता है; लेकिन इस किताब की एक खास बात यह है कि इसकी लेखिका, जो मुंबई में रहती हैं और *मिड डे* की मुख्य संवाददाता (मनोरंजन) हैं, उनका नज़रिया कहीं ज़्यादा कोलकाता-केंद्रित है - उनके कई प्रमुख स्रोत भी कोलकाता से ही हैं। यह बात खुद में शाहरुख़ ख़ान के अखिल भारतीय फैनबेस को और मज़बूती से रेखांकित करती है। मोहर बसु बताती हैं कि वो हमेशा से शाहरुख़ के फैंस से घिरी रही हैं - शुरुआत उनकी माँ से हुई। इससे मुझे मेरी माँ की एक बात याद आती है - जब 1980 के दशक में हम दोनों ने साथ में *फौजी* का एक एपिसोड देखा था। उसमें शाहरुख को देखकर मेरी माँ ने कहा था: ''यह लड़का खास है। बहुत आगे जाएगा, मेरी बात याद रखना।'' आप कह सकते हैं कि यह किताब शाहरुख खान के लिए एक प्रेमगीत है - लेकिन यह केवल प्रशंसा तक सीमित नहीं है। यह उनके करियर की हर सीरीज़, हर फिल्म का विश्लेषण करती है - साथ ही उनके फैंस के प्रति समर्पण, मनोरंजन के प्रति प्रतिबद्धता और महिलाओं के प्रति सम्मान को बार-बार रेखांकित करती है।

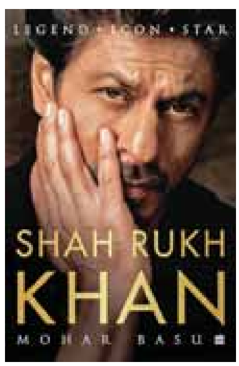

तो आइए अब बात करते हैं बागियों अर्थात इतिहास के असली नायकों की। आज की राजनीतिक व्यवस्था पूरे जोर-शोर से एक भारत, एक लोग, एक भाषा, एक खानपान की अवधारणा को आगे बढ़ा रही है - और ये सब इस दावे के साथ कि भारत अब विश्वगुरु बनने जा रहा है। लेकिन हकीकत ये है कि जब भी ङ्भारतीय इतिहासफ की बात होती है, तो उसका ज़िक्र विंध्याचल और महानदी के उत्तर तक ही सीमित रह जाता है। अगर आप देश के दक्षिण की ओर जाते है तो वहाँ आपका सामना राष्ट्रकूटों, चालुक्यों, कडवों, चेरों, पल्लवों, पांड्यों, होयसलों और इरुक्कुवेलों से होता है और इन सभी पर राज करते हैं, चोल। इतिहासकार अनिरुद्ध कनीसेट्टी ने अपनी किताब में चोल साम्राज्य के इतिहास की परतें खोली हैं। एक ऐसा साम्राज्य जिसने एक समय में बंगाल और गंगा के मैदानों तक उत्तर की ओर विस्तार किया और साथ ही दक्षिण में दक्कन, कावेरी का मैदानी इलाका और यहाँ तक कि श्रीलंका और मालयन प्रायद्वीप तक अपना प्रभुत्व स्थापित किया। अगर आपको लगता है कि चोलों की ताक़त उनकी सैन्य नौसेना में थी, तो आप ग़लत हैं। दरअसल, व्यापार और वाणिज्यिक जहाज़ों

ने ही चोलों का नाम और उनकी प्रसिद्धि समंदर के पार पहुँचाई। यहाँ तक कि उनके नाम पर विदेशों में मंदिर भी बनवाए गए।

कनिसेट्टी लिखते हैं ''इस किताब का प्रमुख विषय यह है कि भारतीय राजा कभी भी किसी शून्य में शासन नहीं करते थे - उन्हें लगातार अपनी शक्ति और अपने शासन के अधिकार को साबित करना पड़ता था। यह बात हर सभ्यता के लिए सच थी और भारत भी इसका अपवाद नहीं था... चोल सम्राटों ने जिस सशक्त, क्षेत्रीय सामूहिकता वाले भूभाग पर अपना प्रभुत्व जमाया, वहाँ उन्हें केवल सैन्य अभियानों तक सीमित नहीं रहना था - बल्कि उन्हें राजनीतिक स्तर पर भी अपनी स्थिति मज़बूत करनी थी। और समकालीन राजनेताओं की तरह ही उन्हें भी मंदिर राजनीतिक प्रचार के लिए उत्कृष्ट लगे...'' इसका सबसे बड़ा उदाहरण है तंजावुर स्थित राजराजेश्वर या बृहदेश्वर मंदिर, जो कभी अपनी ऊँचाई और भव्यता में मिस्र के पिरामिडों के बाद दूसरे स्थान पर आता था। जहाँ पारंपरिक इतिहास की किताबें पाठकों को नामों, तारीखों और तथ्यों के बोझ से थका देती हैं, वहीं कनीसेट्टी की लेखनी में वर्णन, विवरण, कथाएं और वंशों, युद्धों, रणनीतियों को इतनी बारीकी से शोध करके रुचिकर अंदाज़ में प्रस्तुत किया गया है कि उन्हें पढ़ना सरल और आनंददायक बन जाता है। वो केवल पुरुष सम्राटों की कहानी नहीं कहते - बल्कि उन स्त्रियों की भूमिकाओं को भी उजागर करते हैं, जो भले ही शासक न रही हों पर अपने समय में प्रचंड प्रभाव और शक्ति रखती थीं।

उनके प्रभाव का सबसे बड़ा माध्यम क्या था? - मंदिर निर्माण। अनिरुद्ध कनीसेट्टी बताते हैं कि किस तरह नटराज की प्रतिष्ठित कांस्य-मूर्ति को प्रसिद्धि मिली - और इसके पीछे थीं सेम्बियन महादेवी, जो चोल सम्राट गंदरादित्य (949-957) की पत्नी थीं। गंदरादित्य, महान सम्राट राजराजा चोल-ख (985-1016) के पूर्वज थे। थिल्लई (जिसे आज चिदंबरम कहा जाता है) में भगवान की उन्मुक्त नृत्य करती कांस्य मूर्ति से सम्मोहित होकर सेम्बियन महादेवी ने तय किया कि इसी देवता - जिसे वो आडावल्लम (नृत्य का विशेषज्ञ) कहती थीं - की पाषाण मूर्ति स्थापित की जाएगी। उन्होंने इसके लिए नल्लम नामक स्थान पर एक नया मंदिर बनवाया। बाकी तो - इतिहास बन गया। कनीसेट्टी लिखते हैं:

''सेम्बियन महादेवी का उत्थान, नटराज का उत्थान था। और यही था उस नए चोल साम्राज्य की शुरुआत का संकेत।''

चोल साम्राज्यवाद की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता क्या थी? ''चोलों ने निश्चित रूप से विजय अभियान चलाकर नए केंद्र स्थापित किए और आमतौर पर तमिल शैली की संस्थाओं को प्राथमिकता दी। लेकिन वे कभी भी पुरानी संस्कृतियों को मिटाने में रुचि नहीं रखते थे। ऐसा विचार हिंद महासागर की दुनिया के लिए बिल्कुल भी स्वाभाविक नहीं था, जो विविधता से फलता-फूलता और वास्तव में लाभ उठाता था। चोल साम्राज्यवाद ने पहले से मौजूद विविधता के इस चित्र में नए तत्व जोड़े और चोलों के सहयोगियों - चाहे वे द्वीपवासी हों या मुख्यभूमि के निवासी - के लिए नए अवसर प्रदान किए। श्रीलंका का पोलोन्नरुवा जल्द ही एक जीवंत छोटा शहर एक सैन्य और व्यापारिक केंद्र बन गया। यह लंकाइयों (द्वीपीय तमिल और सिंहली भाषी दोनों), साथ ही मुख्यभूमि के तमिल व्यापारी, कारीगर और पुजारियों का घर बन गया।'' कनिसेट्टी हमें शब्दों और चित्रों में चोलों की रचनात्मकता, कल्पनाशीलता, साहस और प्रभाव की याद दिलाते हैं जो मनोरंजक होने के साथ-साथ ज्ञानवर्धक भी है।

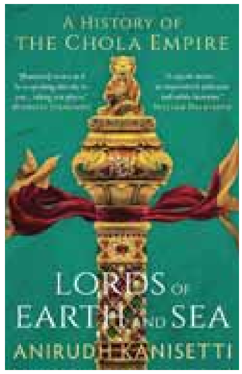

किताबों के ज़रिए ज़िंदगियों को समृद्ध बनाने का काम एक पुस्तकालयाध्यक्ष - रूथ वॉर्डन - ने मोंटाना के मिसूला काउंटी में किया। उन्होंने एक और महिला के साथ मिलकर, जिनका नाम समय के साथ खो गया है, एक होटल में 'लंबरमैन्स लाइब्रेरी' की स्थापना की ताकि मज़दूरों को पढ़ने की सुविधा मिल सके। रूथ ने अनाकोंडा कॉपर माइनिंग कंपनी के केनेथ रॉस से पुस्तक संग्रह के लिए मदद मांगी। उन्हें यह विचार पसंद तो आया लेकिन वह चिंतित थे कि किताबें मज़दूरों के मन में कहीं 'अजीब' खयाल न ले आएं - जैसे आज़ादी, अधिकार, चुनाव और न जाने क्या-क्या! फिर भी, उन्होंने रूथ और उनकी सहयोगी का समर्थन किया। जब उन्होंने देखा कि यह योजना सफल हो रही है तो उन्होंने एक बॉक्सकार (रेल डिब्बा) को अलमारियों से सुसज्जित करवाया ताकि उसमें किताबें रखी जा सकें। और इस तरह, किताबें रेलगाड़ी के ज़रिए पूरे रास्ते इसके पाठकों के लिए उपलब्ध हो गई!

इस कहानी और फोर्ट मिसूला में मौजूद मूल लंबरमैन्स लाइब्रेरी बॉक्सकार से प्रेरित होकर, ब्रिआना लैबुस्केस ने *द बॉक्सकार लाइब्रेरियन* नामक उपन्यास लिखा। इस कहानी में वे तीन साहसी महिलाओं - ऐलिस मनरो, कोलेट ड्यूरांड और मिली लैंग - की ज़िंदगियों को एक साथ पिरोती हैं। कहानी में ऐलिस को यह विचार आता है और वह कोलेट को पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में साथ लाती हैं। यह कहानी रहस्य और रोमांच से भरपूर है और इसमें एक सच्चाई पर आधारित मोड़ भी है - जब मिली की एंट्री होती है, जिसे एक सरकारी कार्यक्रम के ज़रिए जोड़ा गया है, जो 'महामंदी के दौर में परेशान लेकिन रचनात्मक पेशेवरों' के लिए शुरू किया गया था। यह किताब जितनी रोमांचक है उतनी ही एक श्रद्धांजलि भी है उस भूमिका की जो किताबें, कला, रंगमंच और संगीत लोगों को जोड़ने में निभाते हैं। मूलतः यह कहानी रूज़वेल्ट सरकार की दूरदर्शिता को भी स्वीकार करती है, जिसने इस जीवन के मूलभूत सिद्धांत को समझा और उसे सशक्त बनाया।

> आप युगों के बीच की समानताओं को देखकर हैरान रह जाएंगे... बादशाह हैं शाहरुख खान, बागी हैं चोल राजा, और किताबों में उस रेलगाड़ी की लाइब्रेरी का ज़िक्र है जो मोंटाना, अमेरिका की खनन बस्तियों तक पहुंचती थी।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

बच्चों को बनाओ बेहतर इंसान

Go Green

प्रीति मेहरा

स्कूलों को पाठ्यक्रम में जलवायु परिवर्तन शामिल करना चाहिए

अक्सर कहा जाता है कि, आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि यदि हम एक बेहतर विश्व का निर्माण चाहते है, तो हमें अपने बच्चों को ऐसा शिक्षित और सक्षम बनाना होगा कि वे सार्थक परिवर्तन लाने में सक्षम हों, जो हमारे ग्रह और उसके निवासियों के बेहतर स्वास्थ्य और कल्याण में योगदान दें।

हमारे जीवन पर हावी होने वाली अनेक चिंताओं में से एक ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय समस्याओं से जुड़ी है। पिछले कुछ दशकों से, हम धरती माता को मनुष्यों द्वारा पहुँचाए गए नुकसान को कम करने के लिए काम कर रहे हैं। फिर भी यह स्पष्ट है कि अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। हमारे बच्चों के पास इस ग्रह को बचाने के लिए हमारी पीढ़ी से कहीं अधिक योगदान देने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

म उन्हें इसके लिए कैसे तैयार करें? हम पर्यावरण-अनुकूल जीवन जीकर उनके लिए एक आदर्श स्थापित कर सकते हैं। हम घर पर भी बुनियादी पर्यावरणीय नियमों का पालन कर सकते हैं, जैसे कचरे का पृथक्करण, प्लास्टिक का उपयोग कम करना और जल एवं ऊर्जा का संरक्षण। यह सराहनीय है, लेकिन क्या यह पर्याप्त है? पर्यावरणविद् मित्रों का तर्क है कि जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण और जल संरक्षण जैसे विषयों को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करना बच्चों को औपचारिक रूप से शिक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण हो गया है।

चेन्नई स्थित सिटीजन कंज्यूमर एंड सिविक एक्शन ग्रुप (CAG) में पर्यावरण एवं जलवायु कार्रवाई की शोधकर्ता माला बालाजी के अनुसार, जलवायु परिवर्तन को स्कूलों में एक स्वतंत्र विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए, न कि केवल विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का एक अध्याय या सामाजिक अध्ययन में एक साधारण संदर्भ के रूप में। हालाँकि, जब तक यह नया विषय शामिल नहीं हो जाता, स्कूलों को और अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता है और जलवायु परिवर्तन को केवल विश्व पर्यावरण दिवस तक सीमित नहीं रखना चाहिए।

सीएजी वेबसाइट पर अपने ब्लॉग में लिखते हुए, माला कहती हैं: हमें जलवायु शिक्षा को उतनी ही गंभीरता से लेना चाहिए, जितनी वह योग्य है। यह अपने आप में एक विषय होना चाहिए। यदि पूर्ण पाठ्यक्रम एकीकरण में समय लगता है, तो स्कूल इसकी शुरुआत स्कूल के बाद के कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, इको-क्लब या समर्पित कक्षा समय के माध्यम से कर सकते हैं।

CAG ने एक ऐसा जलवायु परिवर्तन पाठ्यक्रम विकसित किया है, जिसे स्कूल अपना सकते हैं, जिसमें इंटरैक्टिव पाठ, वास्तविक दुनिया के उदाहरण और

व्यावहारिक गतिविधियाँ शामिल हैं। माला लिखती हैं, एक स्वतंत्र पाठ्यक्रम का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं है, बल्कि कक्षा में सीखने की प्रक्रिया को रोज़मर्रा की ज़िंदगी से जोड़कर, कार्रवाई को प्रेरित करना और उसमें शामिल करना है। ऐसा करके, हम छात्रों को न केवल जलवायु संकट को समझने के लिए, बल्कि कम उम्र में ही समाधान का हिस्सा बनने के लिए भी सशक्त बना सकते हैं।

CAG द्वारा विकसित पाठ्यक्रम सुझाव देता है कि स्कूलों को छात्रों को जलवायु परिवर्तन की जटिल वैज्ञानिक व्याख्याओं के माध्यम से नहीं, बल्कि उनके दैनिक जीवन में इसकी प्रासंगिकता के आधार पर शिक्षित करना चाहिए। इस प्रकार, भीषण गर्मी, वायु प्रदूषण और प्रतिकूल मौसम की घटनाएँ ऐसे मुद्दे हैं जिनका उन्होंने सामना किया होगा और जिनसे वे खुद को जोड़ सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र इस बात से अवगत होंगे कि वर्षा के बदलते पैटर्न खेती को कैसे प्रभावित करते हैं। माला आगे कहती हैं: जब छात्र अपने आसपास हो रहे इन परिवर्तनों को देखते हैं, तो जलवायु परिवर्तन एक दूरगामी सिद्धांत के बजाय एक ठोस मुद्दा बन जाता है।

CAG पाठ्यक्रम छात्रों की सक्रिय भागीदारी वाली गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण पर ज़ोर देता है, जिससे सीखने की प्रक्रिया बोझिल नहीं, बल्कि आनंददायक और प्रभावशाली बन जाती है। इसी दिशा में दिल्ली स्थित सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (CSE) द्वारा विकसित ग्रीन स्कूल्स कार्यक्रम में भी लगभग यही बात कही गई है, जिसका उद्देश्य स्कूलों में पर्यावरण शिक्षा और सतत व्यवहारों को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम स्कूलों को अपने परिसरों को सततता के बारे में सीखने के लिए जीवंत प्रयोगशालाओं के रूप में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

जलवायु परिवर्तन और उससे जुड़ी चिंताओं पर केंद्रित बच्चों की किताबें लिखने वाले लेखक इस बात का स्पष्ट संकेत हैं कि युवा पीढ़ी इन मुद्दों के बारे में जानने के लिए उत्सुक है। पर्यावरण पर केंद्रित एक पोर्टल, *मोंगाबे,* की रिपोर्ट के अनुसार, बच्चों के साहित्य में पर्यावरण और जलवायु विषयों की लोकप्रियता बढ़ रही है और ऐसा लगता है कि इसका उद्देश्य जटिल विषयों को उठाते हुए उनमें आशा और हास्य का संचार करना है।

पर्यावरण पर आधारित बाल साहित्य का वास्तविक विस्फोट लगभग सात साल पहले रूपल केवल्या की पुस्तक *द लिटिल रेनमेकर* से शुरू हुआ था। यह कहानी एक दशक तक बिना बारिश वाली दुनिया और दस साल की अनुष्का द्वारा अपने दादा की फिर से बारिश देखने की इच्छा पूरी करने के लिए वैज्ञानिकों और जादूगरों की मदद लेने की कहानी है। इसके बाद इस विषय पर कई प्रभावशाली पुस्तकें सामने आईं, जैसे सिद्धार्थ शर्मा की *ईयर ऑफ़ द वीड्स,* बिजल वच्छराजानी की *ए क्लाउड कॉल्ड भूरा,* रंजीत लाल की *बुग्गी, ब्रिज एंड बिग जिन्न,* और नंदिता दा कुन्हा की *द मिरेकल ऑन सुंदरबाग स्ट्रीट।*

भारत में ग्रीन लिटरेचर फेस्टिवल (जीएलएफ) की प्रकाशक, लेखिका और सह-संस्थापक मेघा गुप्ता ने *मोंगाबे* को बताया कि इस विधा में पुस्तकों की संख्या और विविधता बढ़ रही है। 2024 तक जीएलएफ में बच्चों के कार्यक्रम का संचालन करने वाली गुप्ता ने कहा, हमने 2020 में 32-33 पुस्तकों के साथ शुरुआत की थी और 2024 में 40 से ज़्यादा नई पुस्तकें प्रकाशित करने में सफल रहे। यह भारत में बच्चों की पुस्तकों के अंग्रेज़ी भाषा के प्रकाशकों पर आधारित है और इसमें क्षेत्रीय साहित्य शामिल नहीं है।

जलवायु और पर्यावरण से जुड़ी चिंताओं पर केंद्रित बच्चों की किताबों में बढ़ती रुचि अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के जलवायु परिवर्तन एवं स्थायित्व केंद्र में भी दिखाई देती है, जो बच्चों के लिए प्रकृति लेखन नामक एक न्यूज़लेटर चलाता है, जिसमें इस विधा की नई किताबों पर चर्चा और समीक्षा की जाती है। इस चर्चा में लेखकों को भी शामिल किया जाता है।

जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर युवाओं को शामिल करने और उनसे जुड़ने की ज़रूरत को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। सीएसई द्वारा पिछले साल 1,931 स्कूली और कॉलेज के छात्रों के बीच किए गए एक सर्वेक्षण से पता चला कि 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले व्यवधानों से सीधे तौर पर प्रभावित हुए हैं। उनके लिए, पर्यावरणीय चिंता कोई दूर की संभावना नहीं, बल्कि एक तात्कालिक वास्तविकता है।

1973 से 2023 तक के आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि भारत के लगभग 85 प्रतिशत मंडल बाढ़, सूखे, चक्रवातों और लू के प्रति संवेदनशील हैं। इसके अतिरिक्त, इनमें से 45 प्रतिशत मंडलों में जलवायु परिवर्तन की प्रवृत्ति देखी गई है, जहाँ पहले बाढ़-प्रवण क्षेत्र अब सूखा-प्रवण या कम वर्षा वाले क्षेत्र बन गए हैं, और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा हो रही है। इन बदलती परिस्थितियों को देखते हुए, हमारे बच्चों का यह अधिकार है कि वे आने वाली चुनौतियों को समझें और उनका सामना करने के लिए तैयार हों। उन्हें यह भी सीखने की ज़रूरत है कि वे धरती माता को हो रहे नुकसान को कैसे कम कर सकते हैं।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

ट्रैम्पोलिन एक प्रभावी फिटनेस उपकरण

भरत और शालन सवुर

मफिट फॉर लाइफफ के अग्रदूत और लेखक हार्वे और मैरिलिन डायमंड, रिबाउंडर की इस प्रकार प्रशंसा करते हैं: 'प्रतिरोधी रिबाउंडिंग संभवतः फिटनेस आंदोलन में क्रांति ला सकती है... न केवल विश्व स्तरीय एथलीटों के लिए, बल्कि फिटनेस में रुचि रखने वाले हर व्यक्ति के लिए, सबसे कमजोर से लेकर सबसे मजबूत तक, और सबसे अनाड़ी से लेकर सबसे तेज पैरों वाले व्यक्ति तक।'

अमेरिकी नागरिक जॉर्ज निसान ने 1936 में पहला रिबाउंडर डिज़ाइन किया था। उन्हें इसकी प्रेरणा 'बिग टॉप' (अमेरिकी सर्कस) के तहत ट्रैपीज़ कलाकारों से मिली, जो अपने करतब का समापन कूदते और उछलते हुए करते थे, जो उनके करतब का चरमोत्कर्ष होता था। इस आविष्कार के कुछ ही समय बाद, अमेरिकी सशस्त्र बलों ने इसे अपने सैनिकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल कर लिया, ताकि वे अपने युद्ध प्रयासों के लिए आवश्यक महवाई दिशा ज्ञान और मोटर कौशल प्राप्त कर सकेंफ।

अंतरिक्ष की सर्वोच्च संस्था नासा के अनुसार, रीबाउंडर जॉगिंग की तुलना में 68 प्रतिशत अधिक प्रभावी है।

द्वितीय विश्व युद्ध के दशकों बाद, तत्कालीन सोवियत संघ ने 1950 के दशक के अंत में अंतरिक्ष में उपग्रहों को प्रक्षेपित करके इस चुनौती का भार उठाया। इसके प्रत्युत्तर में, अपने राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी के दृष्टिकोण से प्रेरित होकर, अमेरिकियों ने उनके 'मिशन मून' को पूरा किया। पृथ्वी के एकमात्र उपग्रह पर अपना झंडा फहराने वाला पहला देश बना। 'मानवता के लिए पहला कदम, मानव जाति के लिए एक बड़ी छलांग,' अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग ने घोषणा की, जो चंद्रमा पर कदम रखने वाले पहले मानव बने। यह अब इतिहास चुकी है। हालाँकि, यह बात ज़्यादातर अज्ञात है कि अंतरिक्ष यात्री हड्डियों और मांसपेशियों को मज़बूत बनाए रखने के लिए, अपने अंतरिक्ष यान की दीवारों और फर्श पर खुद को पटककर व्यायाम करते हैं।

गुरुत्वाकर्षण (जी-फोर्स) पृथ्वी पर एक महान समतुलक शक्ति है। यह हमारे ब्रह्मांड को स्थिर बनाए रखती है। तारे, ग्रह आदि अपनी जगह पर स्थिर रहते हैं। हर एक का अपना जी-फोर्स होता है। बाह्य अंतरिक्ष एक दिव्य रचना द्वारा निर्मित है जो वस्तुओं को उनकी निर्धारित सार्वभौमिक यातायात लेन और रेखा पर बाध्य करती है। गुरुत्वाकर्षण का धन्यवाद। आपके पास रिबाउंडर के साथ जी-फोर्स शक्ति है। आइए जानें कैसे।

यह लगभग एकमात्र उपकरण है जो क्षैतिज प्रवाह को चुनौती देकर उसे ऊर्ध्वाधर प्रवाह में परिवर्तित करता है। अपने नीचे रिबाउंडर के साथ, आप अपने शरीर को सचमुच छलांगों और सीमाओं से बेहतर बना सकते हैं। जैसे-जैसे आप इसे ऊपर उठाते हैं, आपको इसका एहसास होता है - यह एकमात्र व्यायाम उपकरण है जो तीन प्राकृतिक शक्तियों - त्वरण (शुरुआत), मंदन (विराम) और गुरुत्वाकर्षण का उपयोग करता है, अब ऊर्ध्वाधर तल तक पहुँच जाता है। रिबाउंडर पर एक बार उतरते ही, आपके शरीर की प्रत्येक कोशिका इन तीनों प्राकृतिक शक्तियों से सक्रिय रूप से प्रेरित होती है। अवचेतन मन इन तीन शक्तियों में अंतर नहीं करता। वह इन्हें मतीन प्रकार की गुरुत्वाकर्षण शक्तियाँफ मानता है और कोशिकाओं को सकारात्मक रूप से अनुकूलित करने के संकेत देता है।

सीधे शब्दों में कहें तो, रिबाउंडर एक ऐसी चटाई है जो स्प्रिंग्स और चार पैरों के एक सेट पर टिकी और लटकी होती है। अमेरिका के ओक्लाहोमा विश्वविद्यालय के अनुसार, रिबाउंडर पर उछलने से उत्पन्न होने वाले झटकों का 87 प्रतिशत भाग यह सोख लेता है। वहीं, अंतरिक्ष अनुसंधान में अग्रणी संस्था नासा के अनुसार, रिबाउंडर पर व्यायाम जॉगिंग की तुलना में 68 प्रतिशत अधिक प्रभावी है। वास्तव में, रिबाउंडिंग एक संपूर्ण सर्वांगीण क्रिया है, जो आपके आंतरिक अंगों, शिराओं और धमनियों की कोशिकाओं को उत्तेजित करती है। यह न केवल रक्त संचार को बढ़ावा देती है, बल्कि आपके लसीका तंत्र को भी स्वच्छ करती है, साथ ही हड्डियों और मांसपेशियों को भी सशक्त बनाती है। जैसा कि पहले बताया गया है, ऊर्ध्वाधर स्थिति के साथ इसका सरेखण इसका अनूठा सुरक्षा गुण है।

गठिया को निष्क्रिय करना - शरीर की श्वेत रक्त कोशिकाएँ, घुसपैठिए को परास्त करने के लिए, प्रभावित जोड़ की ओर दौड़ पड़ती हैं। परिणामस्वरूप उत्पन्न विषाक्त पदार्थ और मृत श्वेत कोशिकाओं का ढेर, सूजन वाले जोड़ में मदोस्ताना आगफ में फँस जाते हैं, और दर्द से असहाय हो चुके घायल जोड़ में फँस जाते हैं। हल्की-सी स्वास्थ्य उछाल बाधा को दूर करने में मदद करती है, और नई श्वेत कोशिकाओं वाली शक्ति को बाहर निकलने का रास्ता प्रदान करती है।

रीबाउंडर व्यायाम ऑस्टियोपोरोसिस, गठिया और मूत्र असंयम को नियंत्रित करने में मदद करते हैं।

ऑस्टियोपोरोसिस को दूर भगाना - इस स्थिति के कई कारण हो सकते हैं, जिनमें से एक यह है कि हड्डियों की कोशिकाएँ अपनी क्षमता से अधिक खनिजों को जमा या अवशोषित कर लेती हैं। (जैसा कि पहले बताया गया है), त्वरण, मंदन और गुरुत्वाकर्षण की बढ़ती खिंचाव शक्ति हड्डियों की कोशिकाओं को अधिक कुशलता से कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। रिबाउंडर व्यायाम सुनिश्चित करते हैं कि आपकी हड्डियाँ घनी और मज़बूत बनें। यदि आप पहले से ही ऑस्टियोपोरोसिस से पीड़ित हैं, तो अपने चिकित्सक से सलाह लें। डॉक्टर आपको आहार में बदलाव करने की सलाह देंगे। रिबाउंडिंग के बारे में उनसे बात करें।

असंयम/मूत्राशय नियंत्रण - इस स्थिति से पीड़ित व्यक्ति के लिए मूत्र त्याग करना या उसे रोकना कोई विकल्प नहीं होता। यह 'प्रकृति का आह्वान' है। यह समस्या कई बार तीस की उम्र में ही शुरू हो सकती है। इसका समाधान सरल है। बस उन स्फिंक्टर मांसपेशियों को मज़बूत करना होता है जो मूत्राशय से मूत्र के प्रवाह को नियंत्रित करती हैं। बेहतर परिणामों के लिए अपने रिबाउंडर व्यायाम को दिन में कई छोटे सत्रों में बाँटें।

पी एस: ट्रैम्पोलिन 100 डेकाथलॉन और अमेज़न पर लगभग ₹3,000 में उपलब्ध है।

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

रो ई मंडल 3160

रोटरी क्लब गुलबर्गा

क्लब के सदस्य चेतन गंगजी ने अपने दिवंगत पिता लक्ष्मणसा गंगजी की याद में कलबुर्गी एजुकेशन सोसाइटी की इकाई, बीटीएस प्राइमरी और हाई स्कूल को क्लब के अध्यक्ष चनबसप्पा समाने की मौजूदगी में एक वाटर प्यूरीफायर (₹40,000) दान किया। यह सोसाइटी क्लब द्वारा प्रायोजित है।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3192

रोटरी क्लब बेंगलुरु हेरिटेज नॉर्थ

दो आंगनवाड़ियों का जीर्णोद्धार (₹ 3 लाख) किया गया और उन्हें बच्चों की मौजूदगी में शिक्षकों को सौंपा गया। लाभार्थियों ने क्लब का धन्यवाद किया, क्योंकि बाल देखभाल केंद्रों की दीवारें अब वन्यजीवों की तस्वीरों से सजी हुई थीं और चमक रही थीं।

रो ई मंडल 3211

रोटरी क्लब अलेप्पी ग्रेटर

अलप्पुळा जिले के पुलिस प्रमुख मोहनचंद्रन ने समुद्र तट पर नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ एक अभियान का उद्घाटन किया। इस अभियान के दौरान रोटेरियन ने जनता के बीच मादक पदार्थों की लत से बचने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की आवश्यकता पर जागरूकता फैलाई। इस पहल ने पड़ोस में रोटरी की सार्वजनिक छवि को और सशक्त किया।

रो ई मंडल 3212

रोटरी क्लब रामनाद

क्लब की चल रही परियोजना के तहत रामनाथपुरम के सरकारी अस्पताल से जुड़े मंडल टीबी केंद्र में टीबी रोगियों को पोषण पूरक बैग वितरित किए गए। इस अवसर पर क्लब के अध्यक्ष जगदेश एस, सचिव बालामुरुगन, पूर्व एजी गीता रमेशबाबू और उमरानी उपस्थित थे।

रो ई मंडल 3191

रोटरी क्लब बेंगलुरु मेट्रो

टीवीएम सिग्नलिंग एंड ट्रांसपोर्टेशन सिस्टम्स की सी एस आर फंडिंग से चिक्काजाला के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को एक एम्बुलेंस दान की गई। इस हैंडओवर समारोह में कंपनी के एमडी वेंकटेश ए, मीनुकुंटे, पंचायत के अध्यक्ष वसंत कुमार और क्लब के अध्यक्ष अख्तर अली उपस्थित थे।

रो ई मंडल 3262

रोटरी क्लब भुवनेश्वर मीडोज़

परियोजना जल छत्र के तहत गर्मी से राहत देने के लिए एक वाटर बूथ लगाया गया, जहाँ 650 राहगीरों को ठंडा पीने का पानी और शीतल पेय उपलब्ध कराया गया। इस अवसर पर आईपीडीजी यज्ञांसेस महापात्र, पीडीजी अश्विनी कर, और क्लब अध्यक्ष बुद्ध महापात्र उपस्थित थे।

रो ई मंडल 3261

रोटरी ई-क्लब ऑफ बिलासपुर यूनाइटेड

सर्दियों के दौरान वंचित समुदायों के बच्चों को रोशनी और गर्मी प्रदान करने के लिए उन्हें घर के बल्ब और स्वेटर वितरित किए गए। इस परियोजना ने पड़ोस में क्लब की सार्वजनिक छवि बेहतर हुई।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

करूर अस्पताल के लिए एक उच्च तकनीक वाला उपकरण

रो ई मंडल 3000 के रोटरी क्लब करूर ने करूर के सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में एक उच्च गति वाली स्वचालित रासायनिक विश्लेषक मशीन स्थापित की है। यह मशीन, पीआरआईडी सी भास्कर द्वारा टीआरएफ़ को दिए गए 50,000 डॉलर के प्रत्यक्ष दान के माध्यम से स्थापित की गई है। परियोजना के मुख्य संपर्क के रवींद्रकुमार ने बताया कि ₹40.12 लाख की लागत वाली यह मशीन एक घंटे में 800 मूत्र और रक्त परीक्षण कर सकती है और 125 विभिन्न प्रकार के रासायनिक विश्लेषण कर सकती है।

पीआरआईडी सी भास्कर, रोटरी क्लब करूर के सदस्यों के साथ, अस्पताल में केमिकल एनालाइज़र स्थापित करने के बाद।

एचपीवी टीकाकरण अभियान

रोटरी क्लब गुवाहाटी लुइट, रो ई मंडल 3240, ने एक प्रमुख सर्वाइकल कैंसर रोकथाम अभियान शुरू किया है, जिसके तहत 144 लाभार्थियों को एचपीवी टीके लगाए जा रहे हैं, जिनमें 15 साल से कम उम्र की लड़कियाँ और वंचित समुदायों की महिलाएँ शामिल हैं। SERUM संस्थान और स्थानीय अस्पतालों द्वारा समर्थित, इस पहल में टीकाकरण शिविरों के साथ जागरूकता सत्र भी शामिल हैं ताकि मिथकों से निपटा जा सके और समय रहते रोकथाम को बढ़ावा दिया जा सके।

एक लाभार्थी को टीका लगाया जा रहा है।

जीविका के लिए पिंजरा मछली पालन

रोटरी क्लब कुमटा, रो ई मंडल 3170, ने रोटरी क्लब विराटनगर फ्यूजन, रो ई मंडल 3292, नेपाल के सहयोग से तटीय कर्नाटक में आजीविका बहाल करने के लिए एक वैश्विक अनुदान-समर्थित पिंजरा मछली पालन परियोजना शुरू की है। विधवाओं, युवाओं और हाशिए पर पड़े मछुआरों को लक्षित करते हुए, यह पहल स्थायी जलीय कृषि के लिए प्रशिक्षण, उपकरण और बाज़ार संपर्क प्रदान करती है।

बाएं से दूसरे: ज़ोनल कोऑर्डिनेटर जयश्री कामत, पद्मजा और आईपीडीजी शरद पाई, डीआरएफसी विनय पाई रायकर और क्लब के पूर्व अध्यक्ष अतुल कामत - प्रोजेक्ट के शुभारंभ के अवसर पर।

डॉक्टरों और चार्टर्ड अकाउंटेंट्स को सम्मानित किया गया

रो ई मंडल 3090 के महानिदेशक भूपेश मेहता ने 1 जुलाई को रोटरी क्लब फ़ाज़िल्का द्वारा आयोजित एक रंगारंग कार्यक्रम में डॉक्टरों और चार्टर्ड अकाउंटेंट्स को इस विशेष अवसर पर सम्मानित किया। उन्होंने कहा, दोनों पेशेवर आज हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। हम उनके समर्पण को सलाम करते हैं और उन्हें सम्मानित करते हैं। क्लब ने राष्ट्र के प्रति उनकी सेवा के लिए बीएसएफ़ अधिकारियों को भी सम्मानित किया।

डीजी भूपेश मेहता (बीच में) और क्लब अध्यक्ष अनमोल ग्रोवर (बाएं से तीसरे) सम्मान समारोह में।

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से

हर रोटेरियन, हर वर्ष

आपका योगदान दि रोटरी फाउंडेशन के एनुअल फंड को सशक्त बनाता है, जिससे रोटरी सदस्य ज़मीनी स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक सकारात्मक बदलाव लाने के लिए सक्रिय हो पाते हैं।

जब आप एनुअल फंड - SHARE में दान करते हैं, तो आपका योगदान अनुदानों में परिवर्तित हो जाता है, जो स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं, छात्रवृत्तियों और अन्य पहलों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

TRF में योगदान से संबंधित विवरण के लिए देखें: *rotary.org/donate*

एनुअल फंड के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखें: *my.rotary.org/annual-fund*

ज़ोन 4, 5, 6 और 7 - द रोटरी फाउंडेशन ज़ोनल टीम 2025-26

Zone-4		Zone-5	Zone-6	Zone-7
Designation	**Name**	**Name**	**Name**	**Name**
RRFC	N Subramanian	Gowri Rajan	Debashish Das	Surendra Reddy Bommireddy
E/MGA	Ashish Ajmera	Aruljothi Karthikeyan	Ajay Agarwal	Sam Movva
EPNC	Ashes Ganguly	V R Muthu	Uttam Ganguli	Girish Gune
ARRFC	Ashok Agarwal	Chandra Bob Calidas	Anand Jhunjhunuwala	Gaurish Dhond
ARRFC	Sanjiv Mehra	Sridhar Jagannathan	Pawan Agarwal	Thirupathi Naidu
ARRFC	Sandip Agarwala	Zameer Pasha	Manjit Singh Arora	Krishna Shetty
ARRFC	Kailash Jethani	S Balaji	Sudip Mukherjee	Deepak Pophale
ARRFC	Gustad Anklesaria	Pubudu De Zoysa	Rajan Gandotra	Bhaskar Ram
ARRFC	Shrikant Indani	Vijaykumar Thandassery R		
AEPNC	Manish Gyani	T Shanmugasundaram	Ashok Gupta	Harish Motwani
AEPNC	Arun Mongia	Gunasekaran	V N Singh	Jagadeeswararao Maddu
AEPNC	Sangita Shukla	A L Chokkalingam	Pratim Banerjee	Muralidharan Nagarajan
AEPNC	Sarthika Narang	P Bharanidharan	Saurab Deb Roy	Nasir Huseni
AEPNC	Namrata Suri	S Sundararajan	K S Rajan	Deepak S
AEPNC	Sudhir Mangla	Scaria Jose Kattor		
AE/MGA	Dhiran Datta	Balaji Babu	Bipin Chachan	Satish Madhavan
AE/MGA	Chetan Desai	J K N Palani	Rajib Pokhrel	Sharat Babu Chilukuri
AE/MGA	Tushar V Shah	G Chandramohan	Shashank Rastogi	Pramod Sasikant Parikh
AE/MGA	Sharat Jain	Rajmohan Nair	Chandu Agarwal	Vinay Pai Raikar
AE/MGA	Maulin M Patel	J Jesiah Vilavarayar	Krishnendu Gupta	B Rajaram Bhat
AE/MGA	Sanjay Malviya	Dhamodharan		

अंग्रेजी बोलने वाली आया चाहिए!

LBW

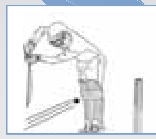

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

भारत में एक विशेष वर्ग ऐसा है जो अपने बच्चों की देखभाल के लिए आया (नेनी) पर निर्भर रहना पसंद करता है। इंग्लैंड में उन्हें गवर्नेस, भारत में आया और पूर्वी एशिया में अम्मा कहा जाता है। हालाँकि, यह निर्भरता हमेशा से नहीं थी। उन दिनों जब लोगों की आवाजाही सीमित थी और संयुक्त परिवार सामान्य व्यवस्था थी तब बच्चों की देखभाल को लेकर कोई चिंता नहीं होती थी। घर में पहले से ही कई रिश्तेदार होते थे, जिनके अपने बच्चे भी होते थे - इस तरह हर समय कोई न कोई बच्चों के आस-पास मौजूद रहता था।

लेकिन समय के साथ-साथ आंतरिक प्रवास ने संयुक्त परिवारों की परंपरा को धीरे-धीरे तोड़ दिया।

हालाँकि, तब भी बच्चों की देखभाल होती रही क्योंकि आमतौर पर पति काम पर जाते थे और पत्नी घर पर ही रहती थी। फिर आया दोहरी आमदनी वाले परिवारों का दौर जहाँ पति और पत्नी दोनों ही नौकरी करने लगे। फिर जरूरत पड़ी किसी ऐसे व्यक्ति की जो तब तक बच्चों की देखभाल कर सके जब तक वे नर्सरी या स्कूल जाने लायक न हो जाएँ। फिर लगभग 25 साल पहले शुरू हुई NRI परिघटना - जब कोई दंपति विदेश से छुट्टियाँ मनाने भारत आता था। विदेश में बच्चों से एक पल की भी राहत न मिलने के कारण भारत आते ही वे पूरी तरह बच्चों से मुक्त रहना चाहते थे। यहाँ बच्चों के बुजुर्ग दादा-दादी/नाना-नानी तो होते ही थे, लेकिन बढ़ती उम्र के कारण उनकी भी सीमाएँ होती थीं। इस तरह जो कभी भारत में सिर्फ अंग्रेज़ साहबों की आदत मानी जाती थी - आया या नैनी रखना - वह अब आम बात बन गई है।

आज हर कोई बच्चों की देखभाल के लिए आया रखता है।

सब कुछ बहुत सीधा-सादा लगता है, है ना? लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। भारत एक विशाल देश है और इसमें अनेक भाषाएं हैं। फिर, पुराने दिनों में कम आय वर्ग में आंतरिक प्रवास बहुत कम होता था, विशेष रूप से महिला प्रवास। लेकिन धीरे-धीरे यह स्थिति बदलने लगी और पिछले दो दशकों में पुरुषों और महिलाओं दोनों का आंतरिक प्रवास तेज़ी से बढ़ा हैं।

अब इससे नेनियों (आया) की उपलब्धता तो बढ़ गई - जो कि अच्छी बात है, है ना? खैर इसका जवाब, हां और ना - दोनों है। असल समस्या है भाषा की। जैसे ब्रिटिश राज के समय में आया को अंग्रेज़ बच्चों से संवाद करने में मुश्किल होती थी, आज वही समस्या भारतीय नेनियों के सामने है। मान लीजिए, झारखंड की एक लड़की - जो इन सेवाओं का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता राज्य बन चुका है - किसी ऐसे बच्चे की देखभाल कर रही है, जिसके माता-पिता किसी और राज्य से हैं तो वह उस बच्चे से कैसे बात करेगी? यह स्थिति तब और भी जटिल हो जाती है जब माता-पिता दोनों अलग-अलग राज्यों से होते हैं क्योंकि कई बार तो वे खुद भी एक-दूसरे से ढंग से बात नहीं कर पाते - बच्चों और आया की तो बात ही छोड़ दीजिए। ऐसे में घर में हर कोई अंग्रेज़ी बोलता है - सिवाय उस नैनी या आया के। यह कोई 'टॉवर ऑफ बाबेल' नहीं है पर उससे कम भी नहीं है।

इसलिए अब ऐसी नेनियों (आया) की बहुत मांग है जो कम से कम अंग्रेज़ी समझ तो सकें, भले ही बोल न पाएं। उनकी रोज़ की फीस ₹1,200 से 2,000 तक होती है। स्वाभाविक रूप से उन्हें रहने के लिए एक कमरा चाहिए होता है जिसमें अलग बाथरूम हो। कुछ तो कमरे में एसी और टीवी तक की मांग करती हैं। इसके साथ ही उन्हें दिन में चार बार का भोजन भी चाहिए होता है। कुल मिलाकर यह एक अच्छी-खासी रकम बन जाती है लेकिन ज्यादा महंगी नहीं लगती - खासकर अगर आप एक NRI हैं। जो खर्च भारत में एक महीने में होता है, उतना पैसा वे विदेश में सिर्फ तीन-चार दिन के लिए चार घंटे की बेबीसिटर पर ही खर्च कर देते है।

आयु सीमा के दूसरे छोर पर आते हैं बुज़ुर्ग - उन्हें भी देखभाल की आवश्यकता होती है और उनके लिए भी नैनी की तरह ही लोग रखे जाते हैं, जिन्हें 'अटेंडेंट' कहा जाता है। लेकिन किसी कारणवश इन अटेंडेंट्स की मांग होने के बावजूद, उनकी फीस नैनियों जितनी नहीं होती जबकि उनका काम तो लगभग वैसा ही होता है - कभी-कभी तो उनकी मांग ज़्यादा होती है। और तो और अटेंडेंट्स के पास आमतौर पर बुनियादी नर्सिंग का प्रशिक्षण भी होता है, जो नैनियों के पास नहीं होता। युवा और बुज़ुर्ग - दोनों ओर से बढ़ती इस मांग ने एक पूरी एजेंसी इंडस्ट्री को जन्म दिया है। एजेंट हर नियुक्ति पर नैनी या अटेंडेंट की मासिक सैलरी का 15प्रतिशत कमीशन लेते हैं। अर्थात् अब आप एक नहीं, दो लोगों को भुगतान कर रहे होते हैं।

यहीं पर बाज़ार अपना असली रंग दिखाता है। सेवा प्रदाता एजेंट को बीच रास्ते में छोड़ देते हैं, इसलिए अब एजेंट अग्रिम शुल्क की मांग करते हैं। जैसा कि मैंने कहा, यह बहुत महंगा सौदा बन चुका है। ■

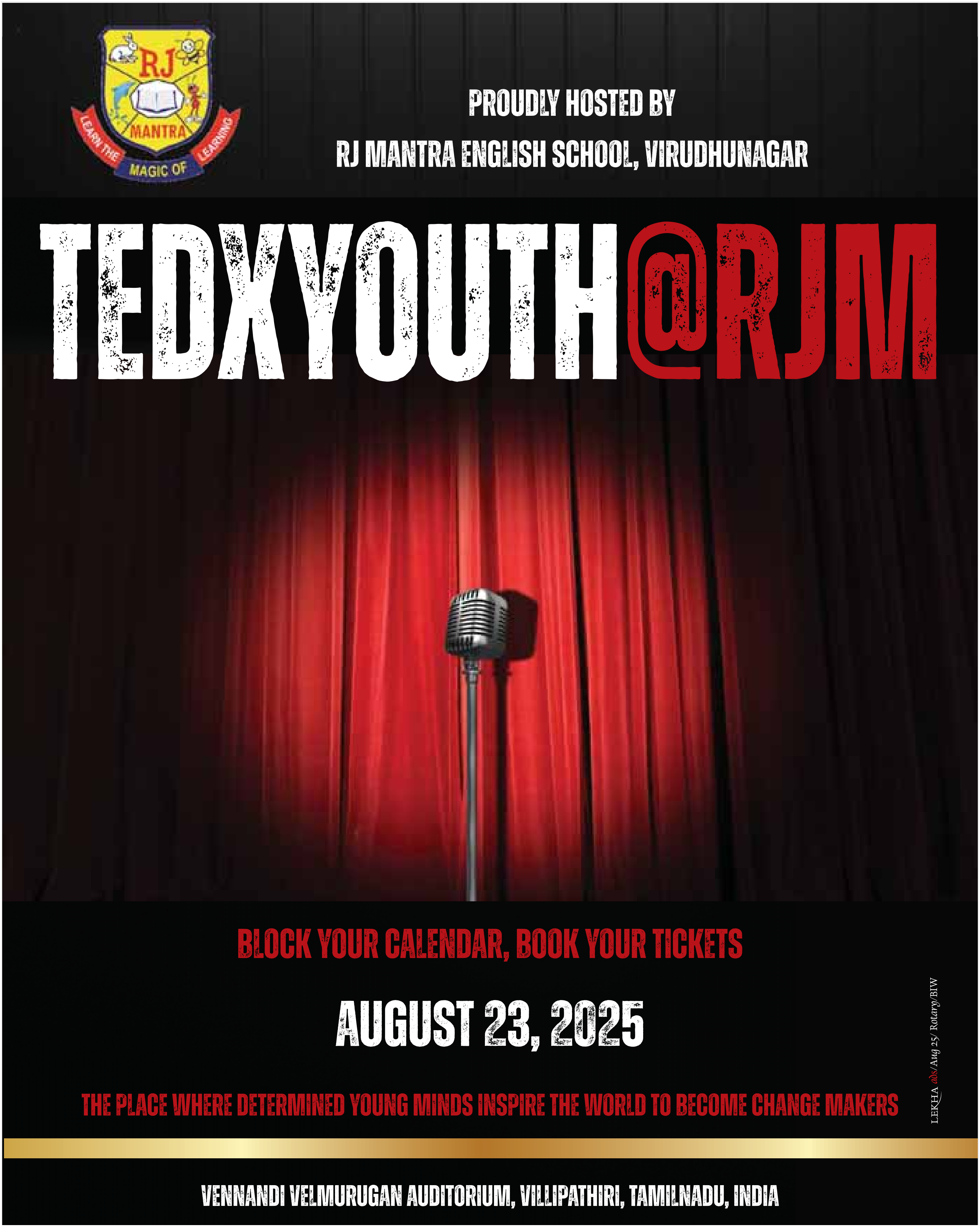

www.rjmantra.com 9489067789 | 8903660689 admin@rjmantra.com

Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month. Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month.
Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹40
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26

ADVT.

PIONEERING SUSTAINABILITY IN ROTARY DISTRICT 3212

Congratulations

N KANCHANA DEVI

President

ROTARY CLUB OF SIVAKASI DIAMONDS

The club has achieved resounding success, with a notable achievement of recovering 127 kilograms of recyclables from being dumped in landfills through our Plogging activity.

This accomplishment not only showcases the club's commitment to environmental stewardship but also sets a precedent for other clubs in the district to follow. We look forward to collaboratively work with lot more Rotary clubs exploring innovative ways to promote sustainability in our Nation.

LEKHA ads/Aug 25/ Rotary/BW

HEADING TOWARDS CREATING 1 LAKH RESPONSIBLE ECO CHAMPIONS BY 2030

LET US PRACTICE SOURCE SEGREGATION: LET US GO FOR ZERO GARBAGE

LEND A HAND | Meri LiFE | DPIIT #startupindia | GARBAGE BANK குப்பை வங்கி

rj_garbagebank www.ilovewaste.in rjgarbagebank@gmail.com 87542 04222